स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजना,

उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश

(व्यक्तित्व विकास एवं कॅरियर मार्गदर्शन हेतु स्नातक अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए दृष्टि-पथ)

प्रार्थना

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।

जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥

मैं वाणी और अर्थ की सिद्धि के निमित्त,वाणी और अर्थ के समान मिले हुए जगत् के माता-पिता पार्वती और शिव को प्रणाम करता/करती हूँ।

कराग्रे वसते लक्ष्मी: करमध्ये सरस्वती।

करमूले तु गोविन्द: प्रभाते करदर्शनम।।

हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी, मध्य भाग में सरस्वती तथा हाथ के मूलभाग में भगवान् नारायण निवास करते हैं, अत: प्रातःकाल अपने हाथों का दर्शन करते हुए दिवस को शुभ बनाएं।

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तनमण्डले।

विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यंपादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।

हमारी मातृभूमि देवी लक्ष्मी का ही रूप है ; जिसकी रक्षा स्वयं विष्णु भगवान् करते हैं। इस देवि ने समुद्र को वस्त्र रूप में धारण किया है तथा पर्वतों का मंडल पयोधर है, जिसकी रसधार नदियों के क्षीर /जल से हम पुत्रों को जीवन मिलता है। हे माता ! हमें तेरे शरीर को अपने पदों / पैरों से स्पर्श करना होगा, अत: पुत्र मानकर हमें क्षमा करना।

स्मरणीय बातें -

पञ्च प्रण :

(1) भारत को विकसित देश बनाना है।

(2) जीवन से गुलामी का अंश मिटाना है।

(3) हमें अपनी विरासत पर गर्व हो।

(4) एकता और एकजुटता पर जोर।

(5) नागरिकता के पालन पर जोर

जुलाई- अगस्त

आषाढ़- श्रावण : हम परम ब्रह्म परमेश्वर की संतान हैं। चींटी से लेकर हाथी तक के जीवन का वही कल्याणकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता है। कुम्हार के दहकते आंवे में भी बिल्ली की रक्षा उस ईश्वर ने ही की थी। हाथी को मगर ने जब गहरे जल में खींचना प्रारंभ किया तो उसकी करुणा भरी पुकार सुन कर रक्षा भगवान् ने ही की थी। इसीलिए ईश्वर को माता-पिता, गुरु, मित्र, सखा, बन्धु सभी कुछ कहा गया है -

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।

यह ज्ञान मार्ग कभी गुरु बनकर माता-पिता दिखाते हैं, कभी शिक्षक तो कभी आध्यामिक गुरु। इसीलिए माता-पिता, गुरु और अतिथि को सनातन परम्परा में भगवान् का स्थान भी दिया गया है। श्रद्धा पूर्वक गुरु की सेवा करने वाले प्रहलाद, राम, कृष्ण, आरुणि, सत्यकाम जाबालि, उपमन्यु, चन्द्रगुप्त, शिवाजी, नरेन्द्र आदि आज भी इतिहास के साक्षी हैं। माता-पिता भक्त श्रवण कुमार को कौन नहीं जानता ? भारत में दीन दुखियों को भी दरिद्र नारायण कहा गया है। नर सेवा भी नारायण सेवा है। यह मार्ग जीवन की श्रेष्ठता का मार्ग है। इसी श्रेष्ठता के आधार पर इस देश का नाम यदि सिंह शावकों के साथ खेलने वाले भरत के नाम से माना जाता है तो, घोर तपस्वी ऋिषभ देव के पुत्र जड़ भारत से भी। खैर , जो भी हो भारत का भारत के रूप में निर्माण इन्हीं चरित्रों के कारण हुआ है। गुरुओं को प्रणाम।

शिक्षक - विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : (i) गुरुपूर्णिमा पर्व पर गुरुवेनमः कार्यक्रम का आयोजन सभी कक्षाओं में ऑनलाइन / ऑफलाइन किया जाये। (ii) 26 जुलाई 'कारगिल विजय दिवस' के उपलक्ष्य में सैनिकों के सम्मान में आयोजन किए जाएं। (iii) 15 अगस्त के अवसर पर हर घर झंडा कार्यक्रम का आयोजन कराया जाए। (iv) प्रवेशित विद्यार्थियों की ऑनलाइन / ऑफलाइन कॅरियर काउंसलिंग के साथ कॅरियर मार्गदर्शन दिया जाए । (v) प्रत्येक विद्यार्थी को जल संरक्षण तथा कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करने हेतु प्रेरित किया जाए।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

(भाग तीन)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 भारत की वह शिक्षा नीति है जिसे भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई, 2020 को घोषित किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति अंतरिक्ष वैज्ञानिक के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति है, जिसमें बुनियादी तौर पर बदलाव किए गए हैं। " राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 प्राथमिक से उच्च शिक्षा स्तर तक भारत की शिक्षा प्रणाली का भविष्य है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है, साथ ही शिक्षा को सभी के लिए सुलभ बनाना है।"

इसके अंतर्गत शिक्षा का सार्वभौमीकरण किया जाएगा, यथा- (i) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत शैक्षिक क्षेत्र को तकनीकी से भी जोड़ा जाएगा जिसमें सभी स्कूलों में ज्यादा से ज्यादा डिजिटल इक्युप्मेंट दिए जाएंगे। (ii) राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सभी प्रकार की शैक्षिक विषय वस्तु को प्रमुखता से उस क्षेत्र की क्षेत्रीय भाषा में भी अनुवाद किया जाएगा जिससे शैक्षिक क्षेत्र में क्षेत्रीय भाषा को बढ़ावा मिल सके। (iii) छठवीं कक्षा से विद्यार्थियों को व्यावसायिक परीक्षण इंटर्नशिप दे दी जाएगी। (iv) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के भीतर अब पढ़ाई में कई प्रकार के अन्य विकल्प बच्चों को दिए जाएंगे। दसवीं कक्षा में अन्य विकल्पों को भी रखा जाएगा जिसमें विद्यार्थी कोई एक स्ट्रीम ना चुनकर अपनी इच्छा अनुसार विषयों को चुन सकेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत विद्यार्थी को छठवीं कक्षा से ही कोडिंग सिखाई जाएगी। (v) शैक्षिक क्षेत्र में वर्चुअल लैब भी बनाया जाएगा जिससे शैक्षिक क्षेत्रों की गुणवत्ता को उच्च किया जा सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तथ्य: (i) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट का गठन किया जाएगा जिसमें विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों के माध्यम से इन क्रेडिट को संग्रहित कर विद्यार्थी के अंतिम वर्ष की डिग्री में स्थानांतरित करके सभी क्रेडिट को एक साथ जोड़ा जाएगा। (ii) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शैक्षिक पाठ्यक्रम को लचीला बनाए जाने की हर संभव कोशिश की जा रही है। (iii) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत 2030 तक हर जिले में उच्च शिक्षा संस्थान का निर्माण किया जाना शिक्षा नीति के लक्ष्य है। (iv) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतगर्त 2040 तक सभी उच्च शिक्षा संस्थानों को बहुविषयक शैक्षिक पाठ्यक्रम संस्थान बनाने का उद्देश्य रखा गया है (v) राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थी के प्रवेश के लिए सामान्य प्रवेश परीक्षा को आयोजित करेगी जिससे शिक्षा का स्तर स्थापित जा सके। नई शिक्षा नीति के तहत सरकारी तथा प्राइवेट संस्थानों को एक समान माना जाएगा। (vii) नई शिक्षा नीति के तहत भारतीय उच्च शिक्षा आयोग को 4 वर्टिकल दिए गए हैं। जिसमें नेशनल हायर एजुकेशन रेगुलेटरी काउंसिल , हायर एजुकेशनल काउंसिल , जर्नल एजुकेशन काउंसिल तथा नेशनल एक्रीडेशन काउंसिल को रखा गया है। (viii) ई लर्निंग के माध्यम से दिव्यांग जनों के लिए शैक्षिक पाठ्यक्रम में बदलाव किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 से लाभ : (i) इसका सबसे पहला लाभ तो यही है कि आज की शिक्षा व्यवस्था की पुरानी सभी खामियों को हटाने का प्रयास किया है। (ii) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों के ज्ञान के साथ उनके स्वास्थ्य और कौशल विकास पर भी ध्यान दिया जाएगा। विद्यार्थियों के स्वास्थ्य कार्ड भी बनाये जाएंगे। (iii) राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने के लिए केंद्र व राज्य सरकार द्वारा जी डी पी का 6 प्रतिशत हिस्सा व्यय किया जाएगा। (iv) नयी शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थियों को अपने विषय का चुनाव स्वयं करने का अधिकार होगा। को पहले की तरह आर्ट्स, साइंस और कॉमर्स में से किसी एक को नहीं चुनना पड़ेगा। वो चाहे तो इन तीनों ही स्ट्रीम्स से विषय चुन सकते हैं। (v) नयी शिक्षा नीति में अब विद्यार्थी अपनी भाषा में पढ़ पाएंगे और परीक्षा भी उसी भाषा में दे पाएंगे। भारत की अन्य प्राचीन भाषा जैसे संस्कृत को पढ़ने का भी ऑप्शन दिया गया है। अंग्रेजी की अनिवार्यता ख़त्म कर दी गयी है। (vi) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों का बोझ कम करने और पढ़ाई में उनकी रुचि बढ़ाने के लिए "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सॉफ्टवेयर" के माध्यम से शिक्षण प्रदान किया जाएगा, जिसमें रटने की जगह उनकी समझ बढ़ाने पर ध्यान दिया जा सकेगा। (vii) स्वस्थ शरीर के साथ ही स्वस्थ मस्तिष्क होना भी जरुरी है इसलिए पाठ्यक्रम में पढाई के साथ ही खेल-कूद , कला इत्यादि "एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज" को भी अनिवार्य किया है। (viii) नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के अंतर्गत अब विद्यार्थी ऑफलाइन कक्षाओं के साथ साथ ऑनलाइन भी पढ़ सकेंगे। उन्हें पढ़ने की सामग्री अब ऑनलाइन भी उपलब्ध कराई जाएगी।

नेशनल रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना: नेशनल रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना की जाएगी। जिसके माध्यम से शोध की संस्कृति को सक्षम बनाया जाएगा। नेशनल रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना से भारत में शोधकर्ताओं को बढ़ावा दिया जाएगा। जिससे नई नई रिसर्च सामने आएंगी जो देश की प्रगति में बहुत महत्वपूर्ण साबित होंगी।

पाठ्यक्रम में शामिल होगा एनसीसी कोर्स: (i) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत एनसीसी को प्रोत्साहन देने का प्रावधान है। (ii) यूजीसी एवं एनआईसीटी द्वारा एनसीसी को विश्वविद्यालयों में एक वैकल्पिक विषय के रूप में चुनाव किए जाने का निर्णय लिया गया है। (iii) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से देश के विद्यार्थी अनुशासित एवं देश भक्त बन पाएंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 क्यों : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में बनी थी एवं 1992 में संशोधित की गई। इस नीति को बने 3 दशक से अधिक समय बीत चुका था । इस अवधि के दौरान समाज की अर्थव्यवस्था एवं दुनिया में कई परिवर्तन हुए हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए शिक्षा क्षेत्र द्वारा 21वीं सदी की मांगों को और जरूरतों के प्रति छात्रों को तैयार करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लांच की गई। राष्ट्रीय शिक्षा नीति को एक समावेशी, भागीदारी और समग्र दृष्टिकोण को अपनाते हुए परामर्श प्रक्रिया के माध्यम से तैयार किया गया है। जिसमें विशेषज्ञों की राय, क्षेत्र के अनुभव, अनुभव जन अनुसंधान, हितधारक प्रतिक्रिया आदि को ध्यान रखा गया है। नई शिक्षा नीति को तैयार करने के पश्चात इसको पोर्टल पर अपलोड किया गया था। जिसमें जनता सहित हितधारकों के विचार, सुझाव, टिप्पणियां प्राप्त की गई। पोर्टल पर अपलोड करने के बाद राज्य, संघ राज्य क्षेत्र की सरकारों एवं भारत सरकार के मंत्रालयों

को भी अपने विचार और टिप्पणी देने के लिए आमंत्रित किया गया। इस नीति को 22 भाषाओं में अपलोड किया गया था। इसके अलावा इस संबंध में शिक्षा सचिवों के साथ बैठक भी की गई एवं कई राज्यों में शिक्षा संवाद भी किए गए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर CABE की एक विशेष बैठक भी आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के 26 शिक्षा मंत्री, राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के प्रतिनिधि CABE के सदस्य, संगठनों के प्रमुख, विश्वविद्यालय के कुलपतियों ने भाग लिया। इन सभी हितधारकों के सुझाव को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 लागू कर दी गई।

विदेशी विद्यार्थियों के लिए अंतरराष्ट्रीय कार्यालय: इसके अंतर्गत सस्ती लागत पर अच्छी शिक्षा प्रदान करने वाला एक वैश्विक अध्ययन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक संस्थान में विदेशी विद्यार्थियों की मेजबानी करने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी कार्यालय की स्थापना होगी।

भारतीय ज्ञान परम्परा

अनुकरणीय राजकर्ता:

लाचिद्धास्करवर्मा च यशोधर्मा च हूणजित्।
श्रीकृष्णदेवरायश्च ललितादित्य उद्बलः॥

श्रीमद्भगवतगीता

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्।
मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्॥1

गुणों के कार्य रूप सात्त्विक, राजस और तामसइन तीनों प्रकार के भावों से यह सारा संसार- प्राणि समुदाय मोहित हो रहा है -, इसीलिए इन तीनों गुणों से परे मुझ अविनाशी को नहीं जानता॥

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ॥ 2

हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ अर्जुनअर्थार्थी !, आर्त, जिज्ञासुऔर ज्ञानी ऐसे चार प्रकार के भक्तजन मुझको भजते हैं॥

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः॥ 3

उनमें नित्य मुझमें एकीभाव से स्थित अनन्य प्रेमभक्ति वाला ज्ञानी भक्त अति उत्तम है क्योंकि मुझको तत्व से जानने वाले ज्ञानी को मैं अत्यन्त प्रिय हूँ और वह ज्ञानी मुझे अत्यन्त प्रिय है॥

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्॥ 4

जो -जो सकाम भक्त जिस-जिस देवता के स्वरूप को श्रद्धा से पूजना चाहता है, उस उस भक्त की श्रद्धा को मैं उसी देवता के- प्रति स्थिर करता हूँ॥

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्॥ 5

अपनी योगमाया से छिपा हुआ मैं सबको प्रत्यक्ष नहीं होता, इसलिए यह अज्ञानी जनसमुदाय मुझ जन्मरहित अविनाशी परमेश्वर को नहीं जानता अर्थात मुझको जन्मने- मरने वाला समझता है॥

संतन्ह के लच्छन रघुबीरा। कहहु नाथ भव भंजन भीरा॥

सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहऊँ। जिन्ह ते मैं उन्ह केँ बस रहऊँ॥

हे रघुवीर! हे भव-भय का नाश करने वाले मेरे नाथ ! अब कृपा कर संतों के लक्षण कहिए! हे मुनि (नारद)! सुनो, मैं संतों के गुणों को कहता हूँ, जिनके कारण मैं उनके वश में रहता हूँ॥

षट बिकार जित अनघ अकामा। अचल अकिंचन सुचि सुखधामा॥

अमित बोध अनीह मित भोगी। सत्यसार कबि कोबिद जोगी॥

वे संत (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर) छह विकारों को जीते हुए, पापरहित, कामनारहित, निश्चल, अकिंचन, बाहर-भीतर से पवित्र, सुख के धाम, असीम ज्ञानवान्, इच्छारहित, मिताहारी, सत्यनिष्ठ, कवि, विद्वान, योगी॥

सावधान मानद मदहीना। धीर धर्म गति परम प्रबीना॥

सावधान, दूसरों को मान देने वाले, अभिमानरहित, धैर्यवान, धर्म के ज्ञान और आचरण में अत्यंत निपुण॥

गुनागार संसार दुख रहित बिगत संदेह।

तजि मम चरन सरोज प्रिय तिन्ह कहुँ देह न गेह॥

गुणों के घर, संसार के दुःखों से रहित और संदेहों से सर्वथा छूटे हुए होते हैं। मेरे चरण कमलों को छोड़कर उनको न देह ही प्रिय होती है, न घर ही॥

निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं। पर गुन सुनत अधिक हरषाहीं॥

सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती। सरल सुभाउ सबहि सन प्रीति॥

कानों से अपने गुण सुनने में सकुचाते हैं, दूसरों के गुण सुनने से विशेष हर्षित होते हैं। सम और शीतल हैं, न्याय का कभी त्याग नहीं करते। सरल स्वभाव होते हैं और सभी से प्रेम रखते हैं॥

जप तप ब्रत दम संजम नेमा। गुरु गोबिंद बिप्र पद प्रेमा॥

श्रद्धा छमा मयत्री दाया। मुदिता मम पद प्रीति अमाया॥

वे जप, तप, व्रत, दम, संयम और नियम में रत रहते हैं और गुरु, गोविंद तथा ब्राह्मणों के चरणों में प्रेम रखते हैं। उनमें श्रद्धा, क्षमा, मैत्री, दया, मुदिता और मेरे चरणों में निष्कपट प्रेम होता है॥

बिरति बिबेक बिनय बिग्याना। बोध जथारथ बेद पुराना॥

दंभ मान मद करहिं न काऊ। भूलि न देहिं कुमारग पाऊ॥

तथा वैराग्य, विवेक, विनय, विज्ञान (परमात्मा के तत्व का ज्ञान) और वेद-पुराण का यथार्थ ज्ञान रहता है। वे दम्भ, अभिमान और मद कभी नहीं करते और भूलकर भी कुमार्ग पर पैर नहीं रखते॥

गावहिं सुनहिं सदा मम लीला। हेतु रहित परहित रत सीला॥

मुनि सुनु साधुन्ह के गुन जेते। कहि न सकहिं सादर श्रुति तेते॥

सदा मेरी लीलाओं को गाते-सुनते हैं और बिना ही कारण दूसरों के हित में लगे रहने वाले होते हैं। हे मुनि ! सुनो, संतों के जितने गुण हैं, उनको सरस्वती और वेद भी नहीं कह सकते॥

बोध वाक्य : ''उपनिषद् शक्ति की विशाल खान है। उपनिषदों में ऐसी प्रचुर शक्ति विद्यमान है कि वे समस्त संसार को तेजस्वी बना सकते हैं। उनके द्वारा समस्त संसार पुनरूज्जीवित, सशक्त और वीर्य सम्पन्न हो सकता है। समस्त जातियों को, सकल मतों को, भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय के दुर्बल, दु:खी, पद दलित लोगों को स्वयं अपने पैरों खड़े होकर मुक्त होने के लिए वे उच्च स्वर में उद्घोष कर रहे हैं। मुक्ति अथवा स्वाधीनता दैहिक स्वाधीनता, मानसिक स्वाधीनता, आध्यात्मिक स्वाधीनता यही उपनिषदों के मूल मंत्र हैं।'- स्वामी विवेकानंद

बोध कथा:

यह कैसी शिक्षा ?

गांव में रहने वाले एक निर्धन सज्जन ने अनेक कष्ट उठाकर भी अपने बच्चे को पढ़ाया। उनका एक मात्र पुत्र पढ़ लिखकर-उच्च अधिकारी बन गया और एक बड़े शहर में उसकी नियुक्ति भी हो गयी। उचित समय पर उन्होंने पुत्र का विवाह किया। विवाह के बाद वह युवक पत्नी सहित शहर में ही रहने लगा।

दो साल इसी प्रकार बीत गये, एक दिन उन्हें समाचार मिला कि उनके बेटे के घर में पुत्र का जन्म हुआ है। वे बहुत प्रसन्न हुए तथा अपने पौत्र को देखने की इच्छा से शहर की ओर चल दिये। जिस समय वे अपने बेटे की कोठी पर पहुंचे, वह अपने मित्रों के साथ चाय पी रहा था। जब उसने अपने पिता को आते हुए देखा, तो वह घबरा गया। उसने सोचा कि मेरे ये मित्र क्या सोचेंगे कि ऐसा गंवार और निर्धन व्यक्ति उसका पिता है। उसने एक नौकर को भेजा, जिससे वह पिताजी को पीछे के दरवाजे से अंदर ले आये ।

जब एक मित्र ने आंगतुक के बारे में पूछा, तो उसने बताया कि ये हमारा पुराना घरेलू नौकर है और गांव से आ रहा है। उसके पिता ने यह सुन लिया। वे सबके सामने गुस्से में बोले, मैं कौन हूं यह इसकी माँ से पूछ लो। इतना कहकर वे अपना सामान उठाकर बिना पौत्र को देखे वापस चले गये।

मासिक गीत / गान :

मनसा सततम् स्मरणीयम्
वचसा सततम् वदनीयम्
लोकहितम् मम करणीयम्॥

न भोग भवने रमणीयम्
न च सुख शयने शयनीयम्
अहर्निशम् जागरणीयम्॥

न जातु दुःखम् गणनीयम्
न च निज सौख्यम् मननीयम्
कार्यक्षेत्रे त्वरणीयम्॥

दुःख सागरे तरणीयम्
कष्ट पर्वते चरणीयम्
विपत्ति विपिने भ्रमणीयम्॥

गहनारण्ये घनान्धकारे
बन्धु जना ये स्थिता गह्वरे
तत्र मया सन्चरणीयम्
लोकहितम् मम करणीयम्॥

----------00----------

सितम्बर

भाद्रपद : भाषा केवल संवाद की ही नहीं, अपितु संस्कृति एवं संस्कारों की भी संवाहिका है। भारत बहुभाषी देश है। सभी भारतीय भाषाएं समान रूप से हमारी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक अस्मिता की अभिव्यक्ति करती है। यद्यपि बहुभाषी होना एक गुण है, किंतु मातृभाषा में शिक्षण वैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है। मातृभाषा में शिक्षित विद्यार्थी दूसरी भाषाओं को भी सहज रूप से ग्रहण कर सकता है। प्रारंभिक शिक्षण किसी विदेशी भाषा में करने पर जहां व्यक्ति अपने परिवेश, परंपरा, संस्कृति व जीवन मूल्यों से कटता है, वहीं पूर्वजों से प्राप्त होने वाले ज्ञान, शास्त्र, साहित्य आदि से अनभिज्ञ रहकर अपनी पहचान खो देता है। चेतना का यह ऐतिहासिक पक्ष रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने लेख 'भारतीय इतिहास की अन्त:दृष्टि' में कुछ इस प्रकार उजागर किया था- ''मैं भारत से प्रेम करता हूँ, इसलिए नहीं कि मुझे इसके स्वरूप में अंधश्रद्धा है, इसलिए भी नहीं कि मैंने इसकी रजकण में जन्म लेने का अवसर पाया, बल्कि इसलिए कि इसने विध्वंसकारी युगों से उस जीवंत वाणी को सुरक्षित रखा जो इसके महान पुत्रों की ज्योतिर्मय चेतना से निसृत हुई थी।''

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : (i) भारत संघ की राजभाषा हिन्दी (ii) भाषा कौशल की लिए हिंदी–अंग्रेजी शब्द सामर्थ्य बढ़ाना। (iii) ईश्वरचंद्र विद्यासागर का परिचय (iv) शिक्षक दिवस का आयोजन (v) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे ।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

ई-मेल के शिष्टाचार

(1) **ई-मेल शिष्टाचार क्या है ? :** (i) ई-मेल शिष्टाचार डिजिटल आचार संहिता को संदर्भित करता है (ii) दैनिक व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है (iii) ईमेल के प्रकार - औपचारिक, अर्ध औपचारिक. व्यक्तिगत (iv) ई-मेल के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। (v) शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय और पेशे में सफल होने के लिए यह बहुत आवश्यक (vi) आपको एक अच्छा प्रभाव बनाने में मदद करता है (vii) आपको प्रतियोगिता में बढ़त देता है (viii) ठीक समय में वांछित प्रतिक्रिया मिल सकती है।

(2) ई-मेल के शिष्टाचार को समझना: (i) ई-मेल हेतु सटीक भाषा का प्रयोग जानना (ii) ई-मेल में क्या करें/क्या ना करें समझना।

(3) ई -मेल के करने बिंदु : (i) मुख्य प्राप्तकर्ता का ईमेल पता (ii) उन लोगों के ई-मेल पते जिन्हें पत्राचार के बारे में पता होना चाहिए (iii) मेल का विषय (iv) प्रेषक का ई-मेल पता (v) ई-मेल का मुख्य भाग।

(4) Reminder - (i) उचित ई-मेल आईडी रखें, ना की अव्यवहारिक और भ्रामक (ii) बड़े अक्षर में लिखना चिल्लाना प्रतीत होता है। (iii) अत्यधिक विराम चिन्हों का प्रयोग ग़लत है। (iv) उपयुक्त जगह पर बड़े अक्षरों या विराम चिन्ह का प्रयोग ना करना भी संदेश को जटिल बनाता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा

अनुकरणीय राजकर्ता:

मुसुनूरिनायकौ तौ प्रताप: शिवभूपति:।
रणजित सिंह इत्येते वीरा विख्यातविक्रमा:॥

बोध वाक्य- " जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें गति और शक्ति न पैदा हो, हमारा सौंदर्य प्रेम न जागृत हो, जो हममें संकल्प और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह हमारे लिए बेकार है वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं है।"-प्रेमचंद

श्रीमद्भगवतगीता

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन।

भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन॥ 1

हे अर्जुनपूर्व में व्यतीत हुए और वर्तमान में स्थित तथा आगे होने वाले सब भूतों को मैं जानता हूँ !, परन्तु मुझको कोई भी श्रद्धाभक्तिरहित पुरुष नहीं जानता॥-

साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः।

प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः॥ 2

जो पुरुष अधिभूत और अधिदैव सहित तथा अधियज्ञ सहित (सबका आत्मरूप) मुझे अन्तकाल में भी जानते हैं, वे युक्तचित्तवाले पुरुष मुझे जानते हैं अर्थात प्राप्त हो जाते हैं॥

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते।

भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः॥ 3

श्री भगवान ने कहा परम अक्षर -'ब्रह्म' है, अपना स्वरूप अर्थात जीवात्मा 'अध्यात्म' नाम से कहा जाता है तथा भूतों के भाव को उत्पन्न करने वाला जो त्याग है, वह 'कर्म' नाम से कहा गया है॥

अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम्।

अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर॥ 4

उत्पत्तिविनाश धर्म वाले सब पदार्थ अधिभूत हैं-,हिरण्यमय पुरुष जिसको शास्त्रों में सूत्रात्मा), हिरण्यगर्भ, प्रजापति, ब्रह्मा इत्यादि नामों से कहा गया है अधिदैव है और हे देहधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन! इस शरीर में (मैं वासुदेव ही अन्तर्यामी रूप से अधियज्ञ हूँ॥

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।

तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः॥ 5

हे कुन्ती पुत्र अर्जुनयह मनुष्य अंतकाल में जिस-जिस भी भाव को स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करता है !, उस उसको ही-प्राप्त होता है क्योंकि वह सदा उसी भाव से भावित रहा है॥

रामचरित मानस

वर्षा ऋतु वर्णन:

फटिक सिला अति सुभ्र सुहाई। सुख आसीन तहाँ द्वौ भाई॥

कहत अनुज सन कथा अनेका। भगति बिरत नृपनीति बिबेका॥

बरषा काल मेघ नभ छाए। गरजत लागत परम सुहाए॥

सुंदर स्फटिक मणि की एक अत्यंत उज्ज्वल शिला है, उस पर दोनों भाई सुखपूर्वक विराजमान हैं॥ श्री राम छोटे भाई लक्ष्मणजी से भक्ति, वैराग्य, राजनीति और ज्ञान की अनेकों कथाएँ कहते हैं। वर्षाकाल में आकाश में छाए हुए बादल गरजते हुए बहुत ही सुहावने लगते हैं॥

लछिमन देखु मोर गन नाचत बारिद पेखि।

गृही बिरति रत हरष जस बिष्नुभगत कहुँ देखि॥

श्री रामजी कहने लगे, हे लक्ष्मण! देखो, मोरों के झुंड बादलों को देखकर नाच रहे हैं जैसे वैराग्य में अनुरक्त गृहस्थ किसी विष्णुभक्त को देखकर हर्षित होते हैं॥

घन घमंड नभ गरजत घोरा। प्रिया हीन डरपत मन मोरा॥

दामिनि दमक रह नघन माहीं। खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं॥

आकाश में बादल घुमड़-घुमड़कर घोर गर्जना कर रहे हैं, प्रिया (सीताजी) के बिना मेरा मन डर रहा है। बिजली की चमक बादलों में ठहरती नहीं, जैसे दुष्ट की प्रीति स्थिर नहीं रहती॥

बरषहिं जलद भूमि निअराएँ। जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ।

बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे। खल के बचन संत सह जैसें॥

बादल पृथ्वी के समीप आकर बरस रहे हैं, जैसे विद्या पाकर विद्वान् नम्र हो जाते हैं। बूँदों की चोट पर्वत कैसे सहते हैं, जैसे दुष्टों के वचन संत सहते हैं॥

छुद्र नदीं भरि चलीं तोराई। जस थोरेहुँ धन खल इतराई॥

भूमि परत भा ढाबर पानी। जनु जीवहि माया लपटानी॥

छोटी नदियाँ भरकर तुड़ाती हुई चलीं, जैसे थोड़े धन से भी दुष्ट इतरा जाते हैं। (मर्यादा का त्याग कर देते हैं)। पृथ्वी पर पड़ते ही पानी गंदला हो गया है, जैसे शुद्ध जीव के माया लिपट गई हो॥

समिटि समिटि जल भरहिं तलावा। जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा॥

सरिता जल जलनिधि महुँ जोई। होइ अचल जिमि जिव हरि पाई॥

जल एकत्र हो-होकर तालाबों में भर रहा है, जैसे सद्गुण (एक-एक कर) सज्जन के पास चले आते हैं। नदी का जल समुद्र में जाकर वैसे ही स्थिर हो जाता है, जैसे जीव श्री हरि को पाकर अचल (आवागमन से मुक्त) हो जाता है॥

हरित भूमि तृन संकुल समुझि परहिं नहिं पंथ।

जिमि पाखंड बाद तें गुप्त होहिं सदग्रंथ॥

पृथ्वी घास से परिपूर्ण होकर हरी हो गई है, जिससे रास्ते समझ नहीं पड़ते। जैसे पाखंड मत के प्रचार से सद्ग्रंथ गुप्त (लुप्त) हो जाते हैं॥

दादुर धुनि चहु दिसा सुहाई। बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई॥

नव पल्लव भए बिटप अनेका। साधक मन जस मिलें बिबेका॥

चारों दिशाओं में मेंढकों की ध्वनि ऐसी सुहावनी लगती है, मानो विद्यार्थियों के समुदाय वेद पढ़ रहे हों। अनेकों वृक्षों में नए पत्ते आ गए हैं, जिससे वे ऐसे हरे-भरे एवं सुशोभित हो गए हैं जैसे साधक का मन विवेक (ज्ञान) प्राप्त होने पर हो जाता है॥

अर्क जवास पात बिनु भयऊ। जस सुराज खल उद्यम गयऊ॥

खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी। करइ क्रोध जिमि धरमहि दूरी॥

मदार और जवासा बिना पत्ते के हो गए। जैसे श्रेष्ठ राज्य में दुष्टों का उद्यम जाता रहा। धूल कहीं खोजने पर भी नहीं मिलती, जैसे क्रोध धर्म को दूर कर देता है।

ससि संपन्न सोह महि कैसी। उपकारी कै संपति जैसी॥

निसि तम घन खद्योत बिराजा। जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा॥

अन्न से युक्त पृथ्वी कैसी शोभित हो रही है, जैसी उपकारी पुरुष की संपत्ति। रात के घने अंधकार में जुगनू शोभा पा रहे हैं, मानो दम्भियों का समाज आ जुटा हो॥

कृषी निरावहिं चतुर किसाना। जिमि बुध तजहिं मोह मद माना॥
देखिअत चक्रबाक खग नाहीं। कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं॥
ऊषर बरषइ तृन नहिं जामा। जिमि हरिजन हियँ उपज न कामा॥

चतुर किसान खेतों को निरा रहे हैं जैसे विद्वान् लोग मोह, मद और मान का त्याग कर देते हैं॥ चक्रवाक पक्षी दिखाई नहीं दे रहे हैं, जैसे कलियुग को पाकर धर्म भाग जाते हैं। ऊसर में वर्षा होती है, पर वहाँ घास तक नहीं उगती। जैसे हरिभक्त के हृदय में काम नहीं उत्पन्न होता॥

बिबिध जंतु संकुल महि भ्राजा। प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा॥
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना। जिमि इंद्रिय गन उपजें ग्याना॥

पृथ्वी अनेक तरह के जीवों से भरी हुई उसी तरह शोभायमान है, जैसे सुराज्य पाकर प्रजा की वृद्धि होती है। जहाँ-तहाँ अनेक पथिक थककर ठहरे हुए हैं, जैसे ज्ञान उत्पन्न होने पर इंद्रियाँ॥

कबहुँ प्रबल बह मारुत जहँ तहँ मेघ बिलाहिं।
जिमि कपूत के उपजें कुल सद्धर्म नसाहि॥

कभी-कभी वायु बड़े जोर से चलने लगती है, जिससे बादल जहाँ-तहाँ गायब हो जाते हैं। जैसे कुपुत्र के उत्पन्न होने से कुल के उत्तम धर्म (श्रेष्ठ आचरण) नष्ट हो जाते हैं॥

कबहु दिवस महँ निबिड़ तम कबहुँक प्रगट पतंग।
बिनसइ उपजइ ग्यान जिमि पाइ कुसंग सुसंग॥

कभी दिन में घोर अंधकार छा जाता है और कभी सूर्य प्रकट हो जाते हैं। जैसे कुसंग पाकर ज्ञान नष्ट हो जाता है और सुसंग पाकर उत्पन्न हो जाता है॥

बोध वाक्य : '' समाज की गलतियों या खराबियों को सिर्फ समाज की भाषा को ठीक करके ही खत्म किया जा सकता है क्योंकि भाषा अगर गलत हो जाए तो गलत बोला जाएगा, गलत बोला जाए तो गलत सुना जाएगा और गलत कहकर जो गलत सुनाया गया है, उस पर जो अमल किया जाएगा वह गलत ही होगा और गलत अमल का परिणाम हमेशा गलत ही हुआ करता है। इसलिए गलत समाज की गलत बुनियाद हमेशा गलत भाषा ही डालती है।''- महान दार्शनिक कनफ्यूशियस

बोध कथा : **हीरक सूत्र**

बहुत समय पहले कहीं एक बौद्ध साधु रहता था। उसने अप्रतिम बौद्ध ग्रंथ 'हीरक सूत्र' का गहन अध्ययन किया था। उन दिनों पुस्तकें दुर्लभ थीं और वह एकमात्र छपी हुई 'हीरक सूत्र' पुस्तक की मोटी सी प्रति को अपनी पीठ पर लादे घूमता फिरता था। उसके बारे में सभी जानते थे कि वह 'हीरक सूत्र' का गहन अध्येता है और न केवल ज्ञानी, सन्यासी और लामा बल्कि सामान्य नागरिक भी उसके 'हीरक सूत्र' में वर्णित विषयों को सरल भाषा में समझ लेते थे।

एक बार यह साधु किसी अन्य देश की यात्रा पर निकला। पर्वतीय मार्गों पर उसे राह में एक बुढिया दिखी जो चाय-बिस्कुट बेच रही थी। साधु को बहुत भूख लगी थी पर उसके पास चाय-बिस्कुट खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। उसने बुढिया से कहा-'माताजी, मेरी पीठ पर ज्ञान का महान स्रोत रूपी पुस्तक 'हीरक सूत्र' लदी है। यदि आप मुझे थोड़ी सी चाय-बिस्कुट खाने के लिए देंगी तो में इसमें से ज्ञान की कोई बात आपको बताउँगा जिससे आपका भला होगा।'

बुढिया को भी 'हीरक सूत्र' के बारे में कुछ पता था। उसने साधु के सामने प्रस्ताव रखा। वह बोली, 'आप बहुत ज्ञानी साधु हैं, यदि आप मेरे एक सरल प्रश्न का उत्तर दे देंगे तो मैं आपको चाय-बिस्कुट खिलाउँगी।'

साधु ने बुढिया की पेशकश को स्वीकार कर लिया। बुढिया ने साधु से पूछा, 'जब आप बिस्कुट खाते हैं तो आप इन्हें अतीत के मन से खाते हैं या वर्तमान के मन से खाते हैं या भविष्य के मन से खाते हैं।'

साधु को इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं सूझा। उसने अपनी पीठ पर लदी भारी-भरकम पोथी उतारी और उसमें प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करने लगा। उत्तर खोजते हुए साधु को रात हो गई और इसी बीच बुढिया अपनी दुकान बन्द कर घर चलने लगी। चलते समय बुढिया ने साधु से कहा, 'चीजे मुँह से खाई जाती हैं और पुस्तकें पीठ में नहीं मस्तिष्क में पचाई जाती हैं।'

मासिक गीत / गान :

न हो साथ कोई अकेले बढ़ो तुम सफलता तुम्हारे चरण चूम लेगी।
सदा जो जगाए बिना ही जगा है अँधेरा उसे देखकर ही भगा है॥

वही बीज पनपा पनपना जिसे था घुना क्या किसी के उगाए उगा है।
अगर उग सको तो उगो सूर्य से तुम प्रखरता तुम्हारे चरण चूम लेगी॥

सही राह को छोड़कर जो मुड़े हैं वही देखकर दूसरों को कुढ़े हैं।
बिना पंख तौले उड़े जो गगन में न सम्बन्ध उनके गगन से जुड़े हैं॥

अगर उड़ सको तो पखेरु बनो तुम प्रवरता तुम्हारे चरण चूम लेगी।
न जो बर्फ की आँधियों से लड़े हैं कभी पग न उनके शिखर पर पड़े हैं॥

जिन्हें लक्ष्य से कम अधिक प्यार खुद से वही जी चुराकर विमुख हो खड़े हैं।
अगर जी सको तो जियो जूझकर तुम अमरता तुम्हारे चरण चूम लेगी॥

विद्या धन उद्यम बिना, कहौ जू पावै कौन।
बिना दुलाए ना मिले, ज्यौ पंखा की पौन॥ (बृंद)

----------00----------

अक्टूबर

आश्विन : अश्विन : अश्विन में शरद ऋतु होती है। यह ऋतु निर्मलता, सुचिता और सुन्दरता और साधुता की प्रतीक है। धर्म ग्रंथ कहतेहैं- 'साध्नोति परं कार्यम् इति साधु:'-जो दूसरों का कार्य सिद्ध करे, परोपकार में लगा रहे, वही साधु है। इसलिए साधु तो किसी भी परोपकारी को कह सकते हैं। सज्ञान पुरुष को भी साधु कहते हैं। जो धर्मिक हो, साधना करता हो, उसे भी साधु कहते हैं। यही प्रकृति और पुरुष की अंत रंगता है।''शान्ता महान्तो निवसन्ति सन्तो वसन्तवल्लोकहितं चरन्त:।''(विवेकचूणामणि-38) जो लोकहित का आचरण करे, वह सन्त है। तैतरीयोपनिषद कहता है- ''अस्ति ब्रह्मेति चेद् वेद। सन्तमेनं ततो विदुरिति।'' जो कहे कि परमात्मा है, परमात्मा के अस्तित्व को दृढ़तापूर्वक स्वीकार करे, वह भी सन्त है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम: (i) दो अक्टूबर-गाँधी जयंती (विश्व अहिंसा दिवस), (ii) लालबहादुर शास्त्री जयन्ती। (ii) बीस अक्टूबर वाल्मीकि जयंती। (iv) 31 अक्टूबर सरदार वल्लभ भाई पटेल की जन्मतिथि (v) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे ।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

सौर ऊर्जा

पृथ्वी की सतह पर पहुंचने वाली सौर विकिरण की मात्रा और प्रभाव दोनों वातावरण के शीर्ष तक पहुंचने वाली विकिरण से भिन्न होती है। पृथ्वी पर पहुंचने वाली विकिरण का कुछ हिस्सा बादलों के द्वारा स्पेस में परावर्तित होता है। इसके अलावा, वायुमंडल में प्रवेश करने वाली विकिरण को हवा में अणुओं द्वारा आंशिक रूप से अवशोषित किया जाता है। इसके अलावा, सौर विकिरण का कुछ हिस्सा बादलों में उपस्थित अणुओं और धूल के कणों द्वारा विकर्णित होता है। पृथ्वी की सतह पर प्राप्त सौर विकिरण विभिन्न कारणों से प्रभावित होती है। इसको निम्न प्रकार से समझना होगा - (1) **सौर विकिरण :** (i) सौर विकिरण सूर्य से निकलने वाली ऊर्जा है (ii) सौर विकिरण-पृथ्वी की सतह पर प्राप्त विकिरणित ऊर्जा हैं। (2) **सौर सूर्यतापन**-पृथ्वी के समतल क्षैतिज सतह पर प्राप्त सौर विकिरण को सूर्यतापन है। (3) **अलौकिक सौर विकिरण:** पृथ्वी के वायुमंडल के बाहर सूर्य के विकिरण की तीव्रता को "अलौकिक" कहा जाता है और इसमें कोई विसरित घटक नहीं होते हैं।अलौकिक विकिरण सौर विकिरण का माप है जो वायुमंडल की अनुपस्थिति में प्राप्त होता है। (4) **स्थलीय सौर विकिरण:** पृथ्वी की सतह पर प्राप्त विकिरण को "स्थलीय विकिरण" कहा जाता है और यह अलौकिक विकिरण का लगभग 70 प्रतिशत है। (5) **प्रत्यक्ष विकिरण**-दिशाओं में परिवर्तन के बिनाया सौर विकिरण जो अवशोषित या बिखरा हुआ नहीं है और सीधे सूर्य से जमीन पर पहुंचता है ,उसे "प्रत्यक्ष विकिरण" या बीम विकिरण कहा जाता है। (6) **विसरित विकिरण:**- वायुमंडल द्वारा परावर्तन और प्रकीर्णन द्वारापरिवर्तित किए जाने केबादसूर्य से प्राप्त सौर विकिरण को "विसरित विकिरण" के रूप में जाना जाता है। वायुमंडल में सभी दिशाओं में बिखरे हुए सौर विकिरण के कारण, विसरित विकिरण आकाश के सभी भागों से पृथ्वी पर आता है। (7) **कुल विकिरण:** पृथ्वी की सतह पर प्रति इकाई क्षेत्रफल में प्रतिछेदित प्रत्यक्ष एवं विसरित विकिरण के योग को कुल विकिरण कहा जाता है।

कुछ महत्वपूर्ण बिंदु : (i) सूर्य की ऊंचाई जितनी कम होगी, वायुमंडल की मोटाई उतनी ही अधिक होगी जिससे सौर विकिरण को जमीन तक पहुंचना होगा। (ii) अवशोषण और प्रकीर्णन के परिणामस्वरूप, जब सूर्य आकाश में कम होता है, तब सूर्यातप कम होता है। हालाँकि, जब प्रकीर्णन होता है, तो विसरित विकिरण प्राप्त कुल का एक बड़ा अंश होता है। (iii) एक स्पष्ट दिन पर एक पर्यवेक्षक द्वारा देखे जाने वाले विसरित विकिरण की तीव्रता समदेशिक नहीं होती है, अपितु वर्ष के अक्षांश समय, दिन के समय, वायुमंडलीय सामग्री और अन्य कारकों के कार्य के रूप में भिन्न होती है। (iv) बादल वाले दिनों में जब सूरज दिखाई नहीं देता, तो जमीन पर पहुंचने वाला सारा विकिरण विसरित विकिरण होगा।(v) सामान्य तौर पर, आकाश में विभिन्न दिशाओं से आने वाले विसरित विकिरण की तीव्रता एक समान नहीं होती है। (vi) इसलिए विसरित विकिरण को प्रकृति में अनिसोट्रोपिक कहा जाता है। हालांकि, कई स्थितियों (जैसे भारी बादल) में, सभी दिशाओं से तीव्रता यथोचित रूप से एक समान होती है जिसे आइसोट्रोपिक कहा जाता है।

इस प्रकार पृथ्वी की सतह पर पहंचने वाली विकिरण पृथ्वी के वायुमंडल के बाहर प्राप्त होने वाले विकिरण से कम होती है और तीव्रता में यह कमी वायुमंडलीय स्थितियों पर निर्भर करती है कि धूल के कणों की मात्रा, जलवाष्प, ओजोन सामग्री, बादल और पृथ्वी की सतह के किसी स्थान परवायुमंडल के माध्यम से पहंचने से पहले विकिरण द्वारा तय की गई दूरी पर भी निर्भर करती है।

प्रत्यक्ष विकिरण एवं विसरित विकिरण: वायु द्रव्यमान (Air Mass): सौर विकिरण की पथ लंबाई जो की वायुमंडल के माध्यम से गुजरती है, वायु द्रव्यमान कहलाता है वायु द्रव्यमान को सैर विकिरण की पाठ की लम्बाई एवं वायुमंडल के माध्यम से उर्ध्वाधर पथ की लंबाई के अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है, वायु द्रव्यमान का मान इकाई होता है जब विकिरण का पथ ऊर्ध्वाधर होता है।

"वायुमंडल के बाहर प्राप्त होने की तुलना में पृथ्वी तक पहुंचने वाले सौर विकिरणों में भिन्नता के कारण": जैसे-जैसे सौर विकिरण पृथ्वी के वायुमंडल से गुजरते हैं, शॉर्टवेव 'इंट्रावॉयलेट किरणें' वायुमंडल में ओजोन द्वारा 'अवशोषित' होती हैं और तरंग अवरक्त तरंगें वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड और नमी द्वारा 'अवशोषित' होती हैं। लॉन्ग वेव किरणों का एक हिस्सा वायुमंडल के घटकों जैसे जल वाष्प और धूल द्वारा 'विसरित विकिरण' होता है। इस बिखरे हुए विकिरण का एक हिस्सा हमेशा पृथ्वी की सतह पर 'विसरित विकिरण' के रूप में पहुंचता है। इस प्रकार पृथ्वी की सतह पर प्राप्त विकिरणों में आंशिक रूप से बीम विकिरण और आंशिक रूप से फैलाव विकिरण शामिल हैं।

सारांश : जैसे ही सूर्य की विकिरण जब वायुमंडल से होकर गुजरता है तो वायु के अणु, जल वाष्प, बादलों, धूल, प्रदूषण की वजह से इसका कुछ भाग अवशोषित, विसरित और परावर्तित होता है। प्रत्यक्ष एवं विसरित विकिरण से सौर ऊर्जा का कितना प्रतिशत पृथ्वी पर पहुँचता है की गणना की जा सकती है। वायु द्रव्यमान प्रकाश की शक्ति में कमी को मापता है क्योंकि यह वायुमंडल से होकर गुजरता है और हवा और धूल द्वारा अवशोषित हो जाता है। वायु द्रव्यमान गुणांक आमतौर पर मानकीकृत परिस्थितियों में सौर सेल के प्रदर्शन को चिह्नित करने के लिए उपयोग किया जाता है, और इसे अक्सर एक संख्या के बाद सिंटैक्स "एएम" का उपयोग करने के लिए संदर्भित किया जाता है। स्थलीय बिजली पैदा करने वाले पैनलों को चिह्नित करते समय "एएम1.5" लगभग सार्वभौमिक है।

भारतीय ज्ञान परंपरा

अनुकरणीय राजकर्ता:

वैज्ञानिकाश्च कपिलः कणादः सुश्रुतस्तथा
भास्कराचार्यो वराहमिहिरः सुधीः ॥

श्रीमद्भगवतगीता

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्- ॥1

जो पुरुष सर्वज्ञ, अनादि, सबके नियंता सूक्ष्म से भी अति सूक्ष्म, सबके धारणपोषण करने वाले अचिन्त्य-स्वरूप-, सूर्य के सदृश नित्य चेतन प्रकाश रूप और अविद्या से अति परे, शुद्ध सच्चिदानन्दघन परमेश्वर का स्मरण करता है॥

प्रयाण काले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव ।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ।। 2

वह भक्ति युक्त पुरुष अन्तकाल में भी योगबल से भृकुटी के मध्य में प्राण को अच्छी प्रकार स्थापित करके, फिर निश्चल मन से स्मरण करता हुआ उस दिव्य रूप परम पुरुष परमात्मा को ही प्राप्त होता है॥

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च।
मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम् ॥
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥ 3

सब इंद्रियों के द्वारों को रोककर तथा मन को हृदेश में स्थिर करके, फिर उस जीते हुए मन द्वारा प्राण को मस्तक में स्थापित करके, परमात्मा संबंधी योगधारणा में स्थित होकर जो पुरुष 'ॐ' इस एक अक्षर रूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थस्वरूप मुझ निर्गुण ब्रह्म का चिंतन करता हुआ शरीर को त्यागकर जाता है, वह पुरुष परम गति को प्राप्त होता है॥

सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः ।

रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ॥ 4

ब्रह्मा का जो एक दिन है, उसको एक हजार चतुर्युगी तक की अवधि वाला और रात्रि को भी एक हजार चतुर्युगी तक की अवधि वाला जो पुरुष तत्व से जानते हैं, वे योगीजन काल के तत्व को जानने वाले हैं ॥

अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे ।

रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥ 5

संपूर्ण चराचर भूतगण ब्रह्मा के दिन के प्रवेश काल में अव्यक्त से अर्थात ब्रह्मा के सूक्ष्म शरीर से उत्पन्न होते हैं और ब्रह्मा की रात्रि के प्रवेशकाल में उस अव्यक्त नामक ब्रह्मा के सूक्ष्म शरीर में ही लीन हो जाते हैं ॥

शरद ऋतु चौपाई :

बरषा बिगत सरद रितु आई । लछमन देखहु परम सुहाई ॥

फूलें कास सकल महि छाई । जनु बरषाँ कृत प्रगट बुढ़ाई ॥

हे लक्ष्मण! देखो, वर्षा बीत गई और परम सुंदर शरद् ऋतु आ गई । फूले हुए कास से सारी पृथ्वी छा गई । मानो वर्षा ऋतु ने अपना बुढ़ापा प्रकट किया है ॥

उदित अगस्ति पंथ जल सोषा। जिमि लोभहिं सोषइ संतोषा ॥

सरिता सर निर्मल जल सोहा। संत हृदय जस गत मद मोहा ॥

अगस्त्य के तारे ने उदय होकर मार्ग के जल को सोख लिया, जैसे संतोष लोभ को सोख लेता है । नदियों और तालाबों का निर्मल जल ऐसी शोभा पा रहा है जैसे मद और मोह से रहित संतों का हृदय! ॥

रस रस सूख सरित सर पानी । ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी ॥

जानि सरद रितु खंजन आए । पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए ॥

नदी और तालाबों का जल धीरे-धीरे सूख रहा है । जैसे ज्ञानी पुरुष ममता का त्याग करते हैं । शरद ऋतु जानकर खंजन पक्षी आ गए । जैसे समय पाकर सुंदर सुकृत आ सकते हैं ।

पंक न रेनु सोह असि धरनी । नीति निपुन नृप कै जसि करनी ॥

जल संकोच बिकल भइँ मीना । अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना ॥

न कीचड़ है न धूल? इससे धरती (निर्मल होकर) ऐसी शोभा दे रही है, जैसे नीति निपुण राजा की करनी ! जल के कम हो जाने से मछलियाँ व्याकुल हो रही हैं, जैसे मूर्ख कुटुम्बी धन के बिना व्याकुल होता है ॥

बिनु घन निर्मल सोह अकासा । हरिजन इव परिहरि सब आसा ॥

कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी । कोउ एक भाव भगति जिमि मोरी ॥

बिना बादलों का निर्मल आकाश ऐसा शोभित हो रहा है जैसे भगवान के भक्त सब आशाओं को छोड़कर सुशोभित होते हैं । कहीं-कहीं शरद् ऋतु की थोड़ी-थोड़ी वर्षा हो रही है। जैसे कोई विरले ही मेरी भक्ति पाते हैं ॥

चले हरषि तजि नगर नृप तापस बनिक भिखारि ।

जिमि हरिभगति पाइ श्रम तजहिं आश्रमी चारि ॥

(शरद् ऋतु पाकर) राजा, तपस्वी, व्यापारी और भिखारी (क्रमशः विजय, तप, व्यापार और भिक्षा के लिए) हर्षित होकर नगर छोड़कर चले। जैसे श्री हरि की भक्ति पाकर चारों आश्रम वाले (नाना प्रकार के साधन रूपी) श्रमों को त्याग देते हैं ॥

सुखी मीन जे नीर अगाधा। जिमि हरि सरन न एकऊ बाधा॥

फूलें कमल सोह सर कैसा। निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जैसा॥

जो मछलियाँ अथाह जल में हैं, वे सुखी हैं, जैसे श्री हरि के शरण में चले जाने पर एक भी बाधा नहीं रहती। कमलों के फूलने से तालाब कैसी शोभा दे रहा है, जैसे निर्गुण ब्रह्म सगुण होने पर शोभित होता है॥

गुंजत मधुकर मुखर अनूपा। सुंदर खग रव नाना रूपा॥

चक्रबाक मन दुख निसि पेखी। जिमि दुर्जन पर संपति देखी॥

भौंरे अनुपम शब्द करते हुए गूँज रहे हैं तथा पक्षियों के नाना प्रकार के सुंदर शब्द हो रहे हैं। रात्रि देखकर चकवे के मन में वैसे ही दुःख हो रहा है, जैसे दूसरे की संपत्ति देखकर दुष्ट को होता है॥

चातक रटत तृषा अति ओही। जिमि सुख लहइ न संकर द्रोही॥

सरदातप निसि ससि अपहरई। संत दरस जिमि पातक टरई॥

पपीहा रट लगाए है, उसको बड़ी प्यास है, जैसे श्री शंकरजी का द्रोही सुख नहीं पाता। शरद् ऋतु के ताप को रात के समय चंद्रमा हर लेता है, जैसे संतों के दर्शन से पाप दूर हो जाते हैं॥

देखि इंदु चकोर समुदाई। चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई॥

मसक दंस बीते हिम त्रासा। जिमि द्विज द्रोह किएँ कुल नासा॥

चकोरों के समुदाय चंद्रमा को देखकर इस प्रकार टकटकी लगाए हैं जैसे भक्त भगवान् को पाकर उनके (निर्निमेष नेत्रों से) दर्शन करते हैं। मच्छर और डाँस जाड़े के डर से इस प्रकार नष्ट हो गए जैसे ब्राह्मण के साथ वैर करने से कुल का नाश हो जाता है॥

भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ।

सदगुर मिलें जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ॥

(वर्षा ऋतु के कारण) पृथ्वी पर जो जीव भर गए थे, वे शरद् ऋतु को पाकर वैसे ही नष्ट हो गए जैसे सद्गुरु के मिल जाने पर संदेह और भ्रम के समूह नष्ट हो जाते हैं॥

बोध वाक्य : **"** प्रत्येक व्यक्ति की अच्छाई ही प्रजातंत्रीय शासन की सफलता का मूल सिद्धांत है।"- राजगोपालाचारी

बोध कथा : **व्यापार का आधार सच**

आजकल चारों ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला है। लोगों की यह धारणा बन गयी है कि ईमानदारी से व्यापार नहीं हो सकता। किन्तु ईमानदारी से काम करने पर प्रारम्भ में कुछ समय कठिनाई होती है, पर फिर सदा सफलता ही मिलती है। एक व्यापारी था उसकी दुकान पर दिन भर भीड़ लगी रहती थी। पूछने पर उसने बताया कि वह अपनी दुकान पर सदा साफ माल बेचता है। और उसका मूल्य भी समुचित रखता है। ग्राहक चाहे छोटा बच्चा हो या बड़ा आदमी, दाम और माल में कोई फर्क नहीं होता।

इस कारण शुरू में उसे अनेक परेशानियां झेलनी पड़ीं। घर वालों तथा अन्य व्यापारियों ने भी हतोत्साहित किया, पर उसने अपनी ईमानदारी का व्यापार नहीं छोड़ा। परिणाम यह हुआ कि अब उसकी दुकान पर पूरे बाजार से अधिक भीड़ रहती है। लोग उससे उधार सामान भी ले जाते थे, पर किसी ने उसका पैसा नहीं मारा। निःसंदेह सच की शक्ति बहुत है पर उसे अपना प्रभाव जमाने में समय लगता है। लेकिन एक बार उसकी सुगंध फैली, तो वह सदा के लिए लाभ देती है।

मासिक गीत / गान :

भुवनमण्डले नवयुगमुदयतु सदा विवेकानन्दमयम् ।

सुविवेकमयं स्वानन्दमयम् ॥

तमोमयं जन जीवनमधुना निष्क्रियताऽऽलस्य ग्रस्तम् ।

रजोमयमिदं किंवा बहुधा क्रोध लोभमोहाभिहतम् ।

भक्तिज्ञानकर्मविज्ञानै: भवतु सात्विकोद्योतमयम् ॥

वह्निवायुजल बल विवर्धकं पाञ्चभौतिकं विज्ञानम् ।

सलिलनिधितलं गगनमण्डलं करतलफलमिव कुर्वाणम् ।

दीक्षुविकीर्णं मनुजकुलमिदं घटयतुचैक कुटुम्बमयम् ॥

सगुणाकारं ह्यगुणाकारं एकाकारमनेकाकारम् ।

भजन्ति एते भजन्तु देवं स्वस्वनिष्ठया विमत्सरम् ।

विश्वधर्ममिममुदारभावं प्रवर्धयतु सौहार्दमयम् ॥

जीवे जीवे शिवस्यरूपं सदा भवयतु सेवायाम् ।

श्रीमदूर्जितं महामानवं समर्चयतु निजपूजायाम् ।

चरतु मानवोऽयं सुहितकरं धर्मं सेवात्यागमयम् ॥

----------00----------

नवम्बर

कार्तिक : अपने अस्तित्व और परम्परा को लेकर मनुष्य प्रारम्भ से ही अत्यंत जागरुक रहा है और इसके चलते अनेक मत मतातरों का काल के अंतराल में उद्भव हुआ । भारत तो मानो इस परम्परा का सुमेरु रहा है । इसी के चलते यहाँ दर्शन की भी अनेक धाराओं का प्रस्फुटन हुआ । इस गौरवपूर्ण भारतीय दार्शनिक परम्परा में अद्वैतवाद का अनन्यतम स्थान है, जिसकी ब्रह्मसूत्र रूप में असाधारण व्याख्या शंकराचार्य ने की है । असाधारण विद्वता के चलते उन्होंने कई अन्य प्राचीन ग्रंथों के भी भाष्य लिखे, वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया और सिर्फ 32 वर्ष की आयु में जब यह नश्वर संसार छोडा, तब वह संसार को ज्ञान की उन ऊँचाइयों से परिचित करा चुके थे, जिनकी तुलना गिने चुने प्रकाश बिन्दुओं से ही की जा सकती है । इन शंकराचार्य की प्राथमिक साधना स्थली ओंकारेश्वर रही है । प्रदेश के स्थापना दिवस पर हम उन्हें अवश्य स्मरण करें ।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम: 04 नवम्बर 1845 – वासुदेव बळवंत फडके –क्रांतिकारी जिन्हें आदि क्रांतिकारी कहा जाता है। 05 नवम्बर 1870 – देशबंधु चित्तरंजनदास – सुप्रसिद्ध भारतीय नेता, राजनीतिज्ञ, वकील 07 नवम्बर 1858 –

बिपिन चंद्र पाल – एक भारतीय क्रांतिकारी । 13 नवम्बर 1780 – महाराणा रणजीतसिंह । 30 नवम्बर 1858 – जगदीशचंद्र बोस । 19 नवम्बर 1917 – इंदिरा गांधी – भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री ।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

सौर तापीय ऊर्जा

ऊर्जा दैनिक जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है । ऊर्जा संरक्षण के नियम से ऊर्जा को एक रूप से दूसरे रूप में रूपांतरित किया जा सकता है। शारीरिक कार्य को करने के लिए मांसपेशियों को ऊर्जा, विभिन्न विद्युत उपकरण को चलाने के लिए विद्युत ऊर्जा एवं सभी प्रकार के वाहनों को चलाने के लिए रासायनिक ऊर्जा इत्यादि की आवश्यकता होती है । यह सभी ऊर्जा किसी ना किसी ऊर्जा स्रोत से प्राप्त होती है, जैसे विद्युत ऊर्जा तापीय संयंत्र, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा आदि से उत्पन्न होती है । सौर ऊर्जा सूर्य से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा है । यह ऊर्जा सूर्य से दो रूप में निकलती है - प्रकाशीय ऊर्जा एवं सौर तापीय ऊर्जा । प्रकाशीय ऊर्जा को फोटोवोल्टिक सेल के द्वारा इलेक्ट्रिक ऊर्जा में बदला जा सकता है । दिन के समय में सूर्य से प्राप्त प्रकाशीय ऊर्जा के माध्यम से सोलर सेल का प्रयोग करके, विद्युत ऊर्जा प्राप्त की जाती है । परंतु रात्रि में प्रकाशीय ऊर्जा उपलब्ध न होने के कारण सोलर सेल कार्य नहीं करता है । इस स्थिति में यदि दिन के समय में सूर्य की सौर तापीय ऊर्जा को एकत्रित कर लिया जाए तो रात्रि के समय में इस ऊर्जा के माध्यम से विद्युत तापीय संयंत्र का उपयोग करके विद्युत ऊर्जा को प्राप्त किया जा सकता है । इस प्रकार सौर ऊर्जा से हम दिन एवं रात दोनों समय विद्युत ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं एवं घरों में तथा कारखानों में विद्युत ऊर्जा का उपयोग कर सकते हैं ।

(1) सौर तापीय ऊर्जा को समझना क्यों आवश्यक है -(i) विभिन्न परसों तथा अनुप्रयोगों में संग्राहक (ii) सूर्य के विकिरण में उपस्थित तापीय ऊर्जा की समझ को विकसित करना (iii) घरेलू एवं औद्योगिक अनुप्रयोगों में सौर तापीय ऊर्जा का प्रयोग करना (iv) सूर्य की विकिरण ऊर्जा को तापीय उर्जा अथवा ऊष्ममीय ऊर्जा में परिवर्तित करना (v) सूर्य से प्राप्त ऊर्जा को आवश्यक स्थान पर प्रयोग करने की सोच में विकास (vi) अच्छे सौर ऊर्जा ऊर्जा संग्राहक के भौतिक गुणों को समझना (vii) सौर तापीय संग्राहक परासो की जानकारी के स्तर में संवृद्धि (viii) सौर तापीय ऊर्जा की अनुप्रयोगों की जानकारी में संवर्धन ।

(2) सूर्य का विकिरण किसी वस्तु पर गिरता है तब वस्तु के तापमान में वृद्धि निम्न बिंदुओ पर निर्भर करती है - (i) वस्तु के द्वारा अवशोषित ऊर्जा ऊर्जा अधिकतम होनी चाहिए (ii) वस्तु के द्वारा परावर्तित ऊर्जा कम से कम होनी चाहिए (iii) ऊर्जा का क्षय कम से कम होना चाहिए । अर्थात किसी भी उर्जा संग्राहक के लिए अधिकतम तापमान एवं अधिकतम निर्गत शक्ति (Output Power) उत्पन्न करने के लिए उच्चतम अवशोषक पदार्थ, अच्छा रोधक निकाय (insulatedbody) अधिकतम सौर विकिरण तीव्रता में रखा होना चाहिए । एक उर्जा संग्राहक को बनाने के लिए या करने के लिए हमे उपरोक्त बिन्दुओ का ध्यान रखना अति आवश्यक है ।

(3) ऊष्मा संग्राहक : संवहन द्वारा छय होने वाली ऊष्मा को रोकना अति आवश्यक है साथ ही कांच की सतह पूर्ण रूप से पारदर्शी होनी चाहिए, जिससे ऊष्मा परावर्तन कम से कम हो सके और ऊष्मा संग्राहक द्वारा ज्यादा से ज्यादा विकिरण अवशोषित कर सौर तापीय ऊर्जा मिल सके ।

I. **ऊष्मा संग्राहकों का उपयोग के आधार पर,विभिन्न श्रेणियों (Range) में वितरण** – सौर तापीय ऊर्जा, ठंडी जलवायु में गर्म पानी एवं गर्म हवा प्राप्त कर विभिन्न कार्य में उपयोग में लाई जाती है । अधिक तापमान उत्पन्न करके स्टीम इंजन और टर्बाइन की सहायता से सौर तापीय ऊर्जा को यांत्रिकी एवं विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित किया जा सकता हैं । जब किसी वस्तु को अधिक तापमान पर गर्म करना होता है तो पहले उसे सौर तापीय ऊर्जा के द्वारा गर्म किया जा सकता है, बाद में ईंधन का उपयोग करके अधिक तापमान तक गर्म किया जा सकता है । पहले सौर तापीय ऊर्जा का प्रयोग करके गर्म करने से ईंधन की बहुत बड़ी मात्रा बच जाती है ।

II. **निम्न तापमान ऊर्जा संग्राहक:** (अ) जल तापन (ब) स्पेस तापन (स) स्पेस ठंडक (द) सुखाना। इन सभी के लिए फ्लैट प्लेट संग्राहक (flat plate collector) को उपयोग में लाया जाता है। जिसके द्वारा लगभग 100 डिग्री सेंटीग्रेड तक का तापमान उत्पन्न किया जाता है।

III. **मध्यम तापमान ऊर्जा संग्राहक:** (अ) वाष्प इंजन और टर्बाइन (ब) प्रोसेस हीटिंग (स) प्रशीतन (द) खाना बनाना इन सभी के लिए बेलनाकार और परवलायकार ऊर्जा संग्राहक को उपयोग में लाया जाता है। जिसके द्वारा लगभग 100 से 200 डिग्री सेंटीग्रेड तक का तापमान उत्पन्न किया जाता हैं।

IV. **उच्च तापमान ऊर्जा संग्राहक** : (अ) स्टीम इंजन और टर्बाइन (ब) स्टर्लिंग इंजन (स) थर्मो-इलेक्ट्रिक जनरेटर। इन सभी के लिए परवलयिक दर्पण श्रृंखला को उपयोग में लाया जाता है। जिसके द्वारा लगभग 200 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक का तापमान उत्पन्न किया जाता हैं।

(4) सामान्य जानकारी : (i) जल तापन (Water heating) का प्रयोग घरेलू एवं उद्योगों में किया जाता है। इसी प्रकार स्पेस तापन एवं स्पेस ठंडक का उपयोग किसी स्थान पर कृषि उत्पादों को एक निश्चित तापमान देने के लिए भी किया जाता है। अर्थात् कोल्ड स्टोरेज में भी सौर तापीय ऊर्जा प्रणाली का उपयोग भली-भाती किया जा सकता है। (ii) कुछ औद्योगिक प्रक्रियाओं के लिए हीटिंग, और कम उबलते कार्बनिक वाष्प का उपयोग कर इंजन और टर्बाइनों का संचालन 100 से 200 डिग्री सेल्सियस के कुछ उच्च तापमान पर संभव है। और बेलनाकार-पैराबोला रिफ्लेक्टर के साथ "फोकसिंग कलेक्टर्स" का उपयोग करके इस तापमान को प्राप्त किया जा सकता है। पारंपरिक भाप इंजन और टर्बाइन, स्टर्लिंग गर्म हवा के इंजन और थर्मोइलेक्ट्रिक जनरेटर को उच्च तापमान पर संचालित करने के लिए सौर संग्राहको की आवश्यकता होती है। (iii) 200 डिग्री सेल्सियस से ऊपर के तापमान पर काम करने वाले सौर कलेक्टरों में आम तौर पर एक केंद्रीय लक्ष्य (फोकसिंग कलेक्टर्स)पर प्रतिबिंबित करने वाले दर्पणों की एक श्रंखला होती है। जो की पैराबोलॉइड परावर्तक के रूप में होती है, और इसको दो-दिशात्मक दैनिक ट्रैकिंग की आवश्यकता होती है।

(5) सौर ऊर्जा को तापीय ऊर्जा में परिवर्तन करने के सिद्धांत- जैसा की हम जानते हैं कि, जब उत्तल लेंस का उपयोग करते हुए सूर्य से प्रकाश कागज की एक शीट पर केंद्रित होता है तो कागज जलने लगता है, जिससे धुआं उत्पन्न होता है। यह थोड़ी देर बाद आग भी पकड़ सकता है। इस प्रक्रिया में सभी किरणें केन्द्रित (फोकस, focus) होने के बाद एक बिन्दु पर गिरती हैं। इन किरणों में निश्चित रूप से ऊष्मा ऊर्जा होती है और ऊष्मा ऊर्जा भी उसी बिंदु पर जमा हो जाती हैं। जब किरणों की संख्या कागज के ज्वलन तापमान तक पहुंचने के लिए पर्याप्त रूप से जमा हो जाती है, तो कागज में आग लग जाती है। इस प्रकार कागज जलने जाता है।

सोलर तापीय ऊर्जा इस प्रयोग का एक बड़ा रूप है। जिसमें बहुत बड़े स्थान पर पड़ने बाले सूर्य के विकिरण को कांच आदि की सहायता से एक स्थान पर फोकस किया जाता है और वहां का तापमान बढ़ाया जाता है। सूर्य से हमें प्राप्त होने वाली अधिकांश ऊर्जा प्रकाश के रूप में आती है, एक लघु तरंग विकिरण (अवरक्त विकिरण) भी इसके साथ में पृथ्वी तक पहुँचता है, जो मानव आंखों को दिखाई नहीं देता है। जब यह दोनों विकिरण किसी ठोस या तरल से टकराते है, तो यह उसके द्वारा अवशोषित कर लिये जाते है, और ऊष्मा ऊर्जा में परिवर्तित हो जाते है,तत्पश्चात् वह ठोस या तरल गर्म हो जाता है। और इस ऊष्मा की सहायता से उच्च ऊर्जा घनत्व वाले द्रव को गर्म कर लिया जाता है ऊष्मा गर्म ठोस या तरल संग्रहित हो जाती है।जिसे आवश्यकतानुसार प्रयोग में लाया जा सकता है।

(6) सौर तापीय ऊर्जा के लाभ एवं हानि-(i) लाभ : (अ) सौर ऊर्जा आसानी से और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। (ब) यह ऊर्जा का पुन: उपयोग योग्य स्रोत है। (स) यह पर्यावरण के अनुकूल (यानी प्रदूषण मुक्त) है। (द) यह ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को कम करता है। (ii) **हानि:** (अ) सूर्य के आकाश में होने पर ही उपलब्ध होती है। (ब) भंडारण करने की आवश्यकता रहती है। (स) बहुत बड़े स्थान की आवश्यकता रहती है। (द) सौर तापीय संग्राहक की सूर्य के साथ स्थिति बदलनी पड़ती है अर्थात ट्रैकिंग बहुत जरूरी है।

(7) सारांश: सूर्य के विकिरण में प्रकाशीय ऊर्जा एवं सौर तापीय ऊर्जा उपलब्ध होती है। सूर्य के विकिरण को एक स्थान पर संग्रहित करके ऊष्मीय ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। वह उपकरण जो सूर्य के विकिरण को संग्रहित करके ऊष्मा प्रदान करते है। सौर तापीय संग्राहक या सौर संग्राहक कहलाते हैं। भिन्न भिन्न तापमान प्राप्त करने के लिए भिन्न-भिन्न सोलर संग्रह कोका को उपयोग में लाया जाता है, जिसमें फ्लैट प्लेट कलेक्टर (संग्राहक) के द्वारा 100 डिग्री सेंटीग्रेड तक का तापमान, बेलनाकार एवं परवलयकार संग्राहक के द्वारा 100 से 200 डिग्री सेंटीग्रेड तक का तापमान तथा पर वलयाकार संग्राहक श्रृखंला के द्वारा 200 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक तक का तापमान उत्पन्न किया जाता है। आवश्यकतानुसार भिन्न-भिन्न संग्राहकों को भिन्न-भिन्न स्थानों पर उपयोग में लाया जा सकता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा

स्मरणीय विज्ञानवादी :

नागार्जुनो भरद्वाजः आर्यभट्टो वसुर्बुधः
वेंकटरामश्च विज्ञा रामानुजादयः ॥

श्रीमद्भगवतगीता

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥ 1

हे पार्थ वही यह भूतसमुदाय उत्पन्न हो-होकर प्रकृति वश में हुआ रात्रि के प्रवेश काल में लीन होता है और दिन के प्रवेश ! कालमें फिर उत्पन्न होता है॥

परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः।
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति॥ 2

उस अव्यक्त से भी अति परे दूसरा अर्थात विलक्षण जो सनातन अव्यक्त भाव है, वह परम दिव्य पुरुष सब भूतों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता॥

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम॥ 3

जो अव्यक्त 'अक्षर' इस नाम से कहा गया है, उसी अक्षर नामक अव्यक्त भाव को परमगति कहते हैं तथा जिस सनातन अव्यक्त भाव को प्राप्त होकर मनुष्य वापस नहीं आते, वह मेरा परम धाम है॥

मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः॥ 4

मुझ निराकार परमात्मा से यह सब जगत् जल से बर्फ के सदृश परिपूर्ण है और सब भूत मेरे अंतर्गत संकल्प के आधार स्थित हैं, किंतु वास्तव में मैं उनमें स्थित नहीं हूँ॥

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्।
भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः॥ 5

वे सब भूत मुझमें स्थित नहीं हैं, किंतु मेरी ईश्वरीय योगशक्ति को देख कि भूतों का धारण पोषण करने वाला और-भूतों को उत्पन्न करने वाला भी मेरा आत्मा वास्तव में भूतों में स्थित नहीं है॥

समुद्र पार करने पर विचार :

मैं देखउँ तुम्ह नाहीं गीधहि दृष्टि अपार।
बूढ़ भयउँ न त करतेउँ कछुक सहाय तुम्हार॥

मैं उन्हें देख रहा हूँ, तुम नहीं देख सकते, क्योंकि गिद्ध की दृष्टि अपार होती है,क्या करूँ ? मैं बूढ़ा हो गया, नहीं तो तुम्हारी कुछ तो सहायता अवश्य करता॥

पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं। अति अपार भवसागर तरहीं॥
तासु दूत तुम्ह तजि कदराई राम हृदयँ धरि करहु उपाई॥

पापी भी जिनका नाम स्मरण करके अत्यंत पार भवसागर से तर जाते हैं। तुम उनके दूत हो, अतः कायरता छोड़कर श्री रामजी को हृदय में धारण करके उपाय करो॥

जरठ भयउँ अब कहइ रिछेसा। नहिं तन रहा प्रथम बल लेसा॥
अंगद कहइ जाउँ मैं पारा। जियँ संसय कछु फिरती बारा॥
जामवंत कह तुम्ह सब लायक। पठइअ किमि सबही कर नायक॥

ऋक्षराज जाम्बवान् कहने लगे- मैं बूढ़ा हो गया। शरीर में पहले वाले बल का लेश भी नहीं रहा। अंगद ने कहा- मैं पार तो चला जाऊँगा, परंतु लौटते समय के लिए हृदय में कुछ संदेह है। जाम्बवान् ने कहा- तुम सब प्रकार से योग्य हो, परंतु तुम सबके नेता हो, तुम्हे कैसे भेजा जाए ?॥

कहइ रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेहु बलवाना॥
पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना॥

ऋक्षराज जाम्बवान् ने श्री हनुमानजी से कहा- हे हनुमान्! हे बलवान्! सुनो, तुमने यह क्या चुप साध रखी है? तुम पवन के पुत्र हो और बल में पवन के समान हो। तुम बुद्धि-विवेक और विज्ञान की खान हो॥

कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं॥
राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्बताकारा॥

जगत् में कौन सा ऐसा कठिन काम है जो हे तात! तुमसे न हो सके। श्री रामजी के कार्य के लिए ही तो तुम्हारा अवतार हुआ है। यह सुनते ही हनुमान जी पर्वत के आकार के (अत्यंत विशालकाय) हो गए॥

कनक बरन तन तेज बिराजा। मानहुँ अपर गिरिन्ह कर राजा॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा। लीलहिं नाघउँ जलनिधि खारा॥

उनका सोने का सा रंग है, शरीर पर तेज सुशोभित है, मानो दूसरा पर्वतों का राजा सुमेरु हो। हनुमान्जी ने बार-बार सिंहनाद करके कहा- मैं इस खारे समुद्र को खेल में ही लाँघ सकता हूँ॥

जामवंत मैं पूँछउँ तोही। उचित सिखावनु दीजहु मोही॥
एतना करहु तात तुम्ह जाई। सीतहि देखि कहहु सुधि आई॥
तब निज भुज बल राजिवनैना। कौतुक लागि संग कपि सेना॥

हे जाम्बवान्! मैं तुमसे पूछता हूँ, तुम मुझे उचित सीख देना॥ (जाम्बवान् ने कहा-) हे तात! तुम जाकर इतना ही करो कि सीताजी को देखकर लौट आओ और उनकी खबर कह दो। फिर कमलनयन श्री रामजी अपने बाहुबल से (ही राक्षसों का संहार कर सीताजी को ले आएँगे, केवल) खेल के लिए ही वे वानरों की सेना साथ लेंगे॥

बोध वाक्य: "नारी की करुणा अंतरजगत का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुए हैं।"-जयशंकर प्रसाद

बोध कथा :

गिलहरी और चूहा

गिलहरी और चूहा साथ-साथ बैठे आपस में अपने जीवन की चर्चा कर रहे थे। चूहे ने कहा देखो मेरे पास कितने कठोर दाँत हैं। मैं कठोर से कठोर वस्तु को भी काट डालता हूँ। मैं गणेश जी की सवारी होने के कारण जगत में मूसकराज के नाम से जाना जाता हूँ। तब गिलहरी बोली तुम्हारे मन में इन दाँतों से कठोर वस्तुओं को काटने का विचार क्यों आता है, तुम इन दाँतों से नक्कासी कर सकते हो। यदि कर सकते हो तो बताओ। मूसक राज असमंजस में पड़ गया।

वह मन में सोचा, इसके पास भी तो कुछ विशेषता होगी उससे इसे भी अनुत्तरित किया जाय। वह बोला तुम्हारे पास भी तो अपनी कुछ विशेषता होगी। गिलहरी बोली मेरे शरीर में तीन धारियाँ हैं जो मेरे जीवन का रहस्य हैं। मूसकराज बोला उन धारियों से तुम क्या करती हो ? गिलहरी बोली मेरी ये तीनों धारियां जीवन का नेतृत्व करती हैं। मूसकराज हँसा और बोला, बताओ तो मुझे भी अपना दर्शन। गिलहरी बोली देखो, इन तीन धारियों में से दो काली हैं और एक बीच की सफेद। समझ में आया हो तो इसका अर्थ बताओं ? मूसकराज बोला, तुम्ही बताओं मुझे समझ में नहीं आया। गिलहरी बोली दोनों काली धारियाँ जीवन के काले पक्ष है लेकिन इनसे बचते हुए इनके बीच में से सफेदधारी के समान निरन्तर जीवन को आगे बढ़ाते रहना है, यही हमारे जीवन की सीख है।

मूसकराज लज्जित हो गया। उसे बड़ पश्चाताप हुआ कि वह गणेश जी का वाहन होते हुए, निरन्तर उनके साथ रहने पर भी यह छोटी सी बात नहीं समझ सका। उसने गणेश जी का ध्यान किया तो पाया कि वह अपने ही अहंकार में डूबा था, इसलिए अभी तक नासमझ ही रह गया। उसे लगा अहंकार रहित जीवन ही परोपकार का कारण बनता है। गिलहरी ने मूसकराज को एक कथा बताई। गिलहरी बोली मूसकराज अहंकार का त्याग किए बिना और अपने अन्दर देखे बिना सुख नहीं मिलता। अपने सद्गुणों को पहचान कर ही जीव सुखी होता है। उसने कहा, एक राजा था बड़ा उदिग्र था। उसने सोचा संसार की सारी वस्तु मेरे पास होने पर भी मैं सुखी क्यों नहीं। उसने अपने मंत्री को कहा, संसार में जो सबसे सुखी हो उसे लेकर आओ।

खोजबीन चालू हुई, उसमें एक स्वस्थ संन्यासी पकड़ कर लाया गया। राजा ने अपनी समस्या उनके सामने रखी। साधु ने कहा महाराज,भौतिक वस्तुएं संसार में दुख का कारण होती हैं, आप इन्हीं में सुख तलाश रहे हैं। सुख तो आपके अन्दर है, जरा देखें। साधु ने कहा, जीवन को गिलहरी के पीठ की तीन रेखाओं की भाँति जीना सीखना चाहिए और बीच की रेखा के समान अपने अन्दर की धवल आत्मा का चिन्तन करते हुए आनन्द मनाना चाहिए। राजा प्रसन्न हो गया। मूसकराज गिलहरी को प्रणाम कर आत्मचिंतन में डूब गया।

मासिक गीत / गान :

चलो जलाएं दीप वहाँ जहाँ अभी भी अंधेरा है॥
स्वेच्छाचारी मुक्त विहारी युवजन खाये ठोकर आज
मै और मेरा व्यक्ति केन्द्रित विचार मन में करता राज

नष्ट-भ्रष्ट परिवार तन्त्र ने डाला अब यहाँ डेरा है॥
सुजला सुफला धरती माँ को मानव पशुओं ने लूटा
पृथ्वी माँ हम बच्चे उसके किया भाव यह सब झूठा

भौतिकता की विषवेला ने अखिल विश्व को घेरा है॥

नहीं डरेंगे नहीं रुकेंगे बढ़ते जायें आगे हम
परिवर्तन की पावन आंधी लाकर ही हम लेंगे दम
राष्ट्र शक्ति के रूप मे देखो अब हो रहा सवेरा है ॥

----------00----------

मार्गशीर्ष :आजकल इतिहास को ठीक से लिखने का प्रयास कुछ देशभक्त विद्वानों द्वारा हो रहा है, इसका विरोध भी वे लोग कर रहे हैं, जो भारत को अनपढ़ और अंधविश्वासी लोगों का देश मानते हैं। जबकि सच यह है की भारत लाखों वर्ष पुराना राष्ट्र है। हमारा इतिहास गौरवशाली रहा है, लगभग एक हजार साल के जिस कालखंड को पराजय का बताया जाता है वह भी गुलामी का नहीं अपितु सतत संघर्ष का कालखंड है।

इतिहास को इसी दृष्टि से पढ़ना चाहिए, इससे नई पीढ़ी के मन में देश के प्रति गौरव का भाव जागृत होता है। पर यदि उन्हें पराजय और गुलामी जैसी गलत बातें ही पढ़ाई जाएगी, तो उनके मन में हीन भावना पैदा होगी अर्थात वे छोटी अवस्था से ही बच्चों के मन में सही संस्कार डालने चाहिए।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम: (i) 25 दिसम्बर- सुशासन दिवस (ii) 22 दिसम्बर गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजम की जन्मतिथि तथा टंट्या भील, चार दिसंबर-बलिदान दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। (iv) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

सौर संग्राहकों के प्रकार

सौर ऊर्जा में उपस्थित सौर तापीय ऊर्जा को विभिन्न उपकरणों के माध्यम से संग्रहित करना ऊर्जा की पूर्ति के लिए एक आवश्यक कदम है। अलग-अलग तापमान प्राप्त करने के लिए अलग-अलग प्रकार के सौर तापीय संग्राहकों का उपयोग किया जाता है। सौर संग्राहकों का रख-रखाव भी बहुत ही जरूरी है, क्योंकि समय के साथ रख-रखाव न करने के कारण इनकी क्षमता प्रभावित होती है। सूर्य का विकिरण संग्राहक पर संग्राहक के तल पर लंबवत पड़ना चाहिए। जिससे संग्राहक अपनी अधिकतम क्षमता पर कार्य कर सकें। केंद्रीय संग्राहकों की क्षमता को बनाए रखने के लिए सूर्य की गति के अनुसार दैनिक ट्रैकिंग की आवश्यकता रहती है।

(1) संग्राहक प्रणाली: वह उपकरण जो सौर तापीय ऊर्जा को संग्रहित करके किसी ठोस या द्रव को गर्म कर देते हैं। और उस ऊर्जा / ऊष्मा को ठोस या द्रव में संग्रहित कर लेते हैं, जिसे आवश्यकता अनुसार उपयोग में लाया जा सकता है। इस प्रकार के उपकरण को सौर तापीय संग्राहक कहते हैं। (i) **ऊष्मा संग्राहक प्रणाली :** सौर तापीय संग्राहक इस प्रकार कार्य करता है कि वह सोलर विकिरण से ऊष्मा प्राप्त कर किसी द्रव पदार्थ को गर्म कर देता है। यह द्रव पदार्थ एक थर्मल स्टोरेज टैंक (तापीय भंडारण टैंक) में जमा हो जाता है। स्टोरेज टैंक कुछ समय के लिए द्रव को स्टोर करके रखता है और जब इसकी आवश्यकता होती है, (जैसे कि बादल छा जाने के समय पर या रात्रि के समय पर) तो इसको उपयोग में लाया जा सकता है। (ii) **तापीय-विद्युत रूपांतरण प्रणाली :** इस निकाय में संग्रहित

की गई ऊष्मा को भाप में बदलकर टरबाइन इंजन को चलाया जाता है। जिसकी सहायता से विद्युत ऊर्जा उत्पन्न होती है। यह विद्युत ऊर्जा इलेक्ट्रिक बोर्ड और ग्रिड को प्रदान कर दी जाती है। (iii) **सह-उत्पादन प्लांट (Co-Generation plant) :-**सह-उत्पादन प्लांट में गर्म पानी या गरम वाष्प को सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचाया जाता है।

(2) **सौर तापीय संग्राहकों के गुण :** (1) संग्राहकों पर गिरने वाले सौर विकिरण का अधिकतम भाग अवशोषित एवं कम से कम भाग परावर्तित होता है। (ii) ऊर्जा का संपूर्ण विकिरण संग्राहक द्वारा एक स्थान पर केंद्रित करना चाहिये। (iii) संग्राहक में प्रयोग होने वाला द्रव अधिक तापमान रेंज पर कार्य करना चाहिये। (iv) सूर्य की दैनिक गति एवं स्थिति के आधार पर संग्राहक की स्थिति इस प्रकार बदलती है कि सूर्य का प्रकाश लम्बवत पड़े। (v) साधारण एवं कम खर्चीला।

(3) संग्राहक की क्षमता एवं इसको प्रभावित करने वाले कारक- संग्राहक की क्षमता इस बात पर निर्भर करती है कि वह अपने ऊपर पड़ने वाले कितने प्रतिशत विकिरण को ऊष्मा में परिवर्तित कर पता है।

(i) संग्राहक क्षमता $= \frac{\text{कुल प्राप्त ऊष्मा}}{\text{कुल आपतित प्रकाश विकिरण}} \times 100$.....वह प्रति एक कारक जो आपतित विकिरण एवं प्राप्त ऊष्मा को को प्रभावित करते हैं,संग्राहक क्षमता को प्रभावित करने वाले कारक कहलाते हैं। जिन्हें निम्न प्रकार से समझाया जा सकता है।

(ii) **छाया कारक (Shadow factor) :-** जब सूर्य का उन्नयन कोण (प्रकाश की किरणों का पृथ्वी परकोण) 15 डिग्री से कम होता है। तब आसपास की वस्तुओं की छाया पैनल (सौर तापीय संग्राहक) पर पड़ती है। इस छाया से पैनल के कार्य करने की क्षमता कम हो जाती है। पैनल पर उन्नयन कोण को बढ़ाकर छाया कारक को कम किया जा सकता है।

(iii) **कोसाइन हानि कारक (Cosine loss factor):** जब संग्राहक (कलेक्टर) की सतह पर सूर्य की किरण लम्बवत रूप से आपतित होती है, तो संग्राहक अपनी अधिकतम क्षमता पर कार्य करता है। यदि सूर्य की किरण की दिशा के लम्बवत तथा कलेक्टर की सतह के और बीच का कोण θ है, तब संग्राहक की सतह द्वारा अवशोषित सूर्य किरण का क्षेत्रफल $\cos\theta$ के समानुपाती होता है। इसलिए सौर ऊष्मा $\cos\theta$ के समानुपाती ही होता है।

(iv) **परावर्तक हानिकारक:-**संग्राहक में लगी हुई कांच की सतह एवं प्रवर्तक की सतह प्राय धूल गंदगी नमी आदि के एकत्रित हो जाने के कारण खराब हो जाती है। परिणाम स्वरूप वह अपनी चमक खो देती है और इस प्रकार संग्राहक की दक्षता कम हो जाती है इस प्रकार के नुकसान को रोकने के लिए संग्राहक की दैनिक एवं मौसमी रखरखाव की आवश्यकता होती है।

(4) संग्राहकों के प्रकार:-तापीय संग्राहक दो प्रकार के होते है- (i) अकेन्द्रित संग्राहक या फ्लेट प्लेट संग्राहक:- इस प्रकार के संग्राहकों में सौर विकिरण को अवशोषित करने वाला क्षेत्रफल संग्राहक प्लेट के क्षेत्रफल के बराबर होता है। इसलिए इसे फ्लेट प्लेट संग्राहक कहते हैं , जिसके मुख्य भाग इस प्रकार हैं । (ii) विकिरण अवशोषक प्लेट- सौर विकिरण कांच की प्लेट से होकर अवशोषक पर गिरता है। यह प्राय: धातु की खोखली बेलनाकार छड़ (Pipe) की एक श्रंखला होती है। जो तांबा एल्यूमीनियम या स्टील की बनी होती हैं विकिरण के अवशोषण को और बढ़ाने के लिए इनके ऊपर एक विशिष्ट प्रकार का लेप लगा दिया जाता है, कई बार ये लेप अवरक्त किरणों के उत्पादन को भी कम कर देते हैं, जिससे ऊष्मा अवशोषण और कम हो जाता है। इस एकत्रित ऊष्मा को, बेलनाकार क्षणों से द्रव (पानी और हवा) का प्रबाह करके निकाल लिया जाता है। गर्म द्रव को एकत्रित कर लिया जाता है। (iii) पारदर्शी कवर:- यह ऊष्मा अवशोषक के ऊपर लगी हुई एक काँच, टेफ्लॉन, टेडलर, मार्लेक्स आदि की एक प्लेट होती है जो विकिरण को अंदर पहुंचने में सहायता प्रदान करती है साथ ही यह संग्राहक से संवहन, चालन या विकिरण के द्वारा होने वाले ऊष्मा के नुकसान को रोकने में सहायता प्रदान करती है। (iv) कुचालक : यह अवशोषित प्लेट के नीचे लगा होता है जो कि निकायसे निकलने वाली ऊष्मा के लिए बाधा उत्पन करता है। (v) बॉक्स संरचना : फ्लैट प्लेट संग्राहक की संरचना बॉक्स के जैसे होती है।

फ्लैट प्लेट संग्राहक में द्रव प्रवाहवाली छड़ों को घुमावदार आकर का बनाया जाता है। जिससे इन्हें अधिक से अधिक क्षेत्रफल में फैलाया जा सके और अधिकतम ऊष्मा को अवशोषित किया जा सके। संग्राहक की क्षणों को अधिकतम ऊष्मा चालन वाली धातुओ जैसे तांबा, एल्युमिनियम, स्टील, पीतल, चांदी आदि का उपयोग करके बनाया जाता है, जिनको पूर्णत: काले पेंट के द्वारा, अवशोषण क्षमता को बढ़ाने के लिए लेप दिया जाता है ऊपर लगी एक पारदर्शी, कांच या प्लास्टिक की पट्टी अवशोषित ऊष्मा को निकाय से स्थानांतरित होने से रोकती है। संग्राहक का वह भाग जहां पर सोलर विकिरण नहीं पहुंचता है, कुचालक पदार्थ (क्राउन व्हाइट वूल, ग्लास वूल, एक्सपैंडेड पॉलीस्टाइनिन, फोम आदि) के द्वारा ढक दिया जाता है।

(5) फ्लैट प्लेट संग्राहक की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारक- (i) संग्राहक पर पड़ने वाला विकिरण : संग्राहक की दक्षता उस पर पड़ने वाले सौर विकिरण पर निर्भर करती है, और तापमान में वृद्धि के साथ बढ़ती है एवं विकिरण के बढ़ाने पर तापमान बढता है।(ii) कवर प्लेटों की संख्या: कवर प्लेटों की संख्या में वृद्धि आंतरिक संयोजी गर्मी के नुकसान को कम करती है, लेकिन कलेक्टर के अंदर विकिरण के संचरण को भी रोकती है। (iii) अवशोषक प्लेट और कांच के आवरण के बीच की दूरी:-अवशोषक और कवर प्लेट के बीच जितना अधिक स्थान होगा, आंतरिक ऊष्मा का नुकसान उतना ही कम होगा। (iv) कलेक्टर का झुकाव : बेहतर प्रदर्शन प्राप्त करने के लिए, फ्लैट-प्लेट कलेक्टर को अक्षांश के कोण पर झुकाया जाना चाहिए। (v) धातु की छड़े : धातु की छड़े उच्च तापमान का सामना करने में सक्षम होना चाहिए तथा ऑक्सीकरण नहीं होना चाहिए। (vi) अंदर जाने वाले द्रव का तापमान : संग्राहक के अंदर जाने वालेद्रव के तापमान में वृद्धि के साथ, संग्राहक निकाय के तापमान में भी वृद्धि होती है जिससे ऊष्मा में क्षय होता है। इससे दक्षता में कमी आती है। (vii) कवर प्लेट पर धूल : जैसे ही कवर प्लेट पर धूल के कण बढ़ते हैं। तो संग्राहक की दक्षता में कमी आती है। इस प्रकार, कलेक्टर की अधिकतम दक्षता प्राप्त करने के लिए बार-बार सफाई की आवश्यकता होती है।

(6) केन्द्रित संग्राहक : केंद्रित संग्राहक वह युक्ति है। जो प्रकाशीय उपकरणों की सहायता से सोलर विकिरण की मात्रा को अवशोषक तल पर बढ़ा देता है। केंद्रीय संग्राहक फ्लैट प्लेट संग्राहक का एक विशेष रुप है, जिसमें परावर्तन और अपवर्तन का प्रयोग करके सौर विकिरण को अवशोषक तल पर डाला जाता है। यहाँ पर विकिरण की मात्रा को 2 से लेकर 10,000 गुना तक बढ़ाया जाता है। इन संग्राहकों में अपेक्षाकृत बड़े क्षेत्र पर पड़ने वाला विकिरण काफी छोटे क्षेत्र(या अवशोषक) पर केंद्रित होता है। अत: ऊर्जा सांद्रता के परिणाम स्वरूप, अवशोषक तल के अंदर रखे तरल पदार्थ को 500 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक के तापमान पर गर्म किया जाता है, दिन भर में सूर्य की दिशा पूर्व से पश्चिम की ओर बदलती है। अधिकतम सौर विकरण प्राप्त करने के लिए संग्राहक को सूर्य के सीधे सामने रखना होता है। इसलिए इस उपकरण में ट्रैकिंग उपकरण की आवश्यकता होती है। ट्रैकिंग उपकरण सूर्य की दिशा को समझ कर केंद्रीय संग्राहक को सोलर विकिरण के सामने रखता है और संग्राहक दिशा को आवश्यकता अनुसार बदलता रहता है।

(7) केन्द्रित संग्राहक के प्रकार : (i) **परवलायकार संग्राहक** : परवलयाकार संग्राहक में परवलय आकर का एक दर्पण होता है। जिस पर सूर्य का विकिरण आपतित होता है। यह विकिरण परावर्तन के बाद दर्पण के फोकस बिंदु पर गिरता है, जहां पर अवशोषक पदार्थ रखे होते हैं। (ii) **दर्पण पट्टी संग्राहक :** दर्पण पट्टी संग्राहक में दर्पण की कई पट्टीया या थोड़े घुमावदार या अवतल दर्पण की पट्टी होती हैं। जो एक आधार पर लगे होते हैं। इन अलग-अलग दर्पणों को ऐसे कोणों पर रखा जाता है कि परावर्तित सौर विकिरण उसी फोकल तल पर गिरते हैं जहां पाइप / अवशोषक पदार्थ रखा जाता है। इस प्रणाली में, कलेक्टर पाइप को लगातार घुमाया जाता है ताकि अवशोषक पर परावर्तित किरणें केंद्रित रहें और एक सामान रूप से गिरें। (iii) **फ्रेस्नेल लेंस संग्राहक :** इस संग्राहक में एक फ्रेस्नेल लेंस का उपयोग किया जाता है, जिसमें एक तरफ खांचे मौजूद होते हैं और दूसरी तरफ सपाट सतह होती है। सौर विकिरण जो लेंस पर समान्य रूप से गिरता है,लेंस द्वारा अपवर्तित होकर अवशोषक (ट्यूब) पर केंद्रित होता है। ग्लास और प्लास्टिक दोनों का उपयोग फ्रेस्नेल लेंस के लिए अपवर्तक सामग्री के रूप में किया जा सकता है।

(8) **परवलयिक डिश कलेक्टर :** इस प्रकार के संग्राहक में सूर्य के विकिरण को एक बिंदु पर केंद्रित किया जाता हैं। इस संग्राहक के द्वारा तापमान 300 डिग्री सेल्सियस तक उत्पन्न किया जा सकता है। इसमें डिश का व्यास 6 से 7 मीटर के बीच है और इसे व्यावसायिक रूप से निर्मित किया जाता है। समायोज्य दर्पण के साथ फ्लैट प्लेट कलेक्टर, कंपाउंड परवलयिक संग्राहक, आदि भी केन्द्रक संग्राहक के उदाहरण हैं।

(9) सारांश :- फ्लैट प्लेट संग्राहक एवं केंद्रीय संग्राहक सौर तापीय ऊर्जा को अवशोषित करने वाले दो मुख्य उपकरण हैं। फ्लैट फ्लैट संग्राहक के द्वारा 100 डिग्री सेंटीग्रेड तक का तापमान प्राप्त किया जा सकता है। जबकि केंद्रीय संग्राहक में अधिक क्षेत्रफल पर पड़ने वाले सोलर विकिरण को एक बिंदु पर फोकस कर लिया जाता है। जिसकी सहायता से 200 डिग्री सेंटीग्रेड तक का तापमान प्राप्त किया जा सकता है। जबकी केंद्रीय संग्राहक श्रंखला के द्वारा 1000 डिग्री सेंटीग्रेड तक का तापमान प्राप्त किया जा सकता है। रात्रि के समय में जब प्रकाश ऊर्जा से विद्युत उत्पन्न नहीं की जा सकती है तब सौर तापीय ऊर्जा का उपयोग करके टरबाइन इंजन की सहायता से विद्युत का उत्पादन किया जा सकता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा

स्मरणीय समाज सुधारक :

रामकृष्णो दयानन्दो रवीन्द्रो राममोहनः
रामतीर्थोऽरविंदश्च विवेकानन्द उद्यशाः ॥

श्रीमद्भगवतगीता

यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान्।
तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ॥ 1

जैसे आकाश से उत्पन्न सर्वत्र विचरने वाला महान् वायु सदा आकाश में ही स्थित है, वैसे ही मेरे संकल्प द्वारा उत्पन्न होने से संपूर्ण भूत मुझमें स्थित हैं, ऐसा जान ॥

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय।
उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु ॥ 2

हे अर्जुन, उन कर्मों में अनासक्त उदासीन की तरह विद्यमान मुझे वे सब कर्म आबद्ध नहीं कर सकते।

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरं।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते ॥3

हे अर्जुन ! मुझ अधिष्ठाता के सकाश से प्रकृति चराचर सहित सर्वजगत को रचती है और इस हेतु से ही यह संसारचक्र घूम रहा है ॥

अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्।
मंत्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम् ॥ 4

क्रतु मैं हूँ, यज्ञ मैं हूँ, स्वधा मैं हूँ, औषधि मैं हूँ, मंत्र मैं हूँ, घृत मैं हूँ, अग्नि मैं हूँ और हवनरूप क्रिया भी मैं ही हूँ ॥

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः।
वेद्यं पवित्रमोङ्कार ऋक्साम यजुरेव च ॥ 5

इस संपूर्ण जगत् का धाता अर्थात् धारण करने वाला एवं कर्मों के फल को देने वाला, पिता, माता, पितामह, जानने योग्य, पवित्र ओंकार तथा ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद भी मैं ही हूँ ॥

विभीषण-हनुमान भेंट :

रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरष कपिराई॥

वह महल श्री रामजी के आयुध (धनुष-बाण) के चिह्नों से अंकित था, उसकी शोभा वर्णन नहीं की जा सकती। वहाँ नवीन-नवीन तुलसी के वृक्ष-समूहों को देखकर कपिराज श्री हनुमानजी हर्षित हुए॥

राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा॥
एहि सन सठि करिहउँ पहिचानी। साधु ते होइ न कारज हानी॥

उन्होंने (विभीषण ने) राम नाम का स्मरण (उच्चारण) किया। हनुमानजी ने उन्हें सज्जन जाना और हृदय में हर्षित हुए। इनसे हठ करके परिचय करूँगा, क्योंकि साधु से कार्य की हानि नहीं होती।

बिप्र रूप धरि बचन सुनाए। सुनत बिभीषन उठि तहँ आए॥
करि प्रनाम पूँछी कुसलाई। बिप्र कहहु निज कथा बुझाई॥

ब्राह्मण का रूप धरकर हनुमानजी ने उन्हें वचन सुनाए। सुनते ही विभीषण जी उठकर वहाँ आए। प्रणाम करके कुशल पूछी (और कहा कि) हे ब्राह्मणदेव ! अपनी कथा समझाकर कहिए॥

तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम।
सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम॥

तब हनुमानजी ने श्री रामचंद्रजी की सारी कथा कहकर अपना नाम बताया। सुनते ही दोनों के शरीर पुलकित हो गए और श्री रामजी के गुण समूहों का स्मरण करके दोनों के मन (प्रेम और आनंद में) मग्न हो गए॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी॥
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा॥

विभीषण ने कहा, हे पवनपुत्र! मेरी रहनी सुनो। मैं यहाँ वैसे ही रहता हूँ जैसे दाँतों के बीच में बेचारी जीभ। हे तात! मुझे अनाथ जानकर सूर्यकुल के नाथ श्री रामचंद्रजी क्या कभी मुझ पर कृपा करेंगे?॥

जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा। तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा॥
सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती। करहिं सदा सेवक पर प्रीति॥

जब श्री रघुवीर ने कृपा की है, तभी तो आपने मुझे हठ करके (अपनी ओर से) दर्शन दिए हैं। (हनुमानजी ने कहा-)हे विभीषणजी! सुनिए, प्रभु की यही रीति है कि वे सेवक पर सदा ही प्रेम किया करते हैं॥

कहहु कवन मैं परम कुलीना। कपि चंचल सबहीं बिधि हीना॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा। तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा॥

भला कहिए, मैं ही कौन बड़ा कुलीन हूँ? (जाति का) चंचल वानर हूँ और सब प्रकार से नीच हूँ, प्रातःकाल जो हम लोगों (बंदरों) का नाम ले ले तो उस दिन उसे भोजन न मिले॥

अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर।
कीन्हीं कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर॥

हे सखा! सुनिए, मैं ऐसा अधम हूँ, पर श्री रामचंद्रजी ने तो मुझ पर भी कृपा ही की है। भगवान् के गुणों का स्मरण करके हनुमानजी के दोनों नेत्रों में (प्रेमाश्रुओं का) जल भर आया॥

बोध वाक्य: "यह सच है कि पानी में तैरने वाले ही डूबते हैं, किनारे पर खड़े रहनेवाले नहीं, मगर किनारे पर खड़े रहने वाले कभी तैरना भी नहीं सीख पाते।"-सरदार वल्लभभाई पटेल

बोध कथा :

नकल से सफलता नहीं

महापुरुषों का जीवन पढ़कर उनके गुण अपने जीवन में उतारना तो ठीक है, पर यदि उनके रंग-रूपकी नकल करने का प्रयास किया तो प्रायः हंसी ही बनती है। एक बार किसी व्यक्ति ने शिवाजी के विश्वस्त साथी तानाजी मालसुरे की जीवनी पढ़ी। वह उससे बहुत प्रभावित हुआ। उसने विचार किया जिस गांव में मुझे नया काम करना है , यदि वहां मैं तानाजी जैसे कपड़े पहनकर जांऊ, तो लोग शीघ्र आकर्षित होगे और मेरा काम सरल हो जाएगा। उसने वहां खबर भिजवा दी कि कल शाम को मैं तानाजी बनकर गांव में आऊंगा। अगले दिन उसने किराये पर एक घोड़ा सैनिक के कपड़े, पगड़ी, तलवार आदि ली और सजधज कर घोड़े पर बैठकर गांव की ओर चल दिया। गांव दूर था, अतः वहां पहुचनें में तीन-चार घंटे लग गये।

गांव में खबर थी ही, लोग चौपाल पर एकत्र थे। सबने ताली बजा कर उनका स्वागत किया। गांव के मुखिया ने उनके गले में माला डालकर कहा- आइये महाराज उतरिये, मेरे घर चलिये। पर वह नकली तानाजी घोड़ से उतरे कैसे ? उसे घोड़े पर बैठने का अभ्यास तो था नहीं, अतः चार घंटे की सवारी से उसकी टांगे जाम हो गयीं। उन्होंने सीधी होने से मना कर दिया। मुखिया जी समझ गये। उन्होंने कुछ लोगों की सहायता से उन्हें घोड़े से नीचे उतारा। वे जिस स्थिति में घोड़े पर बैठे थे, उसी स्थिति में उतर कर खड़े हो गये। चार कदम चलना भी उनके लिए संभव नहीं था। मुखिया जी ने कई दिन तक उनकी टांगों की सिकाई और मालिश करवायी, तब वे सामान्य स्थिति में आये। स्पष्ट है कि राष्ट्रकार्य काम में महत्व मन की भावना का है, नकल का नहीं।

मासिक गीत /गान :

बढें निरंतर हो निर्भय, गूँजे भारत की जय-जय ॥

याद करें अपना गौरव याद करें अपना वैभव
स्वर्णिम युग को प्रकटाएँगे, मन में धारें दृढ निश्चय ॥

वीरव्रती बनकर हुँकारें,जन-जन का सामर्थ्य बढ़ाएँ।
दशों दिशा से ज्वार उठेगा,चीर चलेंगे घोर प्रलय ॥

कर्म समर्पित हो हर प्राण,यश अपयश पर ना हो ध्यान।
व्यमोही आकर्षण तज दें,आलोकित हो शील विनय ॥

सृजन करें नव शुभ रचनाएँ, सत्य अहिंसा पथ अपनाएँ।
मंगलमय हिंदुत्व सुधा से,छलकाएँगे घट अक्षय ॥

'मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएं वीर अनेक।

----------00----------

जनवरी

पौष- माघ: जब कोई राष्ट्र अपने गौरव में वृद्धि करता है तो वैश्विक दृष्टि से उसकी प्रत्येक विरासत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। जैसे धर्म, संस्कृति, परम्पराएँ, नागरिक दृष्टिकोण, पुरातत्व, चित्रकला और 'भाषा' आदि।'भाषा' ही एक ऐसा माध्यम है जो उक्त सभी विरासतों के भावी संभावनाओं की अभिव्यक्त में महत्त्वपूर्ण कारक बनकर उभरती है। महाकाल की नगरी उज्जैन में जलाधारी महत्वपूर्ण है। इसके पट्ट के अंतिम भाग में 'म द विक्रम देव' और उसके नीचे 'वि क्र म स म त – च और म द भी म दे व अंकित है। ये लेख प्रथम सदी ईस्वी की ब्राह्मी लिपि में है। जलाधारी के अंतिम भाग में श्री मद भी म दे (व) निम्न पट्ट पर 'म वि भि मि क्ष यो भ म म अन्तिम निम्न पट पर विक्रम इ व भी म अंकित मिलता है। जलाधारी पर आठ (अष्टम) और विक्रमस लेख महत्वपूर्ण हैं|

भारतीय दृष्टि को समझने के लिए स्वाभाविक रूप से आवश्यक दिखता है कि 'मातृभाषा' न केवल सशक्त भाषा बनें, बल्कि वैश्विक आकर्षण का केन्द्र भी बनें, क्योंकि आज भारत के अनेक प्रान्तों की 'मातृभाषाएँ ' सशक्त होने के बाद भी राजकाज के काम में जिस तरह से पिछले पचहत्तर वर्षों से 'अंग्रेजी' का दबाव है, वह हमारे भारतीय गणतन्त्र और युवाओं के लिए चिंता का विषय है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम: (i) 10 जनवरी –विश्व हिंदी दिवस। (ii) 12 जनवरी –स्वामी विवेकानंद जयंती (iii) 13 जनवरी 1949 – राकेश शर्मा– भारत के पहले और विश्व के 138 वें अंतरिक्ष यात्री एवं 20 जनवरी 1900 – जनरल के एम करिअप्पा–भारत के पहले सेनाध्यक्ष, फील्ड मार्शल की जन्मतिथि पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।(iv) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे ।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

साइबर सुरक्षा

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई सी टी) के बढ़ते हुए उपयोग ने सरकार के लिए साइबर अटैक की संभावना और उससे होने वाले खतरे की धारणा को बढ़ा दिया है। व्यवहार में अपनाई जाने वाली साइबर सुरक्षा तकनी की कम जानकारी होने के कारण बहुत सारे लोग साइबर क्राइम का शिकार भी बन जाते हैं। साइबर सुरक्षा से बचने के लिए हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना चाहिए।

कितनी सुरक्षित है हमारी डिजिटल संपत्ति:

(1) मैं सुरक्षित हूं क्योंकि मेरे पास इंटरनेट नहीं है - (i) आधार (ii) मोबाईल सिम (iii) UPI (iv) ड्राइविंग लाईसेंस (v) सभी प्रकार के टिकट।

(2) Private Citizen: (i) स्मार्टफोन (ii) डिजिटल उपकरण (iii) वाई- फाई (iv) परिवार के सदस्य (v) सोशल मीडिया और ऑनलाइन एक्सेस।

(3) Your Desk: (i) Network(ii) Work PC (iii) Digital Assets (iv) Your Soft Assets (v) Your Portal

(4) पहचान की चोरी: (i) शर्म / प्रतिष्ठा की हानि (ii) वित्तीय नुकसान (iii) फिरौती का भुगतान (iv) डिजिटल संपत्ति पर नियंत्रण का नुकसान।

(5) Hackers -ब्लैक हैट: (i) क्रिमिनल हैकर्स (ii) व्हाइट हैट: अधिकृत हैकर्स (iii) ग्रे हैट: "जस्ट फॉर फन" हैकर्स (iv) स्क्रिप्ट किडीज: हॉबी हैकर्स (v) ग्रीन हैट: हैकर्स-इन-ट्रेनिंग (vi) ब्लू हैट हैकर्स (vii) रेड हैट : सरकार द्वारा नियुक्त हैकर्स (viii) राज्य/राष्ट्र प्रायोजित हैकर्स: अंतर्राष्ट्रीय ख़तरा निवारण: (ix) द्वेषपूर्ण अंदरूनी सूत्र: व्हिसलब्लोअर हैकर्स (x) हैकटीविस्ट: राजनीतिक रूप से प्रेरित हैकर्स (xi) एलीट हैकर्स: सबसे उन्नत हैकर्स (xii) क्रिप्टोजैकर्स: क्रिप्टोकुरेंसी माइनिंग हैकर्स (xiii) गेमिंग हैकर्स (xiv) बॉटनेट: बड़े पैमाने पर हैकर्स।

(6) जब तक सिद्ध न हो तब तक किसी पर विश्वास न करें- (i) डिजिटल संपत्ति को मुद्रा के समान सुरक्षित रखें (ii) सुरक्षित पासवर्ड बनाएं (iii) केवल लाइसेंस सॉफ़्टवेयर का उपयोग करें (iv) सॉफ्टवेयर को समय समय पर अपडेट करें (v) गुणवत्ता वाले मोबाइल फ़ोन का उपयोग करें और सपोर्ट बंद होने पर बदल दें।

साइबर सुरक्षा के लिए क्या करें

1. बड़े - छोटे अक्षरों , संख्याओं और विशेष वर्णों के संयोजन से आठ वर्णों के जटिल पास वर्ड का उपयोग करें।
2. बहु-कारक प्रमाणीकरण का उपयोग करें (जैसे पासवर्ड और मोबाईल पर ओटीपी)।
3. अपने डेटा और फाइलों को कम्प्यूटर के सेकेंडरी ड्राइव पर सेव करें।
4. अपने महत्वपूर्ण डेटा का ऑफलाइन बैकअप बनाए रखें।
5. अपने ऑपरेटिव सिस्टम को नवीनतम अपडेट रखें।
6. अपने आधिकारिक डेस्कटॉप/ लैपटॉप पर प्रस्तावित इन्टरप्राइज एंटी वायरस क्लाइंट इंस्टाल करें।
7. ऑफिस छोड़ते समय सुनिश्चित करें कि आपका कम्प्यूटर बंद है।
8. मोबाइल फोन पर जीपीएस, ब्लुटुथ, एनएफसी तथा सेंसर बंद करके रखें।
9. गूगल और एप्पल के आधिकारिक स्टोर से ही कोई एप डाउनलोड करें।
10. संदेहास्पद मेल या किसी भी सुरक्षा घटना की सूचना incident@cert-in.org.in और incident@nic-cert.nic.in पर करें।

साइबर सुरक्षा क्या न करें

1. एक से अधिक सेवाओं वेबसाइट में एक ही पासवर्ड का उपयोग न करें।
2. अपने पासवर्ड को ब्राउजर में या किसी असुरक्षित दस्तावेज में न रखें।
3. पुराने असुरक्षित सिस्टम का उपयोग न करें।
4. किसी भी पायरेटेड सॉफ्टवेयर का उपयोग न करें।
5. अपने डेटा और फाइलों को सिस्टम पर सेव न करें।
6. प्रिंटर को इंटरनेट एक्सेस की अनुमति न दें।
7. किसी अज्ञात व्यक्ति को साझा की गई यूएसबी ड्राइव सहित किसी भी अनाधिकृत बाहरी डिवाइस को प्लगइन करें।
8. आधकारिक संचार के लिए किसी बाहरी ई-मेल का उपयोग न करें।

भारतीय ज्ञान परम्परा :

स्मरणीय समाज सुधारक :

दादाभाई गोपबन्धुः तिलको गान्धिरादृताः
रमणो मालवीयश्च श्रीसुब्रह्मण्यभारती॥

श्रीमद्भगवतगीता

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः॥ 1

यदि भक्त एक पत्ता, फूल, फल, जल और कुछ भी निष्काम भक्तिभाव से अर्पित करता- है, उस शुद्धभक्त का निष्काम भक्ति--भाव से अर्पित किया हुआ सभी कुछ मैं स्वीकार करता हूँ।

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।

मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायण॥ 2

हे अर्जुन तू मुझमें ही मन को स्थिर कर !, मेरा ही भक्त बन, मेरी ही पूजा कर और मुझे ही प्रणाम कर, इस प्रकार अपने मन को मुझ परमात्मा में पूर्ण रूप से स्थिर करके मेरी शरण होकर तू निश्चित रूप से मुझे ही प्राप्त होगा।

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्।

असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ 3

जो मुझको अजन्मा अर्थात् वास्तव में जन्मरहित, अनादि और लोकों का महान् ईश्वर तत्त्व से जानता है, वह मनुष्यों में ज्ञानवान् पुरुष संपूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है॥

बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः।

सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च॥

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः।

भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः॥ 4

निश्चय करने की शक्ति, यथार्थ ज्ञान, असम्मूढ़ता, क्षमा, सत्य, इंद्रियों का वश में करना, मन का निग्रह तथा सुखदुःख-, उत्पत्ति-प्रलय और भय-अभय तथा अहिंस समता, संतोष तप, दान, कीर्ति और अपकीर्ति ऐसे ये प्राणियों के नाना प्रकार के भाव मुझसे ही होते - हैं॥

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा।

मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः॥ 5

सात महर्षिजन, चार उनसे भी पूर्व में होने वाले सनकादि तथा स्वयंभू आदि चौदह मनु ये मुझमें भाव वाले सब के-सब मेरे सकल्प से-

रामचरितमानस

श्री सीता-हनुमान् संवाद

कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब।

जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ॥

तब हनुमानजी ने हदय में विचार कर (सीताजी के सामने) अँगूठी डाल दी, मानो अशोक ने अंगारा दे दिया। (यह समझकर) सीताजी ने हर्षित होकर उठकर उसे हाथ में ले लिया॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुंदर॥

चकित चितव मुदरी पहिचानी। हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी॥

तब उन्होंने राम-नाम से अंकित अत्यंत सुंदर एवं मनोहर अँगूठी देखी। अँगूठी को पहचानकर सीताजी आश्चर्यचकित होकर उसे देखने लगीं और हर्ष तथा विषाद से हृदय में अकुला उठीं॥

रामचंद्र गुन बरनैं लागा। सुनतहिं सीता कर दुख भागा॥

लागीं सुनैं श्रवन मन लाई। आदिहु तें सब कथा सुनाई॥

वे श्री रामचंद्रजी के गुणों का वर्णन करने लगे, (जिनके) सुनते ही सीताजी का दुःख भाग गया। वे कान और मन लगाकर उन्हें सुनने लगीं। हनुमानजी ने आदि से लेकर अब तक की सारी कथा कह सुनाई॥

श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई। कही सो प्रगट होति किन भाई॥

तब हनुमंत निकट चलि गयऊ। फिरि बैठीं मन बिसमय भयऊ॥

(सीताजी बोलीं-) जिसने कानों के लिए अमृत रूप यह सुंदर कथा कही, वह हे भाई! प्रकट क्यों नहीं होता? तब हनुमान जी पास चले गए। उन्हें देखकर सीताजी फिरकर (मुख फेरकर) बैठ गईं? उनके मन में आश्चर्य हुआ॥

राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुनानिधान की॥

यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी॥

नर बानरहि संग कहु कैसें। कही कथा भइ संगति जैसें॥

(हनुमानजी ने कहा-) हे माता जानकी मैं श्री रामजी का दूत हूँ। करुणानिधान की सच्ची शपथ करता हूँ, हे माता! यह अँगूठी मैं ही लाया हूँ। श्री रामजी ने मुझे आपके लिए यह सहिदानी (निशानी या पहिचान) दी है॥ सीताजी ने पूछा, नर और वानर का संग कहो कैसे हुआ? तब हनुमानजी ने जैसे संग हुआ था, वह सब कथा कही॥

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी॥

बूड़त बिरह जलधि हनुमाना। भयहु तात मो कहुँ जलजाना॥

भगवान का जन (सेवक) जानकर अत्यंत गाढ़ी प्रीति हो गई। नेत्रों में (प्रेमाश्रुओं का) जल भर आया और शरीर अत्यंत पुलकित हो गया। सीताजी ने कहा, हे तात हनुमान्! विरहसागर में डूबती हुई मुझको तुम जहाज हुए॥

देखि परम बिरहाकुल सीता। बोला कपि मृदु बचन बिनीता॥

रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर।

अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर॥

सीताजी को विरह से परम व्याकुल देखकर हनुमानजी कोमल और विनीत वचन बोले, हे माता! अब धीरज धरकर श्री रघुनाथजी का संदेश सुनिए। ऐसा कहकर हनुमानजी प्रेम से गद्गद हो गए। उनके नेत्रों में जल भर आया॥

कहेउ राम बियोग तव सीता। मो कहुँ सकल भए बिपरीता॥

नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू। कालनिसा सम निसि ससि भानू॥

हनुमानजी बोले, श्री रामचंद्रजी ने कहा है कि हे सीते! तुम्हारे वियोग में मेरे लिए सभी पदार्थ प्रतिकूल हो गए हैं। वृक्षों के नए-नए कोमल पत्ते मानो अग्नि के समान, रात्रि कालरात्रि के समान, चंद्रमा सूर्य के समान॥

कहेहू तें कछु दुख घटि होई। काहि कहौं यह जान न कोई॥

तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा॥

मन का दुःख कह डालने से भी कुछ घट जाता है। पर कहूँ किससे? यह दुःख कोई जानता नहीं। हे प्रिये! मेरे और तेरे प्रेम का तत्त्व (रहस्य) एक मेरा मन ही जानता है॥

सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं॥

प्रभु संदेसु सुनत बैदेही। मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही॥

और वह मन सदा तेरे ही पास रहता है। बस, मेरे प्रेम का सार इतने में ही समझ ले। प्रभु का संदेश सुनते ही जानकी जी प्रेम में मग्न हो गईं। उन्हें शरीर की सुध न रही॥

जौं रघुबीर होति सुधि पाई। करते नहिं बिलंबु रघुराई॥

श्री रामचंद्रजी ने यदि खबर पाई होती तो वे बिलंब न करते।

निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं। तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं॥

हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना। जातुधान अति भट बलवाना॥

और राक्षसों को मारकर आपको ले जाएँगे। नारद आदि (ऋषि-मुनि) तीनों लोकों में उनका यश गाएँगे। (सीताजी ने कहा-) हे पुत्र! सब वानर तुम्हारे ही समान होंगे, राक्षस तो बड़े बलवान, योद्धा हैं॥

बोध वाक्य: "अंग्रेज़ी माध्यम भारतीय शिक्षा में सबसे बड़ा विघ्न है। सभ्य संसार के किसी भी जनसमुदाय की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है।"-महामना मदनमोहन मालवीय

बोध कथा:

लगातार काम करने से लाभ

कुछ लोग स्थिर होकर किसी काम को नहीं करते, इसलिए उन्हें कभी सफलता भी नहीं मिलती। जबकि सफलता के लिए लगातार काम करना जरूरी है। अक्सर देखने में आता है कि कुछ छात्र परीक्षा के समय ही अपनी पढ़ाई पर ध्यान देते है एक छात्र भी ऐसा ही था कि परीक्षा का समय निकट था पर उसने साल-भर कुछ खास पढ़ाई नहीं की थी। उसने संन्यासी जी को देखकर सोचा कि ये दाढ़ी वाले सज्जन आवश्य कोई सिद्ध संन्यासी होंगे। ये शायद कोई उपाये बता दें। वह संन्यासी जी के पास आया और बोला-मुझे किसी काम में सफलता नहीं मिलती,क्या आप कोई उपाय बता सकते हैं ?

संन्यासी ने मन की एकाग्रता के लिए आसन-प्राणायाम जैसी कुछ विधियां बतायी। उसने पूछा-इन्हें कितने दिन तक करना होगा? संन्यासी जी ने कहा-यदि लाभ हो तो फिर सदा ही करते रहो। इस पर उसका मुंह लटक गया। बोला-यह तो बहुत कठिन है। मैं किसी काम को लगातार नहीं कर सकता। संन्यासी जी ने हंसकर कहा-तो फिर सफलता की आशा मत करो। सफलता के लिए लगातार काम करना जरूरी है।

मासिक गीत /गान :

वह जीवन भी क्या जीवन है, जो काम देश के आ ना सका
वह चंदन भी क्या चंदन है, जो अपना वन महका ना सका॥

जिसकी धरती पर जन्म लिया, जिसके समीर से साँस चली
जिसके अमृत से प्यास बुझी, जिसकी माटी में देह पली
वह क्या सपूत जो जन्मभूमि के, प्रति कर्तव्य निभा ना सका

मुनिवर दधीचि हो गए अमर, जिनकी हड्डियों से वज्र बना
संकट समाज का दूर किया, देकर पावन शरीर अपना
वह मानव क्या समाज हित में, जो प्राण प्रसून चढ़ा ना सका

ऐसे महान चाणक्य जिन्होंने, चंद्रगुप्त का सृजन किया
अन्यायी राजा को रौंदा , यूनानी शत्रु दमन किया
वह नाविक क्या जो तूफ़ानों में, नौका पार लगा ना सका

राणा का जीवन जीवन था, जिसने महलों को छोड़ दिया
रोटियाँ घाँस की खाकर वन में, आज़ादी का संघर्ष किया

वह देश प्रेम क्या देश प्रेम, जो कंटक पथ अपना ना सका

राणा के पास नहीं पैसा, पैसे के बिना नहीं सेना
तब भामाशाह बढ़ा आगे, लेकर रुपया पैसा गहना
वह धन क्या अवसर आने पर जो, त्याग भाव दिखला ना सका

----------00----------

फरवरी

माघ –फाल्गुन : भर्तुहरि गुफा का उज्जैन में प्रथम सदी ईस्वी का शिवलिंग जिस पर प्रथम सदी ईस्वी की ब्राह्मी लिपि में श्री मद भीम कद एवं महिदेव अक्षर उत्कीर्ण हैं। किन्तु प्राचीन लिपि का ज्ञान न होने के कारण आज सामान्य जन ही नहीं तो पढ़ा लिखा व्यक्ति भी अपनी परम्परा की बात को नहीं समझ सकता है । संस्कृति और शिक्षा, दोनों ही घटक एक-दूसरे के पूरक हैं, जिनकी सम्बद्धता मूलतः तीन स्तरों पर है - प्रथम, शिक्षा संस्कृति की वाहक है अर्थात् शिक्षा के माध्यम से ही संस्कृति का हस्तांतरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के लिए संभव हो पाता है। द्वितीय, शिक्षा संस्कृति की प्रसारक है अर्थात् शिक्षा के द्वारा ही संस्कृति का विस्तार एवं प्रसार समाज के सदस्यों में हो पाता है। तृतीय, शिक्षा संस्कृति की निर्धारक है। यही सांस्कृतिक परिवर्तनों आदि की दृष्टि से महत्ती भूमिका निभाती है। संस्कृति किसी भी मानव जाति के इतिहास का विशुद्ध सार है। यह उन नीतियों और परम्पराओं से मिलकर बनती है, जिनमें उस जाति के दीर्घ समय के अनुभवों का परिणाम निहित होता है।

वसंत पंचमी का विशेष महत्व हैं। यह ज्ञान और वाणी की देवी सरस्वती की पूजा का पवित्र पर्व माना गया है। विद्यर्थियों को इस दिन से बोलना या लिखना सिखाना शुभ माना गया है। संगीतकार इस दिन अपने वाद्य यंत्रों की पूजा करते हैं। ऐसी मान्यता है कि इसी दिन विद्या और बुद्धि की देवी मां सरस्वती अपने हाथों में वीणा, पुस्तक व माला लिए अवतरित हुई थीं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में इस दिन लोग विद्या, बुद्धि और वाणी की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की पूजा-आराधना करके अपने जीवन से अज्ञानता के अंधकार को दूर करने की कामना करते हैं। महाप्राण निराला तो वसंत पंचमी को अपना जन्म दिन ही मानते थे।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम: (i) 10 बसंत पंचमी , (ii)12 नर्मदा जयंती, (iii) 12 फरवरी,1708 को छत्रपति शाहू जी को मराठा शासक का ताज पहनाया गया (iv) 13 फरवरी 1879, सरोजिनी नायडू (v)18 फरवरी 1836 स्वामी रामकृष्ण परमहंस की जन्मतिथि (vi) 17 श्री गोरखनाथ जयंती (vii) 17 विश्वकर्मा जयंती (viii) 18 फरवरी चैतन्य महाप्रभु (ix) माघी पूर्णिमा संत रविदास जी जयंती (x) 27 चंद्रशेखर आजाद जयंती, (xi) 28 स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती, (xii) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे ।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

भारत में ड्रोन तकनीक क्या है

“ड्रोन तकनीक रोज़गार देने वाली है, 2030 तक भारत 'ड्रोन हब' बन जाएगा” : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

भारत ड्रोन महोत्सव 2022' का उद्घाटन करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि ड्रोन तकनीक को लेकर भारत में जो उत्साह देखने को मिल रहा है, वह अद्भुत है। जो ऊर्जा नज़र आ रही है, वह भारत में ड्रोन सर्विस और ड्रोन आधारित इंडस्ट्री की लंबी छलांग का प्रतिबिंब है। यह भारत में रोजगार के एक उभरते हुए बड़े सेक्टर की संभावनाएं दिखाती हैं। पीएम मोदी ने खेती के दौरान ड्रोन का क्या

महत्व है, इस पर भी बात की और कहा कि ड्रोन टेक्नोलॉजी कैसे एक बड़ी क्रांति का आधार बन रही है। इसका एक उदाहरण पीएम स्वामित्व योजना भी है। इस योजना के तहत पहली बार देश के गांवों की हर प्रॉपर्टी की डिजिटल मैपिंग की जा रही है। डिजिटल प्रॉपर्टी कार्ड लोगों को दिए जा रहे हैं

ड्रोन क्या हैं ?- **(i)** आमतौर पर ड्रोन एक मानव रहित विमान (UA) के लिये प्रयुक्त होता है। **(ii)** ड्रोन मूल रूप से सैन्य और एयरोस्पेस उद्योगों के लिये विकसित किया गया था, किंतु सुरक्षा और दक्षता के उन्नत स्तरों के कारण इसने मुख्यधारा में भी अपनी जगह बना ली। **(iii)** एक ड्रोन दूर से संचालित (मानव इसके परिचालन को नियंत्रित करता है) होने के साथ-साथ उन्नत स्तर पर पूरी तरह से स्वचालित भी हो सकता है, जिसका अर्थ है कि यह अपने परिचालन एवं गणना करने के लिये सेंसर तथा LiDAR डिटेक्टरों की प्रणाली पर निर्भर करता है।

ड्रोन तकनीक कितनी महत्त्वपूर्ण है ? - वर्तमान समय में ड्रोन राष्ट्रों को अधिक किफायती और व्यावसायिक व्यवहार्यता प्रदान कर रहे हैं और कम लागत पर इन ड्रोनों की आसान उपलब्धता उद्योग के लिये बहुत उपयोगी साबित हो रही है।

ड्रोन तकनीक का उपयोग निम्नलिखित क्षेत्रों में किया जाता है : (i) रक्षा: ड्रोन सिस्टम को आतंकवादी हमलों के खिलाफ एक सिमेट्रिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। साथ ही ड्रोन को राष्ट्रीय हवाई प्रणाली में एकीकृत किया जा सकता है। **(ii) हेल्थकेयर डिलीवरी :** हाल ही में नागरिक उड्डयन मंत्रालय तेलंगाना सरकार के साथ दूर -दराज के क्षेत्रों में टीके पहुंचाने के लिए ड्रोन तकनीक का उपयोग करने के लिये एक परियोजना को मंज़ूरी दी है। **(iii) कृषि:** कृषि क्षेत्र में सूक्ष्म पोषक तत्त्वों और कीटनाशकों का छिड़काव ड्रोन की मदद से किया जा सकता है।किसान कल्याण मंत्रालय ने कृषि में ड्रोन के उपयोग के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (एस ओ पी) जरी की है। **(iv) निगरानी :** भारत सरकार द्वारा शुरू की गई SVAMITVA योजना में ड्रोन तकनीक का उपयोग संपत्ति और ट्रांसमिशन लाइनों की वास्तविक समय की निगरानी, चोरी की रोकथाम, दृश्य निरीक्षण/रखरखाव, निर्माण योजना और प्रबंधन आदि के लिये किया गया था। **(v) खनन:** ड्रोन का उपयोग औद्योगिक प्रतिष्ठानों की कठिन परिस्थितियों में निगरानी हेतु किया जाता है, जहाँ ज़हरीली गैसें, उच्च तापमान या उच्च दबाव की स्थिति हो सकती है एवं जहाँ मनुष्यों तक पहुँचना असुविधाजनक होता है।

काउंटर ड्रोन तकनीक क्या है ? - (i) काउंटर ड्रोन तकनीक उन प्रणालियों को संदर्भित करती है जिनका उपयोग उड़ान के दौरान मानव रहित विमान प्रणालियों का पता लगाने या अवरोधन के लिये किया जाता है। **(ii)** यह प्रौद्योगिकी तेज़ी से उभर रही है और विकसित हो रही है क्योंकि ड्रोन को बड़े पैमाने पर अपनाया जा रहा है। **(iii)** इस तकनीक में वृद्धि को नागरिक और सैन्य क्षेत्र में ड्रोन से उत्पन्न खतरे से जोड़ कर देखा जा सकता है। **(iv)** कई देश इन तकनीकों को विकसित करने हेतु निवेश कर रहे हैं जैसे, US DOD (संयुक्त राज्य रक्षा विभाग) ने रिसर्च एवं डेवलपमेंट के लिये लगभग 404 मिलियन डॉलर और ग्राउंड-आधारित ड्रोन एवं काउंटर ड्रोन सिस्टम की खरीद के लिये 83 मिलियन डॉलर राशि निर्धारित की है। **(v)** साथ ही US हवाई प्रणाली के लिये एक काउंटर ड्रोन प्रणाली विकसित करने के लिये लगभग 85 मिलियन डॉलर खर्च कर रहा है। **(vi)** जहाँ तक भारत का संबंध है, इसने उद्योग द्वारा सॉफ्ट किल काउंटर-ड्रोन सिस्टम और डीआरडीओ द्वारा सॉफ्ट एंड हार्ड किल सिस्टम विकसित किया है।**(vii)** ड्रोन हमलों के खिलाफ सॉफ्ट किल उपायों में ड्रोन के संचार को बाधित करने के लिये जैमर (Jammer) का उपयोग करना या जीपीएस सिग्नल को बाधित करना शामिल है। **(viii)** काइनेटिक या हार्ड-किल उपायों में ड्रोन तंत्र को बाधित करने के लिये गोलियों या बंदूकों का उपयोग भी शामिल है।

ड्रोन टेक्नोलॉजी से जुड़े सुरक्षा जोखिम क्या हैं ? - (i) पिछले कुछ वर्षों में दुनिया के विभिन्न हिस्सों में आतंकवादियों द्वारा योजनाबद्ध हमलों के प्रयास के लिये ड्रोन के इस्तेमाल के कई मामले सामने आए हैं। **(ii)** भारत ने हाल के वर्षों में अपनी पश्चिमी सीमा पर पाकिस्तान द्वारा ड्रोन से हथियार, गोला-बारूद और ड्रग्स गिराने जैसी गतिविधियाँ भी देखी है। **(iii)** जून 2021 में जम्मू में वायु सेना स्टेशन के तकनीकी क्षेत्र के अंदर विस्फोटों को ट्रिगर करने वाले उपकरणों को गिराने के लिये पहली बार ड्रोन का उपयोग किया गया था। **(iv)** ड्रोन की सस्ती कीमत एक बड़ी आबादी को ड्रोन खरीदने में सक्षम बनाती है। पारंपरिक हथियारों की तुलना में ड्रोन

अपेक्षाकृत सस्ते होते हैं लेकिन इनका प्रभाव अधिक विनाशकारी होता हैं। यह ड्रोन हमलों की संख्या बढ़ने का प्राथमिक कारण है। **(v)** जो बात लड़ाकू ड्रोन को सबसे खतरनाक बनाती है वह है सामूहिक विनाश के हथियारों को पहुँचाने के लिये उनके इस्तेमाल का खतरा। गैर-राज्य तत्त्वों द्वारा लड़ाकू ड्रोन की खरीद गंभीर खतरे पैदा करती है।

सीमा पार से हमलों का मुकाबला : **(i)** ड्रोन के माध्यम से सीमा पार से हमले भारत के लिये एक बड़ा खतरा है। ऐसे ड्रोन हमलों का मुकाबला तकनीक की मदद से ही किया जा सकता है। **(ii)**ड्रोन और एंटी-ड्रोन दोनों ही ऐसी विकसित प्रौद्योगिकियाँ हैं जिनमें भारत को तेज़ी से आगे बढ़ना है। यह वह क्षेत्र है जहाँ सरकार को ड्रोन रोधी तकनीक पर हितधारकों का ध्यान केंद्रित करने के लिये एक बजट लाने की आवश्यकता होगी। **(iii)** साथ ही भारत के दो करीबी सहयोगी अमेरिका और इज़रायल ड्रोन के दो प्रमुख उत्पादक हैं। **(iv)** सैन्य ड्रोन प्राप्त करने और ड्रोन के निर्माण करने में उनकी सहायता प्राप्त करने के लिये द्विपक्षीय संबंधों का लाभ उठाया जा सकता है। **(v)** सरकार के प्रोत्साहन से ड्रोन प्रौद्योगिकी के विकास में तेज़ी आएगी।

तात्कालिक तौर पर फोकस के क्षेत्र: **(i)** पूरे भारत में ड्रोन हमले के खिलाफ रक्षा आवश्यक है लेकिन वर्तमान में यह संभव नहीं दिख रहा है। **(ii)** रक्षा क्षेत्र का यह एक नया पहलू है जिसका मुकाबला करने में समय लगेगा, इसलिये सरकार द्वारा तात्कालिक तौर पर क्या किया जा सकता है यह तय करना आवश्यक है। इसके अंतर्गत कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों की पहचान करना, उनमें निवेश करना, ड्रोन सुरक्षा के मामले से जुड़े सभी बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करना तथा उन क्षेत्रों में जागरूकता पैदा करना शामिल होना चाहिये। **(iii)** ये क्षेत्र हवाई अड्डे, शहरों में वीआईपी क्षेत्र आदि हो सकते हैं।

काउंटर-ड्रोन टेक्नोलॉजी : **(i)** खतरा ड्रोन की वजह से नहीं बल्कि असामाजिक तत्त्वों की वजह से होता है। निस्संदेह ऐसे हमले जिसमें ड्रोन का उपयोग किया जाता है की संभावना रहती है लेकिन समग्र रूप से ड्रोन का उपयोग बंद करना इसका समाधान नहीं है। इस समस्या का समाधान काउंटर ड्रोन तकनीक के विकास में है। **(ii)** भारत को अपने स्वयं के मानव रहित हवाई वाहन (UAV) सिस्टम और काउंटर-ड्रोन तकनीक में निवेश करने कीआवश्यकता है ताकि खतरों का पता लगाया जा सके और उन पर नज़र रखी जा सके, विशेष रूप से राष्ट्र की महत्त्वपूर्ण संपत्तियों की। **(iii)** DRDO ने एक एंटी-ड्रोन सिस्टम के विकास का कार्य शुरू कर दिया है, ऐसी एक प्रणाली पहले से ही मौजूद है।

निष्कर्ष : ड्रोन तकनीक एक विकसित चरण में है जहाँ बहुत सारे विकास किये जा रहे हैं। जहाँ तक भारत का संबंध है इन वैश्विक विकासों के साथ-साथ उन तरीकों और साधनों को देखने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिये, जिनमें सुरक्षा खतरे के पहलु से निपटने के लिये ड्रोन के हानिकारक उपयोग को भी रोका जा सकता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा :

क्रांतिवीर समाज सुधारक :

सुभाषः प्रणवानन्दः क्रान्तिवीरो विनायकः
ठक्करो भीमरावश्च फुले नारायणो गुरुः ॥

श्रीमद्भागवत गीता

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम्॥
आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥1

अर्जुन बोले- आप परम ब्रह्म, परम धाम और परम पवित्र हैं, क्योंकि आपको सब ऋषिगण सनातन, दिव्य पुरुष एवं देवों का भी आदिदेव, अजन्मा और सर्वव्यापी कहते हैं। वैसे ही देवर्षि नारद तथा असित और देवल ऋषि तथा महर्षि व्यास भी कहते हैं और आप भी मेरे प्रति कहते हैं॥

सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव।

न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः॥ 2

हे केशव! जो कुछ भी मेरे प्रति आप कहते हैं, इस सबको मैं सत्य मानता हूँ। हे भगवन् आपके लीलामय स्वरूप को न तो ! दानव जानते हैं और न देवता ही॥

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम।

भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते॥ 3

हे भूतों को उत्पन्न करने वाले! हे भूतों के ईश्वर हे देवों के देव! हे जगत् के स्वामी! हे पुरुषोत्तम! आप स्वयं ही अपने से अपने ! को जानते हैं॥

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः।

अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च॥ 4

हे अर्जुन! मैं सब भूतों के हृदय में स्थित सबका आत्मा हूँ तथा संपूर्ण भूतों का आदि, मध्य और अंत भी मैं ही हूँ॥

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान्।

मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी॥5

मैं अदिति के बारह पुत्रों में विष्णु और ज्योतियों में किरणों वाला सूर्य हूँ तथा मैं उनचास वायुदेवताओं का तेज और नक्षत्रों का अधिपति चंद्रमा हूँ॥

वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः।

इंद्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना॥

मैं वेदों में सामवेद हूँ, देवों में इंद्र हूँ, इंद्रियों में मन हूँ और भूत प्राणियों की चेतना अर्थात् जीवनशक्ति हूँ-॥

रामचरितमानस

हनुमान को आशीर्वाद :

मन संतोष सुनत कपि बानी। भगति प्रताप तेज बल सानी॥

आसिष दीन्हि राम प्रिय जाना। होहु तात बल सील निधाना॥

भक्ति, प्रताप, तेज और बल से सनी हुई हनुमान जी की वाणी सुनकर सीताजी के मन में संतोष हुआ। उन्होंने श्री रामजी के प्रिय जानकर हनुमान जी को आशीर्वाद दिया कि हे तात ! तुम बल और शील के निधान होओ॥

अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू॥

करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना॥

हे पुत्र! तुम अजर, अमर और गुणों के खजाने होओ। श्री रघुनाथजी तुम पर बहुत कृपा करें। 'प्रभु कृपा करें' ऐसा कानों से सुनते ही हनुमानजी पूर्ण प्रेम में मग्न हो गए॥

सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देखि सुंदर फल रूखा॥

सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी। परम सुभट रजनीचर भारी॥

तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं। जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं॥

हे माता ! सुनो, सुंदर फल वाले वृक्षों को देखकर मुझे बड़ी ही भूख लग आई है। सीताजी ने कहा, हे बेटा ! सुनो, बड़े भारी योद्धा राक्षस इस वन की रखवाली करते हैं॥ हनुमानजी ने कहा, हे माता ! यदि आप सुखी मन से आज्ञा दें तो मुझे उनका भय तो बिलकुल नहीं है॥

हनुमान्-रावण संवाद:

कह लंकेस कवन तैं कीसा। केहि कें बल घालेहि बन खीसा॥
की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही। देखउँ अति असंक सठ तोही॥

लंकापति रावण ने कहा- रे वानर! तू कौन है ? किसके बल पर तूने वन को उजाड़कर नष्ट कर डाला ? क्या तूने कभी मुझे कानों से नहीं सुना ? रे शठ ! मैं तुझे अत्यंत निःशंख देख रहा हूँ॥

जाकें बल बिरंचि हरि ईसा। पालत सृजत हरत दससीसा॥
जा बल सीस धरत सहसानन। अंडकोस समेत गिरि कानन॥

जिनके बल से हे दशशीश! ब्रह्मा, विष्णु, महेश (क्रमशः) सृष्टि का सृजन, पालन और संहार करते हैं, जिनके बल से सहस्रमुख (फणों) वाले शेषजी पर्वत और वनसहित समस्त ब्रह्मांड को सिर पर धारण करते हैं॥

जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि।
तास दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि॥

जिनके लेशमात्र बल से तुमने समस्त चराचर जगत् को जीत लिया और जिनकी प्रिय पत्नी को तुम (चोरी से) हर लाए हो, मैं उन्हीं का दूत हूँ॥

बोध वाक्य : "अहम की मृत्यु द्वारा आत्मा का वर्जन करते करते अपने रूपतित स्वरूप को आत्मा प्रकाशित करता है।"

- रवीन्द्रनाथ टैगोर

बोध कथा : **श्रीकृष्ण का आत्मविश्वास**

यदि मन में आत्मविश्वास हो,तो अधिकांश बाधाएं काम प्रारम्भ करने से पूर्व ही दम तोड़ देती हैं। जब पांडवों ने अपना बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास सफलतापूर्वक पूरा कर लिया, तो उन्होंने कौरवों से अपना राज्य वापस मांगा, पर कौरवों ने उन्हें राज्य नहीं दिया। पांडवों ने अनेक तरह से उन्हें समझाने का प्रयासः किया, पर वे नहीं माने। अतंतः युद्ध करने का ही निश्चय हुआ।

युद्ध से पूर्व अंतिम प्रयास के रूप में पांडवों की ओर से श्रीकृष्ण ने एक फिर कौरवों के पास जाने की इच्छा व्यक्त की। युद्धिष्ठिर के मन में भय जाग गया। वे बोले- हे कृष्ण! आप तो हमारे सबसे बड़े हितैषी और मित्र हैं। आपके बल पर ही हम यह युद्ध मोल ले रहे हैं। यदि दुर्योधन ने आपको बंदी बना लिया या मार डाला, तो हमारा क्या होगा ? श्रीकृष्ण हंसकर बोले- यदि ऐसा हुआ, तो फिर तुम्हें युद्ध करने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। मैं अकेला ही उसके सारे भाइयों और सेना को पराजित कर दूंगा। हमारे मन में भी ऐसा ही प्रबल आत्मविश्वास होना चाहिए।

मासिक गीत / गान :

सखि, वसंत आया।
भरा हर्ष वन के मन, नवोत्कर्ष छाया।
किसलय-वसना नव-वय-लतिका
मिली मधुर प्रिय-उर तरु-पतिका,
मधुप-वृंद बंदी-पिक-स्वर नभ सरसाया।

लता-मुकुल-हार-गंध-भार भर
बही पवन बंद मंद मंदतर,
जागी नयनों में वन-यौवन की माया।
आवृत सरसी-उर-सरसिज उठे,
केशर के केश कली के छुटे,
स्वर्ण-शस्य-अंचल पृथ्वी का लहराया।

तुलसी मीठे बचन ते सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरण इक मंत्र है परिहरु बचन कठोर।।

तुलसीदासजी कहते हैं कि मीठे वचन सब ओर सुख फैलाते हैं।किसी को भी वश में करने का ये एक मन्त्र होते हैं इसलिए मानव को चाहिए कि कठोर वचन छोडकर मीठा बोलने का प्रयास करे।

----------00----------

मार्च

फाल्गुन-चैत्र: उज्जैन महाकाल में वर्त्ताकर मुद्रा और उस पर लेख उत्कीर्ण हैं, मुद्रांक पर ब्राह्मी लिपि में वर्त्ताकर लेख 'क त स विक्रम में रुद्रस म ह व' अंकित हैं। मध्य में दाहिने और मुहँ किये आराम की मुद्रा में नंदी आसीन है। वैदिक ऋषियों ने कहा है - सत्य का, चित का और आनंद का धर्म ही भारतीय संस्कृति का सुधर्म है। वर्तमान में वैचारिक दृष्टि में राष्ट्र में ही नहीं तो विश्व में भी अनेक आसुरी शक्तियां दिखाई देती है, जो भारतीय ज्ञान परम्परा के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तित्व निर्माण में बाधक और अवरोधक तत्व के रूप में सामने आती है। ऐसे में सर्वप्रथम हमें विद्यार्थियों को भावनात्मक दृष्टि से शिक्षित करने और ज्ञान और विज्ञानमय बनाने की महती आवश्यकता है। भारत की संपूर्ण परंपरा- ज्ञान परंपरा, ऋषि परंपरा, साधना परंपरा, सिद्ध परंपरा और गुरु-शिष्य परंपरा रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 व्यास, बाल्मीक, बुद्ध, शंकर, विवेकानंद आदि की संपूर्ण तेज परंपरा, प्रकाश परंपरा, अध्यात्म परंपरा, शौर्य परंपरा के बोध को समाज में यथाशक्ति फैलाने को प्रेरित करती है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम: (i) 03 मार्च, 1839 जमशेद जी टाटा ,टाटा समूह के संस्थापक (ii) 08 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, (iii) 08 राम कृष्ण परमहंस जयंती, (iv) डॉ. राममनोहर लोहिया (v) 19 झूलेलाल जयंती, (vi) 20 चेतन्य

महाप्रभु , (vii) 21 होलिका दहन , (viii) २२ संत तुकाराम जयंती, (ix) विश्व जल दिवस का आयोजन। (x) 23 छत्रपति शिवाजी जयंती, (xi) 29 महावीर जयंती, (xii) 31 हनुमान जयंती, (xiii) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे ।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

ड्रोन तकनीक और खतरे

विज्ञान और तकनीक के मामले में अक्सर यह बात कही जाती रही है कि अगर वह एक वरदान है तो कुछ अभिशाप भी उसके साथ जुड़े हैं। डायनामाइट, परमाणु ऊर्जा से लेकर इंटरनेट के आविष्कार तक को लेकर यह बात सही साबित हुई है। इधर, दुनिया में जब से कृत्रिम मेधा (आइई) की मदद से चलने वाले हथियारों की होड़ शुरू हुई है तो खतरा ज्यादा बढ़ गया है। तकनीक की यह होड़ सिर्फ देशों की सेनाओं के बीच ही नहीं है, बल्कि नागरिक जीवन में इसका असर दिखने लगा है। तकनीक का दिनोंदिन सस्ता होते जाना यह संभव कर रहा है कि वह आम लोगों के हाथों में पहुंच जा। पर खतरा यह है कि कहीं वह आतंकियों-अपराधियों के हाथ में न पड़ जाए। ऐसा ही मामला ड्रोन तकनीक का है।

हालांकि अभी तक ज्यादातर संदर्भों में ड्रोन के इस्तेमाल के सकारात्मक पहलू ही सामने आए हैं। जैसे किसी स्थान की निगरानी करने, विकास संबंधी गतिविधियों का पता लगाने, नक्शे तैयार करने और अपराधियों की धरपकड़ जैसे कार्यों में ड्रोन का प्रयोग किया जाने लगा है। समस्याग्रस्त इलाकों में ड्रोन से निगरानी का काम कई देशों की पुलिस की कार्यशैली में शामिल हो चुका है। पर ड्रोन का महत्त्व इससे भी ज्यादा हो सकता है। दरअसल, निगरानी के काम के लिए ड्रोन तकनीक का उपयोग जिस तेजी से बढ़ रहा है, वह ज्यादा महत्त्वपूर्ण है।

ड्रोन सुशासन और सरकारी कामों की गति बढ़ाने में भी मददगार साबित हो रहे हैं। इनके बल पर एक बड़ा सपना यह देखा जा रहा है कि जल्दी ही भारत ड्रोन के उत्पादन और इस्तेमाल की धुरी बन सकता है। इसका फायदा देश के रोजगार क्षेत्र को भी होगा, ठीक वैसे ही जैसे अस्सी-नब्बे के दशक में जब देश में कंप्यूटर आए तो ये मशीनें न सिर्फ हमारी व्यवस्था और जीवन का जरूरी अंग बन गईं, बल्कि रोजगार का पूरा परिदृश्य ही बदल गया।

जैसे- पीएम स्वामित्व योजना के तहत देश के गांवों की हर संपत्ति का डिजिटल नक्शा तैयार किया जा रहा है। इससे जमा की गई सूचनाओं के आधार पर डिजिटल संपत्ति कार्ड लोगों को दिए जा रहे हैं। यानी ड्रोन सुशासन और सरकारी कामों की गति बढ़ाने में भी मददगार साबित हो रहे हैं। इनके बल पर एक बड़ा सपना यह देखा जा रहा है कि जल्दी ही भारत ड्रोन के उत्पादन और इस्तेमाल की धुरी बन सकता है। इसका फायदा देश के रोजगार क्षेत्र को भी होगा, ठीक वैसे ही जैसे अस्सी-नब्बे के दशक में जब देश में कंप्यूटर आए तो ये मशीनें न सिर्फ हमारी व्यवस्था और जीवन का जरूरी अंग बन गईं, बल्कि रोजगार का पूरा परिदृश्य ही बदल गया।

विभिन्न क्षेत्रों में ड्रोन के इस्तेमाल की सूची बनाना चाहें, तो कई काम हैं जहां ड्रोन पहले से ही काम में प्रयोग में लिए जा रहे हैं। पुलिस और सेना के लिए निगरानी, गोदामों में सामान पर नजर, जमीनों पर अतिक्रमण का पता लगाने और सर्वेक्षण संबंधी जानकारी जुटाने के लिए, गहरी सुरंगों या ऊंचे टावरों के भीतर जाकर हालात का मुआयना करने, वीडियो या फिल्म की शूटिंग करने आदि के लिए अलग-अलग किस्म के ड्रोन मौजूद हैं।

वन्यजीव अभयारण्यों में शिकारियों पर नजर रखने के लिए सबसे पहले काजीरंगा नेशनल पार्क के सुरक्षा अधिकारियों ने वर्ष 2013 में ड्रोन के उपयोग शुरू किया था। खेती बचाने में ड्रोन कैसे उपयोगी साबित हो सकता है, इसकी मिसाल सबसे पहले फ्रांस में देखने को मिली थी। बताते हैं कि फ्रांस के शहर बोर्डेक्स में वाइन बनाने वाली एक कंपनी ने अंगूरों को संक्रमणों से बचाने के लिए कैमरे लगे ड्रोन का इस्तेमाल किया था। ये ड्रोन अपनी उड़ान के दौरान अंगूरों की बेलों की काफी करीब से तस्वीरें खींचते हैं। इससे पता लग जाता है कि कहीं फसलें सड़ने तो नहीं लगी हैं।

यदि बात खेलों के सीधे प्रसारण की जाए, तो वर्ष 2012 में रूपर्ट मर्डोक की कंपनी फाक्स स्पोर्ट्स आस्ट्रेलिया ने एक क्रिकेट मैच के प्रसारण के लिए पहली बार एक कैमरा युक्त ड्रोन का इस्तेमाल किया था। वर्ष 2013 में एक रग्बी मैच में भी इस तरह का प्रयोग किया गया। इन हवाई मशीनों के इस तरह के इस्तेमाल से लोगों को अपने मनपसंद खेल को उस कोण से देखने का भी मौका मिलना संभव हो गया जिससे अभी तक वे वंचित थे।

इतना ही नहीं, आठ साल पहले पेट्रोलियम कंपनी बीपी ने अलास्का में एक ड्रोन का इस्तेमाल यह पता लगाने में किया था कि सुदूर सुनसान इलाकों में फैली पाइप लाइनों में किसी किस्म की खराबी तो नहीं आई। कड़कड़ाती ठंड और तेज हवाओं के मद्देनजर पाइप लाइनों पर सतत नजर नहीं रखी जा सकती है। इन स्थितियों में ड्रोन काफी काम आते हैं। प्राकृतिक आपदाओं में भी ड्रोन का बखूबी इस्तेमाल किया जाता है। साल 2013 में उत्तराखंड में विनाशकारी बाढ़ के बाद ड्रोन की मदद से ही पहाड़ों, जंगलों और सुनसान जगहों पर फंसे लोगों की तलाश की गई थी। ड्रोन उन इलाकों में भी जाने में सक्षम होते हैं जहां हेलिकाप्टर नहीं पहुंच पाते हैं।

पर इन सारे उदाहरणों से अलग ड्रोन इस्तेमाल को लेकर कुछ खतरे भी सामने आए हैं। खतरा ड्रोन तकनीक का आतंकी हाथों में पड़ जाना और शत्रु देशों द्वारा उनका इस्तेमाल किए जाने को लेकर ज्यादा है। पिछले साल 27 जून को जम्मू के वायुसेना स्टेशन पर ड्रोन से किए गए आतंकी हमले ने इस धारणा को खंडित कर दिया था कि हमारे सैन्य प्रतिष्ठान आसमान के रास्ते की जाने वाली आतंकी कोशिशों से पूरी तरह महफूज हैं। आतंकियों ने सेना के महंगी लागत वाले उपायों को बेहद कम लागत वाले हल्के ड्रोन से विस्फोटक गिरा कर साबित कर दिया था कि व्यवस्था में सेंध लगाने के लिए ऊंची लागत के इंतजामों की जरूरत नहीं है। ड्रोन का इस्तेमाल अगर आतंकी कर पा रहे हैं, तो यह उनके हाथों में परमाणु बम पड़ जाने से कम नहीं है।

यह निश्चय ही सेना की ओर बरती जा रही सावधानी का नतीजा है कि आतंकवादी अब किसी जगह पर कोई वारदात खुद सामने आकर करने से पहले सौ बार सोचते हैं। किसी सार्वजनिक स्थान या राष्ट्रीयमहत्त्व के सरकारी अथवा सैन्य प्रतिष्ठान की सुरक्षा में सेंध लगाना आतंकियों के लिए पहले जैसा आसान नहीं रह गया है। ऐसा करने में उन्हें भारी जोखिम उठाना पड़ता है और मारे जाने का खतरा भी रहता है। लेकिन ड्रोन ने अब उन्हें वे हाथ-पांव दे दिए हैं, जिनके सहारे वे ज्यादा कोई जोखिम लिए बिना सुरक्षा में सेंध लगा सकते हैं और हमले कर सकते हैं।

आज के हालात में किसी भी स्थान को आतंकियों के दायरे से बाहर नहीं माना जा सकता। ड्रोन से किए जाने वाले हमलों में आतंकियों को मारे या पकड़े जाने का डर नहीं होता है। फिर यह उपाय है भी कम खर्चीला। इन हमलों में सीमा पार के आतंकी संगठनों की संलिप्तता को उजागर करना भी थोड़ा मुश्किल है। चूंकि ड्रोन बेहद कम ऊंचाई पर उड़ते हैं, इसलिए राडार की जद में भी नहीं आते। ऐसे में विशेषज्ञों का यह आकलन निराधार नहीं है कि भविष्य में ड्रोन हमलों की संख्या में इजाफा हो सकता है ।

जहां तक आतंकियों के भेजे ड्रोन से मुकाबले का सवाल है तो भारतीय सेना छोटे आकार के कुछ इजरायली ड्रोन (स्मैश-200 प्लस) का आयात कर रही है। इन्हें बंदूकों या राइफलों पर लगाया जा सकता है। इनसे हमलावर छोटे ड्रोन को आसानी से निशाना बनाया जा सकता है। फिलहाल हमारा देश ऐसे खतरों से निपटने में पूरी तरह सक्षम नहीं है। लेकिन इन घटनाओं से सबक लेकर यदि बेहद कड़े प्रबंध किए जाते हैं और आतंकी मनसूबों को धराशायी किया जाता है, तो भी यह राहत की बात होगी। निश्चय ही यह काम नीतिगत स्तर पर ड्रोन तकनीक को बढ़ावा देकर और सरकारी तंत्र की गंभीर कोशिशों के साथ संपन्न होगा। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि बात को ड्रोन महोत्सवों से आगे बढ़ाया जाए और योजनाओं को त्वरित गति के साथ अमली जामा पहनाया जाए ।

भारतीय ज्ञान परम्परा

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसां।
उदारचरितानां तु वसुधैवकुटुम्बकम् ॥

श्रीमद्भगवत गीता

रुद्राणां शङ्करश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् ।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥ 1

मैं एकादश रुद्रों में शंकर हूँ और यक्ष तथा राक्षसों में धन का स्वामी कुबेर हूँ। मैं आठ वसुओं में अग्नि हूँ और शिखरवाले पर्वतों में सुमेरु पर्वत हूँ॥

पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् ।
सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः ॥ 2

पुरोहितों में मुखिया बृहस्पति मुझको जान। हे पार्थ! मैं सेनापतियों में स्कंद और जलाशयों में समुद्र हूँ॥

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥ 3

मैं महर्षियों में भृगु और शब्दों में एक अक्षर अर्थात् ओंकार हूँ। सब प्रकार के यज्ञों में जपयज्ञ और स्थिर रहने वालों में हिमालय पहाड़ हूँ ॥

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।
गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ॥ 4

मैं सब वृक्षों में पीपल का वृक्ष, देवर्षियों में नारद मुनि, गन्धर्वों में चित्ररथ और सिद्धों में कपिल मुनि हूँ॥

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् ।
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥ 5

घोड़ों में अमृत के साथ उत्पन्न होने वाला उच्चैःश्रवा नामक घोड़ा, श्रेष्ठ हाथियों में ऐरावत नामक हाथी और मनुष्यों में राजा मुझको जान ॥

रामचरित मानस

रावण हनुमान संवाद:

खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा। कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा॥
सब कें देह परम प्रिय स्वामी। मारहिं मोहि कुमारग गामी॥

हे राक्षसों के स्वामी ! मुझे भूख लगी थी, मैंने फल खाए और वानर स्वभाव के कारण वृक्ष तोड़े। हे (निशाचरों के) मालिक ! देह सबको परम प्रिय है। कुमार्ग पर चलने वाले राक्षस जब मुझे मारने लगे ॥

जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे। तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे॥
मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा। कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा॥

तब जिन्होंने मुझे मारा, उनको मैंने भी मारा, उस पर तुम्हारे पुत्र ने मुझको बाँध लिया, मुझे अपने बाँधे जाने की कुछ भी लज्जा नहीं है। मैं तो अपने प्रभु का कार्य करना चाहता हूँ॥

राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राजु तुम्ह करहू॥

रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका। तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका॥

तुम श्री रामजी के चरण कमलों को हृदय में धारण करो और लंका का अचल राज्य करो। ऋषि पुलस्त्यजी का यश निर्मल चंद्रमा के समान है। उस चंद्रमा में तुम कलंक न बनो॥

राम बिमुख संपति प्रभुताई। जाइ रही पाई बिनु पाई॥

सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी। बिमुख राम त्राता नहिं कोपी॥

संकर सहस बिष्नु अज तोही। सकहिं न राखि राम कर द्रोही॥

राम विमुख पुरुष की संपत्ति और प्रभुता रही हुई भी चली जाती है और उसका पाना न पाने के समान है। हे रावण ! सुनो, मैं प्रतिज्ञा करके कहता हूँ कि रामविमुख की रक्षा करने वाला कोई भी नहीं है। हजारों शंकर, विष्णु और ब्रह्मा भी श्री रामजी के साथ द्रोह करने वाले तुमको नहीं बचा सकते॥

मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही॥

उलटा होइहि कह हनुमाना। मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना॥

रे दुष्ट! तेरी मृत्यु निकट आ गई है। अधम! मुझे शिक्षा देने चला है। हनुमानजी ने कहा, इससे उलटा ही होगा। यह तेरा मतिभ्रम है, मैंने प्रत्यक्ष जान लिया है॥

पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि।

जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि॥

अपनी पूछ को बुझाकर, श्रमको मिटाकर (थकावट दूर करके), फिर से छोटा स्वरूप धारण करके हनुमानजी हाथ जोड़कर सीताजी के आगे आ खडे हुए।

सीता से विदा ले, राम को सन्देश देना :

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा। जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा॥

चूड़ामनि उतारि तब दयऊ। हरष समेत पवनसुत लयऊ॥

हे माता! जैसे रामचन्द्रजी ने मुझको पहचान के लिये मुद्रिका निशान दिया था, वैसे ही आप भी मुझको कुछ चिन्ह दें। तब सीताजी ने अपने सिर से उतार कर चूडामणि दिया। हनुमानजी ने बड़े आनंद के साथ वह ले लिया।

प्रीति सहित सब भेंटे रघुपति करुना पुंज॥

पूछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज॥

दया की राशि श्री रघुनाथजी सबसे प्रेम सहित गले लगकर मिले और कुशल पूछी। वानरों ने कहा, हे नाथ! आपके चरण कमलों के दर्शन पाने से अब कुशल है॥

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।

लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट॥

हनुमानजी ने कहा, आपका नाम रात-दिन पहरा देने वाला है, आपका ध्यान ही किंवाड़ है। नेत्रों को अपने चरणों में लगाए रहती हैं, यही ताला लगा है, फिर प्राण जाएँ तो किस मार्ग से?

बोध वाक्य : "वास्तविक संवाद तभी मुमकिन है , जब हममें कोई पूर्वाग्रह न हो। जब आप किसी से भी बातें करते हैं , तब पूर्वाग्रह न हो। जब आप किसी से भी बात करते हैं , तय धारणा के मुताबिक़ ही सोचते हैं और उसी के आधार पर बात का मतलब निकालते हैं । पूर्वाग्रह को पीछे छोड़ने पर ही वास्तविक संवाद मुमकिन है ."- जिदु कृष्णमूर्ति

बोध कथा: ''एक दिन जब श्री रामकृष्ण कलकत्ता में थे, नरेन्द्रनाथ दक्षिणेश्वर आये। कमरे में किसी को न पाकर उनके मन में श्री रामकृष्ण के कांचन त्याग की परीक्षा लेने की इच्छा हुई। इसलिए उन्होंने श्री रामकृष्ण के बिस्तर के नीचे एक रुपया छिपा दिया और पंचवटी में ध्यान करने चले गये। कुछ समय बाद श्री रामकृष्ण लौटे। ज्यों ही उन्होंने बिस्तर का स्पर्श किया, वे पीड़ा से कराहकर पीछे हट गये। जब वे चकित होकर चारों ओर देख रहे थे, तभी नरेन्द्रनाथ भीतर आये और चुपचाप उन्हें देखते रहे। एक सेवक ने बिस्तर को उलट-पलट कर देखा और रुपया खोज निकाला। श्री रामकृष्ण और उनके सेवक दोनों ही आश्चर्य चकित थे। श्री रामकृष्ण कमरे के बाहर चले गये। बाद में जब श्रीरामकृष्ण को पता चला कि नरेन्द्रनाथ ने उनकी परीक्षा ली थी, तब वे बड़े प्रसन्न हुए।''

मासिक गीत / गान :

अनुरागमयी वरदानमयी भारत जननी भारत माता!
मस्तक पर शोभित शतदल सा यह हिमगिरि है, शोभा पाता,
नीलम-मोती की माला सा गंगा-यमुना जल लहराता,
वात्सल्यमयी तू स्नेहमयी भारत जननी भारत माता।

धानी दुकूल यह फूलों की- बूटी से सज्जित फहराता,

पोंछने स्वेद की बूँदे ही यह मलय पवन फिर-फिर आता।

सौंदर्यमयी श्रृंगारमयी भारत जननी भारत माता।
सूरज की झारी औ किरणों की गूँथी लेकर मालायें,
तेरे पग पूजन को आतीं सागर लहरों की बालाएँ।

तू तपोमयी तू सिद्धमयी भारत जननी भारत माता!

----------00----------

अप्रैल

चैत्र - बैशाख : इन महीनों में दशों दिशाएँ - आकाश, ईशान, पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर और पाताल , तीनों काल - भूत, वर्तमान और भविष्य। तीनों गुण - सत, रज और तम मानों उल्लास से भरे रहते हैं। पञ्च ऋण- पितृ ऋण, मातृ ऋण, ऋषि ऋण, देव ऋण, राष्ट्र ऋण हमारे कर्तव्य का बोध करते हैं। यदि हम इन सबका नित्य स्मरण करते हैं तो निश्चित रूप से हमारे व्यक्तित्व में एक विशिष्ट परिवर्तन होता है, जो हमें दूसरों से कुछ अलग दिखाता है।

चैत्र मास का सम्बन्ध श्री राम से भी है। राम-राज्य को आदर्श माना गया है, उसमें शान्ति का साम्राज्य था, लोग धर्म और कर्त्तव्य का पालन करते, सुखी और वैभव का जीवन बिताते थे। श्रीराम जी के जीवन के ये पहलू: जैसे परिस्थिति का आकलन करने की क्षमता,

राजनीतिक सूक्ष्म दृष्टि, राजनीतिज्ञता, अपना सब कुछ समर्पित कर जनसेवा का व्रत, दुष्टों का निर्दलन, दुष्टों के चंगुल से निष्पाप लोगों की मुक्ति और रक्षा, धर्म का अभ्युथान अर्थात् समाज की धारणा, जिससे विषमता का निर्मूलन ,विभेदों में सामंजस्य, परस्पर शत्रुता का निवारण तथा विपुल विविधता में प्रकट होने वाले जन-जीवन में मौलिक एकता का साक्षात्कार होता है। आज भी हमें वर्तमान समस्याओं का समाधान तथा अपने देश में राम-राज्य की पुनर्स्थापना के लिए उनका गहराई से अध्ययन कर,उनसे उचित शिक्षा ग्रहण कर,उन्हें आत्मसात कर आचरण में लाना होगा। कहा जाता है कि किसी राष्ट्र का निर्माण हजार-दस हजार वर्षों में नहीं, तो लाखों-लाखों वर्षों के यशस्वी साधकों, ऋषियों, महापुरुषों, संतों के योगदान के साथ होता है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम: 12 श्री वल्लभाचार्य जयंती, (i) 14 अप्रैल 1563, गुरु अर्जुनदेव सिक्खों के पांचवे गुरु (ii) 14 अप्रैल 1891, डॉ. भीमराव आंबेडकर (ii)17 श्री शिवाजी जयंती, (ii) 18 परशुराम जयंती, (iii) 15 अप्रैल 1469,गुरु नानकदेव सिखों के प्रथम गुरु (आदि गुरु) आदि महापुरुषों की जन्मतिथि पर विभिन्न आयोजन किए जाएं। (iv) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे ।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

ड्रोन तकनीक और कृषि कार्य (भाग-3)

दुनिया भर में कृषि कार्यों के लिए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और ड्रोन का उपयोग बढ़ रहा है। भारत में भी सरकार कृषि क्षेत्र में तकनीक के उपयोग को बढ़ावा दे रही है, ताकि बेहतर उपज के साथ-साथ किसानों की आय में भी वृद्धि हो। महाराष्ट्र, राजस्थान आदि राज्यों के तमाम किसान खेती-किसानी के कार्यों में ड्रोन का उपयोग करने लगे हैं।

कृषि ड्रोन खेती के आधुनिक उपकरणों में से एक है, जिसके इस्तेमाल से किसानों को काफी मदद मिल सकती है। ड्रोन से बड़े क्षेत्रफल में महज कुछ मिनटों में कीटनाशक, खाद या दवाओं का छिड़काव किया जा सकता है। इससे न सिर्फ लागत में कमी आएगी, बल्कि समय की बचत भी होगी। सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि सही समय पर खेतों में कीट प्रबंधन किया जा सकेगा। सरकार ने देश में ही ड्रोन के विकास को बढ़ावा देने के लिए इसके आयात पर भी रोक लगा दी है।

कृषि ड्रोन बंटाएगा हाथ : पिछले कुछ वर्षों में कृषि ड्रोन तकनीक में काफी सुधार हुआ है। अब किसान भी इस बात को समझने लगे हैं कि कैसे ड्रोन तकनीक से उन्हें मदद मिल सकती है। आमतौर पर कृषि क्षेत्र में ड्रोन का उपयोग मैपिंग, सर्वेक्षण से लेकर कीटनाशक छिड़काव तक में होता है। वैसे, कृषि ड्रोन दूसरे ड्रोन से अलग नहीं हैं। इस छोटे यूएवी (मानव रहित विमान) को किसानों की जरूरतों के हिसाब से बदला जा सकता है। हालांकि अब कई ड्रोन विशेष रूप से कृषि उपयोग के लिए ही विकसित किए जा रहे हैं।

सिंचाई निगरानी : यदि बड़े क्षेत्र में सिंचाई हो रही है, तो ड्रोन की मदद से निगरानी में मदद मिल सकती है। इसमें मल्टीस्पेक्ट्रल सेंसर उन क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं, जो बहुत शुष्क हैं। इससे किसान को पूरे क्षेत्र में बेहतर सिंचाई में सहायता मिल सकती है। ड्रोन सर्वेक्षण से फसलों की जल ग्रहण क्षमता में सुधार लाया जा सकता है। साथ ही, सिंचाई के दौरान संभावित रिसाव के बारे में भी जानकारी हासिल की जा सकती है। उदाहरण के लिए किसान टाइम-लैप्स फोटोग्राफी के माध्यम से पता लगा सकते हैं कि उनकी फसल का कौन-सा हिस्सा ठीक से सिंचित नहीं हो रहा है।

फसल स्वास्थ्य की निगरानी : फसलों में बैक्टीरिया आदि के बारे में शुरुआती दौर में ही पता लगाना मुश्किल होता है, मगर कृषि ड्रोन के लिए यह आसान है। ड्रोन देख सकता है कि कौन से पौधे अलग-अलग मात्रा में ग्रीन लाइट प्रदर्शित करते हैं। यह डाटा फसल स्वास्थ्य को ट्रैक करने के लिए मल्टीस्पेक्ट्रल इमेज बनाने में मदद करता है। इसके बाद लगातार निगरानी से फसलों को बचाने में मदद मिल सकती है।

मृदा विश्लेषण : ड्रोन सर्वेक्षण किसानों को उनके खेत की मिट्टी की स्थिति के बारे में जानकारी एकत्र करने की सुविधा देता है। मल्टीस्पेक्ट्रल सेंसर बीज रोपने के पैटर्न, पूरे क्षेत्र की मिट्टी का विश्लेषण, सिंचाई और नाइट्रोजन-स्तर के प्रबंधन के लिए उपयोगी डाटा

को हासिल करने में मदद कर सकता है। सटीक 3डी मैपिंग से किसान अपने खेत की मिट्टी की स्थिति का अच्छी तरह से विश्लेषण कर सकते हैं।

फसल नुकसान का आकलन : ड्रोन की मदद से फसल के नुकसान का आकलन भी किया जा सकता है। मल्टीस्पेक्ट्रल सेंसर और आरजीबी सेंसर के साथ आने वाले कृषि ड्रोन खर-पतवार, संक्रमण और कीटों से प्रभावित क्षेत्रों का पता लगा सकते हैं। फिर डाटा के अनुसार संक्रमण से लड़ने के लिए रसायनों का सही मात्रा का उपयोग कर लागत को कम कर सकते हैं।

कीटनाशकों का छिड़काव : ड्रोन के माध्यम से फसलों पर कीटनाशकों का छिड़काव करना आसान हो गया है। यह हानिकारक रसायनों से मानव संपर्क को भी सीमित करता है। कृषि ड्रोन इस कार्य को पारंपरिक तरीके की तुलना में बहुत तेजी और बेहतर तरीके से अंजाम दे सकता है। आरजीबी सेंसर और मल्टीस्पेक्ट्रल सेंसर वाले ड्रोन समस्याग्रस्त क्षेत्रों की सटीक पहचान और उपचार कर सकते हैं। अन्य तरीकों की तुलना में ड्रोन से हवाई छिड़काव पांच गुना तेज होता है।

पशुधन ट्रैकिंग : ड्रोन सर्वेक्षण से किसान न केवल अपनी फसलों पर नजर रख सकते हैं, बल्कि अपने मवेशियों की गतिविधियों पर भी नजर रख सकते हैं। थर्मल सेंसर तकनीक खोए हुए जानवरों को खोजने में मदद करती है- (i) बेहतर फसल उत्पादन के लिए ड्रोन का उपयोग किया जा सकता है। इससे सिंचाई योजना, फसल स्वास्थ्य की निगरानी, मिट्टी की गुणवत्ता की जानकारी, कीटनाशकों के छिड़काव आदि में मदद मिल सकती है (ii) ड्रोन के उपयोग से किसानों को उनकी फसलों के बारे में नियमित रूप से सटीक जानकारी मिल सकती है, जिससे उन्हें निर्णय लेने में आसानी हो सकती है। साथ ही, समय और संसाधन की बर्बादी को रोका जा सकता है (iii) ड्रोन के उपयोग से चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों, संक्रमित क्षेत्रों, लंबी फसलों और बिजली लाइनों के नीचे कीटनाशकों का छिड़काव किया जा सकता है (iv) ड्रोन सटीक डाटा प्रोसेसिंग के साथ सर्वेक्षण करता है, जिससे किसानों को तेजी से और सटीक निर्णय लेने में मदद मिलती है। ड्रोन द्वारा एकत्रित किए गए डाटा की मदद से समस्याग्रस्त क्षेत्रों, संक्रमित/अस्वस्थ फसलों, नमी के स्तर आदि पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है (v) कृषि ड्रोन उर्वरक, पानी, बीज और कीटनाशकों जैसे सभी संसाधनों का बेहतर उपयोग करने में सक्षम बनाता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा :

एकात्मता के प्रेरक :

संघशक्तिप्रणेतारौ केशवो माधवस्तथा
स्मरणीयाः सदैवैते नवचैतन्यदायकाः ॥

श्रीमद्भगवतगीता

आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक्।
प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः ॥1

मैं शस्त्रों में वज्र और गौओं में कामधेनु हूँ। शास्त्रोक्त रीति से सन्तान की उत्पत्ति हेतु कामदेव हूँ और सर्पों में सर्पराज वासुकि हूँ॥

अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम्।
पितृणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम् ॥2

मैं नागों में शेषनाग और जलचरों का अधिपति वरुण देवता हूँ और पितरों में अर्यमा नामक पितर तथा शासन करने वालों में यमराज मैं ही हूँ॥

प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम्।
मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ॥ 3

मैं दैत्यों में प्रह्लाद और गणना करने वालों का समय हूँ तथा पशुओं में मृगराज सिंह और पक्षियों में गरुड़ हूँ॥

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम्।

झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी ॥ 4

मैं पवित्र करने वालों में वायु और शस्त्रधारियों में श्रीराम हूँ तथा मछलियों में मगर हूँ और नदियों में श्री भागीरथी गंगाजी हूँ॥

सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन।

अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ॥ 5

हे अर्जुन! सृष्टियों का आदि और अंत तथा मध्य भी मैं ही हूँ। मैं विद्याओं में अध्यात्मविद्या और परस्पर विवाद करने वालों का तत्व-निर्णय के लिए किया जाने वाला वाद हूँ॥

रामचरित मानस

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना। भरि आए जल राजिव नयना ॥

बचन कायँ मन मम गति जाही। सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही ॥

सीताजी का दुःख सुनकर सुख के धाम प्रभु के कमल नेत्रों में जल भर आया (और वे बोले-) मन, वचन और शरीर से जिसे मेरी ही गति (मेरा ही आश्रय) है, उसे क्या स्वप्न में भी विपत्ति हो सकती है?॥

कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई। जब तव सुमिरन भजन न होई॥

केतिक बात प्रभु जातुधान की। रिपुहि जीति आनिबी जानकी॥

हनुमानजी ने कहा- हे प्रभु! विपत्ति तो वही (तभी) है जब आपका भजन-स्मरण न हो। हे प्रभो! राक्षसों की बात ही कितनी है? आप शत्रु को जीतकर जानकीजी को ले आवेंगे॥

सुनु कपि तोहि समान उपकारी। नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ॥

प्रति उपकार करौं का तोरा। सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥

हे हनुमान्! सुन, तेरे समान मेरा उपकारी देवता, मनुष्य अथवा मुनि कोई भी शरीरधारी नहीं है। मैं तेरा प्रत्युपकार (बदले में उपकार) तो क्या करूँ, मेरा मन भी तेरे सामने नहीं हो सकता ॥

सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखेउँ करि बिचार मन माहीं ॥

पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता। लोचन नीर पुलक अति गाता ॥

हे पुत्र! सुन, मैंने मन में (खूब) विचार करके देख लिया कि मैं तुझसे उऋण नहीं हो सकता। देवताओं के रक्षक प्रभु बार-बार हनुमान्जी को देख रहे हैं। नेत्रों में प्रेमाश्रुओं का जल भरा है और शरीर अत्यंत पुलकित है ॥

सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत।

चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ॥

प्रभु के वचन सुनकर और उनके (प्रसन्न) मुख तथा (पुलकित) अंगों को देखकर हनुमानजी हर्षित हो गए और प्रेम में विकल होकर 'हे भगवन्! मेरी रक्षा करो, रक्षा करो' कहते हुए श्री रामजी के चरणों में गिर पड़े ॥

बार बार प्रभु चहइ उठावा। प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ॥

प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा। सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥

प्रभु उनको बार-बार उठाना चाहते हैं, परंतु प्रेम में डूबे हुए हनुमानजी को चरणों से उठना सुहाता नहीं। प्रभु का करकमल हनुमानजी के सिर पर है। उस स्थिति का स्मरण करके शिवजी प्रेममग्न हो गए ॥

बोध वाक्य : "समय आए बिना वज्रपात होने पर भी मृत्यु नहीं होती, समय आ जाने पर पुष्प भी प्राणी के प्राण ले लेता है।"- कल्हण

बोध कथा:

शुद्ध उच्चारण आवश्यक है

एक बार देवता वृद्ध पुरोहित से किसी बात पर नाराज हो गये। नाराजगी इतनी अधिक हो गई कि उन्होंने पुरोहित की हत्या ही कर दी। देवताओं के राजा इंद्र ने इस कार्य का नेतृत्व किया था। इस कारण पुरोहित के पुत्र ने इंद्र से बदला लेने की ठान ली।

पुरोहित के पुत्र ने एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ की समाप्ति पर ब्रह्मा जी प्रकट हुए। उन्होंने पुरोहित के पुत्र से मनचाहा वर मांगने को कहा। पुरोहित के पुत्र ने इंद्र से अपनी शत्रुता की बात बताते हुए कहा की मैं ऐसा पुत्र चाहता हूँ जो इंद्र को मारने वाला हो। पर उसने बोलते समय 'इंद्र' के नाम पर अधिक जोर दिया और 'शत्रु' शब्द को धीरे से बोला। इस पर ब्रह्मा जी हंसे और 'तथास्तु' कहकर विदा हो गये। समय आने पर उसे एक अति बलशाली पुत्र की प्राप्ति हुई। पुरोहित के पुत्र ने सोचा कि अब शीघ्र ही मेरी इच्छा पूरी होगी। मेरा बेटा इंद्र को मारकर अपने दादाजी की हत्या का बदला अवश्य लेगा। पर जब उस पुत्र ने बड़े होकर इंद्र को चुनौती दी, तो युद्ध में मामला उलट गया। इंद्र ने उसे ही मार डाला।

वास्तव में वरदान मांगते समय 'इंद्र' शब्द को अधिक जोर से बोलने के कारण इंद्र प्रभावी हो गये, पर 'शत्रु' शब्द धीरे से बोलने के कारण इंद्र का शत्रु अर्थात पुरोहित का वह पौत्र कमजोर ही रह गया। इसलिए युद्ध में इंद्र विजयी रहे। इस कथा का अर्थ यह है कि शुभाषित बोलते समय उसका उच्चारण ठीक होना चाहिए तथा उसके भावार्थ को भी समझना जरूरी है।

मासिक गीत / गान :

तूफानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार
आज सिन्धु ने विष उगला है
लहरों का यौवन मचला है
आज हृदय में और सिन्धु में
साथ उठा है ज्वार।।

तूफानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार
लहरों के स्वर में कुछ बोलो
इस अंधड में साहस तोलो
कभी-कभी मिलता जीवन में
तूफानों का प्यार।।

तूफानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार
यह असीम, निज सीमा जाने
सागर भी तो यह पहचाने
मिट्टी के पुतले मानव ने
कभी न मानी हार।।

सागर की अपनी क्षमता है
पर माँझी भी कब थकता है
जब तक साँसों में स्पन्दन है
उसका हाथ नहीं रुकता है
इसके ही बल पर कर डाले
सातों सागर पार
तूफानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार।।

साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धरि
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है
भूषण भनत नाद बिहद नगारन के
नदी-नद मद गैबरन के रलत है
ऐल-फैल खैल-भैल खलक में गैल गैल
गजन की ठैल –पैल सैल उसलत है
तारा सो तरनि धूरि-धारा में लगत जिमि

----------00----------

मई

वैशाख : अक्षय का शाब्दिक अर्थ है जिसका क्षय न हो। वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की ऐसी ही तिथि है, अक्षय तृतीया। जिस तरह नव संवत्सर का प्रारंभ वर्ष प्रतिप्रदा से होता है, उसी तरह युगाब्द का प्रारंभ अक्षय तृतीया से माना जाता है। युग का परिवर्तन हमेशा अक्षय तृतीय पर होता है। इसीलिए इसे युगादि तृतीया भी कहते हैं। ग्रमीण क्षेत्र में वट वृक्ष की पूजा इस दिन की जाती है। वट वृक्ष को अक्षय वृक्ष माना जाता है। वट वृक्ष अमर वृक्ष है, जो हर ऋतु और हर समय हरा-भरा रहता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यह भाँवरों की तिथि नहीं है किन्तु इस दिन अनेक विवाह होते हैं, जिनमें जन्म पत्री भी नहीं मिलाई जाती। दशावतारों में जिन षष्टम अवतार श्री परशुराम का वर्णन आता है तथा जिन्हें विष्णु का अवतार माना जाता है, उनकी जन्मतिथि भी यही मानी जाती है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम : (i) 9 मई में रविन्द्र नाथ टैगोर जयंती (ii) 11 राष्ट्रीय प्रद्यौगिकी दिवस (iii) 26 बुद्ध जयंती (iv) 31 तम्बाकू विरोधी दिवस (v) 24 मई 1907, महादेवी वर्मा दिवस (vi) 19 मई हिंदी साहित्यकार हजारी प्रसाद द्विवेदी का 1979 में निधन।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

मार्केटिंग के लिए विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म

बिजनेस करना एक बात होती है, स्मार्ट तरीके से ऑनलाइन बिजनेस करना एक अलग बात होती है। प्रोडक्ट सेल करने के तरीके भी बदल रहे हैं। ऐसे में यह कल्पना करना कितना खूबसूरत है कि आप कोई प्रोडक्ट या सामान बेचना चाहें और बिना अधिक भागादौड़ी और बिना महंगी जगह पर दुकान खोले आपके सामान/प्रोडक्ट की बिक्री हो जाए। आपके कम्पूटर या मोबाइल फोन पर ऑर्डर मिल जाए और आप अपने प्रोडक्ट को डिलीवरी बॉय के जरिए ग्राहक को पहुंचवा दें। भारत में ऑनलाइन कारोबार निरंतर बढ़ ही रहा है। इस प्रकार के बिजनेस से 3 प्रकार के लोगों को सीधा लाभ हो रहा है। पहले वह लोग, जो सामान बनाते हैं या बेचना चाहते हैं, दूसरे वह लोग जो घर बैठे सामान प्राप्त कर लेना चाहते हैं और तीसरा वह समूह जो डिलीवरी बॉय के रूप में कार्य कर रहा है। इस तरह यह बिजनेस आमदनी के साथ-साथ अन्य लोगों के रोजगार का भी साधन है।

अधिकांश ऑनलाइन विक्रेता प्रोडक्ट के सोर्स के 3 तरीके हैं : (i) खुद से बिक्री करने वाले यानी DIY प्रोडक्ट- ये वे प्रोडक्ट हैं जिन्हें आप स्वयं बनाते हैं, चाहे वह एक छोटे बैच का बेकिंग शौक हो जिसे आप व्यवसाय में बदल रहे हों या अपने गैरेज में 3D प्रिंट का कारखाना। DIY आइटम आमतौर पर प्रोडक्शन करने के लिए सबसे महंगे प्रोडक्ट होते हैं लेकिन यदि आपके पास रचनात्मक आग्रह है तो वे सबसे अधिक संतुष्टिदायक भी हो सकते हैं। **(ii) थोक प्रोडक्ट**-पारंपरिक खुदरा मॉडल एक निर्माता या थोक व्यापारी से बड़ी मात्रा में आइटम खरीदना और उन्हें व्यक्तिगत रूप से बेचना हैं। आप अलीबाबा और ईटीसी थोक जैसी साइटों पर थोक आइटम पा सकते हैं। आप eBay पर थोक लॉट की खोज करके भी आपूर्तिकर्ता ढूंढ सकते हैं। **(iii) ड्रॉपशिप किए गए प्रोडक्ट-** ड्रॉपशीपिंग मॉडल में, आप प्रोडक्ट का विपणन करते हैं और ऑर्डर लेते हैं, लेकिन आपका आपूर्तिकर्ता पूर्ति को संभालता है। कम लाभ मार्जिन और कड़ी प्रतिस्पर्धा से सुविधा की भरपाई होती है, कई अन्य ऑनलाइन दुकानें सामान-माल की पेशकश करती हैं। लोकप्रिय ड्रॉप-शिपिंग आपूर्तिकर्ताओं में ओबेरो, अली-एक्सप्रेस, होलसेल2बी, इन्वेंटरी सोर्स और मेगागुड्स शामिल हैं।

कैसे होता है ऑनलाइन बिजनेस : ऑनलाइन बिजनेस कुछ हद तक 'विश्वास' पर होने वाला बिजनेस है। जब ग्राहक सेलर के प्रोडक्ट को ऑनलाइन देखता है और कोई प्रोडक्ट किसी ग्राहक को पसंद आ जाता है तो वह उसे ऑनलाइन ही ऑर्डर करता है। ऑर्डर करने में उसे कुछ जरूरी चीजे, जैसे अपना नाम, मोबाइल नंबर, ईमेल आईडी, तथा सामान प्राप्त करने का पता देना होता है।

आप कैसे बेच सकते हैं ऑनलाइन सामान : ऑनलाइन प्रोडक्ट बेचने के दो तरीके होते हैं: पहला, अपनी खुद की वेबसाइट बनवाकर सामान बेचना, दूसरा- मार्केट में पहले से मौजूद किसी ई-कॉमर्स के पोर्टल से जुड़कर सामान बेचना। पहले विकल्प यानी अपनी खुद की वेबसाइट बनाकर प्रोडक्ट बेचना काफी महंगा विकल्प है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी खुद की वेबसाइट बनाकर बेचता है तो उसे मेंटेनेंस, मार्केटिंग जैसे कई तरह के खर्चों को पूरा करना पड़ेगा। अगर कोई व्यक्ति पहले से चल रही ऑनलाइन शॉपिंग वेबसाइट से जुड़ता है तो यह काफी फायदेमंद हो सकता है। शुरुवात में किसी पहले से स्थापित वेबसाइट से ही जुड़कर काम करना फायदेमंद साबित होगा।

किसी वेबसाइट से कैसे जुड़ सकते हैं : किसी ऑनलाइन वेबसाइट से जुड़ने के लिए सबसे पहले व्यक्ति को जिस वेबसाइट से वह जुड़ना चाहता है, उस पर जाकर अपने आपको एक वेंडर के तौर पर रजिस्टर्ड करना होगा। उदाहरण के रूप में देखें कि अगर किसी व्यक्ति को फ्लिपकार्ट से जुड़ना है तो उसके लिए, निम्न स्टेप करने पड़ेंगे।

सबसे पहले seller.flipkart.com लिंक खोलना होगा। इसके बाद अपने आपको रजिस्टर्ड करने के लिए ईमेल आईडी और मोबाइल नंबर डालना होगा। अब आपका मोबाइल नंबर और ईमेल वेरिफिकेशन के लिए दोनों पर OTP जायेगा, इस OTP नंबर को एंटर करते ही एक फॉर्म खुलकर आएगा, जिसपर सभी जरूरी जानकारियां भरकर उसे सबमिट कर देना होगा। अब आप वेंडर ज़ोन में एंटर कर चुके हैं। यहां पर आप अपने प्रोडक्ट यानी सामानों की लिस्टिंग कर सकते हैं।

जब आप अपने प्रोडक्ट की लिस्टिंग कर लें तो, जब चाहे कंपनी के सर्विस विभाग से फोन से भी सलाह ले सकते हैं। यहां यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि ऑनलाइन सेलिंग कंपनियां अपने लॉजिस्टिक सर्विस के द्वारा सामान पिक (उठवाना) करवाती हैं, सामान पैक करके देने की जिम्मेदारी सेलर यानी आपकी होती है।

आपको पैसे कब मिलेंगे ? : आपके प्रोडक्ट/सामान के डिलीवरी होने के 10-15 दिनों में आपको अपने सामान की कीमत आपके बैंक अकाउंट में आ जाएगी। आपके सामान पर वसूली गई कीमत में से ऑनलाइन कंपनियां कुछ हिस्सा अपने पास कमीशन के रूप में रख लेंगी। यह कमीशन में उनके प्लेटफ़ॉर्म पर आपके सामान बेचने के चार्ज, सर्विस टैक्स और लॉजिस्टिक के साथ ही पैकिंग के खर्चें इत्यादि शामिल होते हैं।

ऑनलाइन सामान बेचने से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां : (i) एक साथ आप कई ऑनलाइन कंपनियों के साथ जुड़ सकते हैं (ii) अगर आपके सामान में कुछ टैक्स के दायरे में आता है तो GST रजिस्ट्रेशन करवा लें (iii) कम्पूटर की मूलभूत जानकारी अवश्य रखें (iv) हिसाब–किताब बेहतर ढंग से करना सीख लीजिए, क्योंकि आपके पास एक साथ बहुत सा हिसाब आने वाला है।

ऑनलाइन बाजार में सुपरहिट होने के लिए यह करें : (i) किसी भी तरह की गलत जानकारी देने से बचे (ii) अपने सामान के बारे अधिक से अधिक जानकरी देने का प्रयास करें (iii) सामान के बारे में डिटेल से बताइए, जैसे बुसर्ट किस रंग का है, उसकी बटन किस रंग की है इत्यादि ऐसा करने से ग्राहक का विश्वास बढ़ेगा।

दुकान में बिक्री बढ़ाने के उपाय: दुकान में बिक्री बढ़ाने का सबसे बढ़िया यह उपाय है कि बिज़नेस प्रोडक्ट की बिक्री ऑनलाइन की जाए।

ऑनलाइन कपड़े कैसे बेचें : ऑनलाइन प्रोडक्ट बेचने में कपड़े का बिजनेस करना बहुत आसान है। ऑनलाइन कपड़े बेचने के लिए सर्वप्रथम कपड़ा बनाने वालों से या कपड़ों के कारोबारी से संपर्क करके एग्रीमेंट करना होता है। इसके बाद खुद की वेबसाइट बनाकर या किसी ई-कामर्स वेबसाइट से जुड़कर ऑनलाइन कपड़े बेचे जा सकते हैं। यह ध्यान रखें कि खुद से ऑनलाइन बिजनेस करने पर मुनाफा अधिक होता है, जबकि किसी दूसरे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग करने पर मुनाफा बट जाता है।

ऑनलाइन बिक्री कैसे करें : ऑनलाइन बिक्री करने के लिए सर्वप्रथम वेबसाइट या मोबाइल ऐप होना चाहिए। अगर यह संभव नहीं है तो, किसी अन्य ई-कामर्स वेबसाइट या ऐप से जुड़कर ऑनलाइन बिक्री किया जा सकता है।

ऑनलाइन व्यापार कैसे करे : सबसे पहले आपको अपना प्रोडक्ट बनाना या खोजना होगा फिर उसे ऑनलाइन प्लेटफार्म जैसे अमेज़न और फ्लिपकार्ट पर लिस्ट कर के बेच सकते हैं।

मार्केटिंग को बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग -

1. **ब्रांडिंग के लिए 4 लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म** - (i) फेसबुक, (ii) इंस्टाग्राम, (iii) लिंक्डइन (iv) ट्विटर)
2. **सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से जुड़े**- (i) परिवारों और मित्रों द्वारा उपयोग (ii) अधिकतर उपभोक्ता युवा (iii) ध्यान रिश्ते जोड़ने पर (iv) यहाँ लोग लम्बे पोस्ट पढ़ सकते हैं (v) लोगों से व्यक्तिगत रूप से जुड़े।
3. **instragraam का कैसे उपयोग करें** - (i) कम उम्र उपभोक्ता (ii) उद्देश्य ध्यान खीचना (iii) इमेज और विडियो प्रारूप छोटे संदेश के साथ (iv) पोस्ट में अनोखापन एवं कलात्मकता होना चाहिये (iv) आराम से समझ आने वाला संदेश आकर्षक हैशटैग के साथ।
4. **linked** - (i)व्यापारिक एवं व्यावसायिक मंच (ii)संदेश ज़्यादातर पेशे एवं व्यापार से सम्बंधित (iii) उद्देश्य व्यावसायिक सम्बंध बनाना (iv) भाषा औपचारिक एवं पेशेवर (v) पोस्ट सीधी हो, ना कि कलात्मक।

5. **twiter-** (i) ट्रेंडिंग न्यूज़ और विचार साझा करने हेतु (ii) उपभोक्ता पढ़े लिखे वर्ग के (iii) सीमित अक्षर की अनुमति (iv) एलिवेटर पिच का प्रयोग: भाषा तेज और संक्षिप्त (v) संदेश लघु और मुद्दे पर।

भारतीय ज्ञान परम्परा :

कालिदास :

" पुरा कवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावात् अनामिका सार्थवती बभूव ॥ "

श्रीमद्भगवतगीता

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वंद्वः सामासिकस्य च।
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः ॥1

मैं अक्षरों में ओंकार हूँ औरसमासों में द्वंद्व नामक समास हूँ। अक्षयकाल अर्थात् काल का भी महाकाल तथासब ओर मुखवाला, विराट्स्वरूप, सबका धारण-पोषण करने वाला भी मैं ही हूँ॥

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम्।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा ॥2

मैं सबका नाश करने वाला मृत्युऔर उत्पन्न होने वालों का उत्पत्ति हेतु हूँ तथा स्त्रियों में कीर्ति, श्री, वाक्, स्मृति, मेधा, धृति और क्षमा हूँ॥

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः॥3

तथा गायन करने योग्य श्रुतियोंमें मैं बृहत्साम और छंदों में गायत्री छंद हूँ तथा महीनों में मार्गशीर्षऔर ऋतुओं में वसंत मैं हूँ॥

द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् ॥ 4

मैं छल करने वालों में जुआ औरप्रभावशाली पुरुषों का प्रभाव हूँ। मैं जीतने वालों का विजय हूँ, निश्चयकरने वालों का निश्चय और सात्त्विक पुरुषों का सात्त्विक भाव हूँ॥

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥ 5

वृष्णिवंशियों में वासुदेव अर्थात् मैं स्वयं तेरा सखा, पाण्डवों में धनञ्जय अर्थात् तू, मुनियों में वेदव्यास और कवियों में शुक्राचार्य कवि भी मैं ही हूँ॥

रामचरितमानस

सावधान मन करि पुनि संकर। लागे कहन कथा अति सुंदर ॥
कपि उठाई प्रभु हृदयँ लगावा। कर गहि परम निकट बैठावा ॥

फिर मन को सावधान करके शंकरजी अत्यंत सुंदर कथा कहने लगे- हनुमानजी को उठाकर प्रभु ने हृदय से लगाया और हाथ पकड़कर अत्यंत निकट बैठा लिया॥

ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल।
तव प्रभावँ बड़वानलहि जारि सकइ खलु तूल ॥

हे प्रभु! जिस पर आप प्रसन्न हों, उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। आपके प्रभाव से रूई बड़वानल को निश्चय ही जला सकती है॥

अब बिलंबु केह कारन कीजे। तुरंत कपिन्ह कहँ आयसु दीजे॥

कौतुक देखि सुमन बहु बरषी। नभ तें भवन चले सुर हरषी॥

अब विलंब किस कारण किया जाए। वानरों को तुरंत आज्ञा दो। यह लीला देखकर, बहुत से फूल बरसाकर और हर्षित होकर देवता आकाश से अपने-अपने लोक को चले॥

सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस

राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास॥

मंत्री, वैद्य और गुरु- ये तीन यदि भय या आशा से प्रिय बोलते हैं, तो राज्य, शरीर और धर्म- इन तीन का शीघ्र ही नाश हो जाता है॥

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।

सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत॥

हे नाथ! काम, क्रोध, मद और लोभ, ये सब नरक के रास्ते हैं, इन सबको छोड़कर श्री रामचंद्रजी को भजिए, जिन्हें संत भजते हैं॥

तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला॥

ब्रह्म अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित अनादि अनंता॥

हे तात! राम मनुष्यों के ही राजा नहीं हैं। वे समस्त लोकों के स्वामी और काल के भी काल हैं। वे (संपूर्ण ऐश्वर्य, यश, श्री, धर्म, वैराग्य एवं ज्ञान के भंडार) भगवान् हैं, वे निरामय (विकार रहित), अजन्मे, व्यापक, अजेय, अनादि और अनंत ब्रह्म हैं॥

गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपा सिंधु मानुष तनुधारी॥

जन रंजन भंजन खल ब्राता। बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता॥

उन कृपा के समुद्र भगवान् ने पृथ्वी, ब्राह्मण, गो और देवताओं का हित करने के लिए ही मनुष्य शरीर धारण किया है। हे भाई! सुनिए, वे सेवकों को आनंद देने वाले, दुष्टों के समूह का नाश करने वाले और वेद तथा धर्म की रक्षा करने वाले हैं॥

ताहि बयरु तजि नाइअ माथा। प्रनतारति भंजन रघुनाथा॥

देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही। भजहु राम बिनु हेतु सनेही॥

वैर त्यागकर उन्हें मस्तक नवाइए। वे श्री रघुनाथजी शरणागत का दुःख नाश करने वाले हैं। हे नाथ! उन प्रभु (सर्वेश्वर) को जानकीजी दे दीजिए और बिना ही कारण स्नेह करने वाले श्री रामजी को भजिए॥

सुमति कुमति सब कें उर रहहीं। नाथ पुरान निगम अस कहहीं॥

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना। जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना॥

हे नाथ! पुराण और वेद ऐसा कहते हैं कि सुबुद्धि और कुबुद्धि सबके हृदय में रहती है, जहाँ सुबुद्धि है, वहाँ नाना प्रकार की संपदाएँ रहती हैं और जहाँ कुबुद्धि है वहाँ परिणाम में विपत्ति रहती है॥

उमा संत कइ इहइ बड़ाई। मंद करत जो करइ भलाई॥

तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा। रामु भजें हित नाथ तुम्हारा॥

शिवजी कहते हैं, हे उमा ! संत की यही बड़ाई है कि वे बुराई करने पर भी भलाई ही करते हैं। विभीषणजी ने कहा, आप मेरे पिता के समान हैं, मुझे मारा सो तो अच्छा ही किया, परंतु हे नाथ ! आपका भला श्री रामजी को भजने में ही है॥

बोध वाक्य: "आलस्य आपकी मृत्यु के समान है, केवल उद्योग ही आपके लिए जीवन है।" स्वामी रामतीर्थ

बोध कथा:

सात पत्नियां

अनाथ पिण्डक सेठ के घर बुद्ध पधारे। वे सेठ से बातचीत कर रहे थे, इतने में उनके घर से लड़ाई झगड़े की आवाजें सुनाई दी। बुद्ध के पूछने पर सेठ ने बताया कि वे अपनी बहू सुजाता की वजह से बहुत परेशान हैं वह बडी घमंडी है, पति का अनादर करती है और हमारी बात भी नहीं मानती। इसी वजह से घर में हमेशा झगड़े का वातावरण रहता है।

बुद्ध ने बहू को अपने पास बुलाया। एक प्रश्न किया, बताओ तुम कैसी पत्नी हो ? वधिकमा यानी कसाई की तरह हो अथवा चोरसमा यानी चोर की तरह। प्रमादसमा यानी आलसी हो या फिर मातृसमा यानी मां के समान हो अथवा भगिनीसमा यानी बहन के समान। क्या तुम अपने पति के लिए सचीसमा यानी कि इंद्रा पत्नी समान हो अथवा दासी के समान। इन ग्रहणियों में से तुम किस श्रेणी में आती हो ? सुजाता बोली- मैं आपकी बात का अर्थ नहीं समझी। कृप्या अपना आशय स्पष्ट करें। बुद्धबोले, जो गृहिणी हमेशा क्रोध करती है, जो पति से बदला लेना चाहती है, वह कसाई के समान है। इसलिए ऐसी स्त्रियों को वधिकसमा कहा गया है, जो अपने पति की सम्पति का सदुपयोग नहीं करती, वरन् उसे अपने मौज-शौक में खर्च करती है, वह चोरसमा है, जो पत्नी आलसी होती है, वह प्रमादसमा है। जो हमेशा अपने पति की चिंता करती है, अपने प्राणों से भी अधिक उसे चाहती है, वह पत्नी मातृसमा यानी माँ के समान है। जो पत्नी बहन की तरह अपने पति से स्नेह करती है और उससे लज्जा भी रखती है, वह भगिनीसमा है। जो पत्नी अपने पति को सखी मान, मित्रभाव रखती है, वह सखीसमा है।जिस गृहिणी को पति हमेशा कष्ट-क्लेश देता है, फिर भी चुपचाप बिना क्रोध किए हमेशा पति की आज्ञा का पालन करती है, वह दासीसमा है। सुजाता बताओ भला,तुम इनमें से कौन सी पत्नी हो ? बुद्ध की यह बात सुनते ही सुजाता की आखें भर आई। वह बुद्ध के चरणों में गिरी और बोली भगवन् ! मुझे क्षमा करें। इनमें से मैं कौन हूँ, यह बताने में मैं असमर्थ हूं, किन्तु आपको यह विश्वास दिलाती हूं कि आज से मैं अपने पति और बड़ों का सदैव आदर करुंगी। उनका कभी भी मन नहीं दुखाऊंगी। आज से मैं अपने को घर की लक्ष्मी समझ उसकी देखभाल करूंगी।

मासिक गीत / गान :

आँधी चाहे तूफान मिले, चाहे जितने व्यवधान मिले,
बढ़ना ही अपना काम है, बढ़ना ही अपना काम है।
हम नई चेतना की धारा, हम अंधियारे में उजियारा,
हम उस ब्यार के झोंखे हैं, जो हरले सबका दुःख सारा
बढ़ना ही अपना काम है, बढ़ना ही अपना काम है।।
बढ़ना है शूल मिले तो क्या? पथ में अंगार जले तो क्या?
जीवन में कहाँ विराम है? बढ़ना ही अपना काम है,
बढ़ना ही अपना काम है। हम अनुयायी उन पावों के,
आदर्श लिये जो खड़े रहे, बाधाएं जिन्हें डिगा न सकी,
जो संघर्ष पर अड़े रहे। बढ़ना ही अपना काम है,
बढ़ना ही अपना काम है।

----------00----------

जून

ज्येष्ठ: प्राचीनकाल से ही विश्व की जिन गिनी चुनी सभ्यताओं में चिंतन मनन को सर्वाधिक प्रमुखता मिली उनमें भारतीय संस्कृति प्रमुख है। आध्यात्म हो या विज्ञान, दर्शन हो या साहित्य या जीवन के अन्य क्षेत्र सभी में भारतीय चिंतन मनन ने असीमित ऊँचाइयों का संस्पर्श किया है। आध्यात्म और दर्शन के क्षेत्र में विशेष रूप से यह चिंतन मनन इस सीमा तक गया कि प्राय:ऐसा प्रतीत होता है कि संभवत:कोई छोर अछूता नहीं रहा। भारतीय षटदर्शन से प्राय:सभी परिचित हैं जिनमें भौतिकता और अलौकिकता के अस्तित्व और उनके बीच पारस्पारिक सम्बन्धों पर विशद् वैचारिक मंथन मिलता है। दर्शन उच्चस्तरीय विचारों की वह प्रणाली है, जिसमें आभ्यांतरिक अनुभव तथ्य तर्कपूर्ण कथनों से वर्ण्य विषय को व्यक्त किया जाता है। प्राचीन काल से ही अनेकानेक विद्वान और दार्शनिक इस महान परम्परा को निरंतर आगे बढाते आये हैं।

ज्येष्ठ माह में परम्परा से अमावस्या, शनि जयंती, वट सावित्री, ईद उल फ़ितर, महाराणा प्रताप जयंती, गंगा दशहरा, गायत्री जयंती, निर्जला एकादशी, कबीरदास जयंती आते हैं। इन दिवसों का जीवन में अपना महत्व है। जहां जयंतियां भारतीय परम्परा कीओर ले जाती हैं, वही योग दिवस वैश्विक एकात्मता का स्मरण कराता है।

शिक्षक विद्यार्थियों के करणीय कार्यक्रम: (i) महाराणा प्रताप जयंती (ii) कबीरदास जयंती (iii) 21 जून अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। (iv) प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम एक पौधा रोपित और संरक्षित करे ।

रोजगार एवं स्वरोजगार की अध्ययन सामग्री :

अथ योगानुशासनम्

भारतीय ज्ञान परंपरा में योग को ध्येय मुक्ति अथवा ब्रह्म का साक्षात्कार होना बताया गया है। इस ब्रह्म को साधक अपनी साधना के आधार पर प्राप्त करता है। इसलिए कुछ के लिए यह देवता हैं तो कुछ के लिए ईश्वर और कुछ श्रेष्ठ साधकों के लिए यह ब्रह्म है। साक्षत्कार की अवस्था के आधार पर इसे अनुभूत किया जा सकता है। योगानुशासन ही इसका पाथेय है।

ईश्वर कौन है - 'क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्ट: पुरुषविशेष ईश्वर:'। क्लेश, कर्म, विपाक और आशय से जो (अपरामृष्ठ) असम्बद्व है, वह ईश्वर है। ईश्वर ज्ञान, बैर, यश, ऐश्वर्य की पराकाष्ठा है। क्या ईश्वर ज्ञान-प्रवचन ,मेधा -बुद्धि , यश-ऐश्वर्य से मिलता है ? 'नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुनाश्रुतेन।'(मुण्ड.) मुन्डकोपनिषद कहता है, नहीं। ईश्वर स्वयं अनादि है, क्योंकि वह सब के आदि हैं (योग,10-2-3) वह कालातीत है। उसका वाचक 'प्रणव' है। 'तस्य वाचक: प्रणव:' (प्रणव ऊँकार है) (प्रश्नोपनिषद में पाँचवें प्रश्नोत्तर में और माण्डूक्योपनिषद में ऊँकार की उपासना का विषय विस्तार से है) ऊँ, परमेश्वर का वेदोक्त नाम है (गीता-17-23, कठो.1/2/15-17) साधक को ईश्वर के नाम का जप और उसके स्वरूप का स्मरण चिन्तन करना चाहिए। महर्षि शाण्डिल्य ने कहा है- ''सा परानुरक्तिरीश्वरे''। देवर्षि नारद ने भक्तिसूत्र में कहा है- 'सात्वस्मिन परमप्रेमरूपा च'। अर्थात उस परमेश्वर में अतिशय प्रेमरूपता ही भक्ति है। यह अमृत स्वरूपा है-'अमृतस्वरूपा च'। ईश्वर की भक्ति में आयु, रूप आदि का कोई अर्थ नही होता है-

''व्याधस्याचरणं ध्रुवस्य च वयो विद्या गजेन्दस्य का, का जातिर्विदुरस्य यादवपतेरुप्रस्य किं पौरषम्।
कुब्जाया: कामनीरूपमधिकं किं तत्सुदाम्नो धनं, भक्त्या तुश्यति केवलं न च गुणैर्भक्ति प्रियो माधव:।।

श्रीमद्भागवत में प्रहलाद ने कहा है- 'श्रवणं कीर्तनं विष्णो: स्मरणं पादसेवनम।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम'। ।(7/5/23)

सूक्ष्म ध्येय पदार्थ क्या हैं- योग में प्रत्याहार महत्व पूर्ण अंग है। सभी इन्द्रिया जब अपने-अपने मध्यम से रसों का पान कराती है, तो उसे प्रत्याहार के माध्यम से ही नियंत्रित किया जाता है। इसके लिय सूक्ष्म ध्येय पदार्थ को समझाना आवश्यक है। पृथ्वी का सूक्ष्म विषय गंध तन्मात्रा, जल का रस तन्मात्रा, तेज का रूप, वायु का स्पर्श, आकाश का शब्द। इनके सूक्ष्म विषय और मन सहित इन्द्रियों का सूक्ष्म विषय अहंकार, अहंकार का महतत्व, और महतत्व का सूक्ष्म विषय कारण प्रकृति है। ''ता एव सबीज: समाधि:''। निर्वितर्क और निर्विचार समाधियाँ निर्विकल्प होने पर भी निर्बीज नहीं हैं। ये सब सबीज समाधि हैं। अत: कैवल्य अवस्था नहीं है। निर्विचार समाधि में ऋतम्भरा की स्थिति हो जाती है।

योग और बुद्धि - (i) **श्रुतिबुद्धि-** वेद-शास्त्रों में किसी वस्तु के स्वरूप का वर्णन सुनने से जो तद्विषयक निश्चित होता है, उसे श्रुतिबुद्धि कहते है **(ii) अनुभव बुद्धि-** जो अनुमान / प्रभाव से जिस स्वरूप का अनुभव होता है। **(iii) ऋतम्भरा-** श्रुति और अनुभव दोनों के शून्य होने पर बुद्धि ऋतम्भरा होती है। **(iv) कर्माषय-** मनुष्य जिस किसी वस्तु को अनुभव करता है, जो भी क्रिया करता है, उन सब के संस्कार अन्त:करण में संग्रह होते हैं, ये ही मनुष्य को संस्कार चक्र में भटकाते हैं। इसके नाश से ही मनुष्य मुक्ति लाभ कर सकता है। ऋतम्भरा बुद्धि के प्रकट होने पर साधक को प्रकृति के यथार्थ रूप का भान हो जाता है, तब उसे वैराग्य होता है। ''तस्यापि निरोधे सर्वनिरोधान्निर्बीज: समाधि:।''

कैवल्य अवस्था- जब ऋतम्भरा (सत्य) के प्रज्ञा जनित संस्कार से अभाव होता है तथा समस्त आसक्ति समाप्त हो जाती है, तब संस्कार के बीज का अभाव हो जाता है। इस अवस्था को कैवल्य-अवस्था कहते हैं। जब तक दर्शन (ज्ञान) शक्ति से मनुष्य इस प्रकृति के नाना रूपों को देखता रहता है, तब तक तो भोगों को भोगता रहता है। जब इनके दर्शन से विरक्त होकर अपने स्वरूप को झाँकता है तब स्वरूप दर्शन हो जाता है (योग 3.35) फिर संयोग की आवश्यकता न रहने से उसका अभाव हो जाता है। यही पुरुष की कैवल्य अवस्था है। (3.34)

विवेक ज्ञान- प्रकृति तथा उसके कार्य- बुद्धि, अहंकार, इन्द्रियाँ और शरीर इन सब के यथार्थ स्वरूप् का ज्ञान हो जाने से तथा आत्मा इनसे सर्वथा भिन्न और असंग है, आत्मा का इनके साथ कोई सम्बध नहीं है, इस प्रकार पुरुष के स्वरूप का जब अलग-अलग यथार्थ ज्ञान होता है, इसी का नाम विवेकज्ञान है। (योग 3.34) उस समय चित्त विवेकज्ञान में निमग्न और केवल्य के अभिमुख रहता है। यह ज्ञान जब समाधि की निर्मज्जता-स्वच्छता होने पर पूर्ण और निश्चल हो जाता है, तब वह अविप्लव विवेक ज्ञान कहलाता है। यही मुक्ति का उपाय है। उसके बाद चित्त अपने आश्रय रूप महत्व आदि के सहित अपने कारण में विलीन हो जाता है तथा प्रकृति का जो स्वाभाविक परिणाम क्रम है, वह उसके लिये बंद हो जाता है। (योग3.34)

प्रज्ञा क्या है- जब निर्मल और अचल विवेक ख्याति के द्वारा योगी के चित्त का आवरण और मल सर्वथा नष्ट हो जाता है (योग 4.31) तब सात प्रकार की उत्कर्ष अवस्था वाली प्रज्ञा (बुद्धि) उत्पन्न होती है। यह दो प्रकार की होती है - पहली चार प्रकार की कार्य विमुक्ति प्रज्ञा और अन्त की तीन चित्त मुक्ति की द्योतक है। (1) **कार्य विमुक्ति प्रज्ञा:** यानी कर्तव्य शून्य अवस्था। इसके चार भेद इस प्रकार हैं- (i) ज्ञेयशून्य अवस्था- जो कुछ गुणमय दृश्य है, वह सब अनित्य और परिणामी है, यह पूर्णतया जान लिया। (ii) हेयशून्य अवस्था -जिसका अभाव करना था कर दिया। (iii) प्राप्य प्राप्त अवस्था- जो कुछ प्राप्त करना था, प्राप्त कर लिया। (iv) चिकीर्षाशून्य अवस्था- जो कुछ करना था, कर लिया ,अब कुछ करना शेष नही। (2) **चित्त विमुक्ति प्रज्ञा:** इसके तीन भेद हैं- (i) चित्त की कृतार्थता- चित्त ने अपना अधिकार भाग और अपवर्ग देना पूरा कर दिया, अब उसका कोई प्रयोजन शेष नहीं रहा। (ii) गुणलीनता-चित्त अपने कारण रूप गुणों में लीन हो रहा है, क्योंकि अब उसका कोई कार्य शेष नहीं रहा। (iii) आत्मस्थिति- पुरुष सर्वथा गुणों से अतीत होकर अपने स्वरूप में अचल भाव से स्थित हो गया। उक्त सात प्रकार की प्रान्त भूमि प्रज्ञा को अनुभव करने वाला योगी कुशल (जीवनमुक्त) कहलाता है और चित्त जब अपने कारण में लीन हो जाता है, तब भी कुशल (विदेह मुक्त) कहलाता है।

निर्बीज समाधि प्राप्ति करने के उपाय- (1) **क्रियायोग-** ''तप:स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि क्रियायोग:। तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर शरणागति ये तीनों क्रियायोग हैं। ये तीनों ही आदि योग के नियम के अंतर्गत आते हैं। (i) तप- वर्ण, आश्रम, परिस्थिति और योग्यता

के अनुसार स्वधर्म का पालन करना और उसके करने में शारीरिक, मानसिक कष्ट सहने की सामर्थ्य 'तप' है। गीता में तप तीन प्रकार के बताये गए हैं-(i) देव, ब्राह्मण,गुरु, माता -पिता के प्रति पूज्य भाव रखना तथा पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा शारीरिक तप माना गया है। (ii) उत्तेजित न करनेवाले , दूसरों को प्रिय लगाने वाले ,तथा स्वाध्याय करना वाणी का तप कहलाता है। (iii) संतोष , सरलता , गंभीरता, आत्म-संयम एवं जीवन की शुद्धि ये मन की तपस्या हैं। (2) स्वाध्याय- यह वाणी का तप है। अध्ययन (वेद, शास्त्र, महापुरूषों के जीवन चरित्र) तथा ऊँकार आदि किसी नाम का जप 'स्वाध्याय' है। (3) ईश्वर प्रणिधान- ईश्वर के नाम, गुण, लीला, ध्यान, प्रभाव में अपने को पूर्णत: समर्पित कर देना ईश्वर प्रणिधान है। तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान के माध्यम से अर्थात नियमों के पालन अथवा क्रियायोग से हम अपने क्लेशों को नष्ट करते हैं और क्लेशों से मुक्त होते हैं।

क्लेश क्या है- 'अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेषा: क्लेषा:''। योग और अध्यात्म में अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ये पाँच क्लेश कहलाते हैं। **(1)** अविद्या क्या है- ''अनित्याशुचिदु:खानात्मसु नित्यशुचि सुखात्मख्यातिरविद्या'। अनित्य, अपवित्र, दु:ख और अनात्मा में नित्य, पवित्र, सुख और आत्मा का आत्मभाव की अनुभूति 'अविद्या' है। अविद्या जिनका कारण हैं- ''अविद्या क्षेत्रमुत्तरेशां प्रसुप्ततनुविच्छिन्नोद्वाराणाम'- **(i) प्रसुप्त-** चित्त में विद्यमान रहते हुए जो क्लेश अपना कार्य नहीं करता, वह प्रसुप्त है, ऐसा कहा जाता है। प्रलय काल और सुषुप्ति अवस्था में चारों क्लेश प्रसुप्त अवस्था में रहते है। (ii) तनु- क्लेशों में जो कार्य करने की शक्ति है जब उसका योग के साधनों से ह्रास कर दिया जाता है तब वे शक्तिहीन होकर 'तनु' अवस्था में रहते हैं। (iii) विच्छिन- जब कोई क्लेश उदार होता है उस समय दूसरा क्लेश दब जाता है, उसे 'विच्छिन्न' कहते हैं। (iv) उदार- जिस समय जो क्लेश अपना कार्य कर रहा हो उस समय उसे उदार कहते हैं। **(2)** अस्मिता क्या है- ''दृगदर्शन शक्त्योरेकात्मतेवास्मिता''। अविद्या के नाश होने से 'अस्मिता' का नाश होता है। दृक शक्ति अर्थात दृष्टा 'पुरुष' और दर्शन शक्ति अर्थात बुद्धि दोनों की एकता का प्रतीत होना अस्मिता है, जबकि यह सम्भव नहीं। पुरुष चेतन है, बुद्धि जड़ है अत: दोनों की एकता भ्रम है, अविद्या है। इस अविद्या का नाश कर 'कैवल्य' की स्थिति' प्राप्त की जा सकती है। **(3)** राग क्या है- 'सुखानुशयी राग:'। सुख की प्रतीत के पीछे रहने वाला क्लेष 'राग' है। **(4)** द्वेष क्या है- 'दु:खानुशयी द्वेष'। दु:ख की प्रतीत के पीछे रहने वाला क्लेश 'द्वेष' है। **(5)** अभिनिवेश क्या है- जो मूढ़ एवं विद्वान दोनों में समान भाव से रहता है 'अभिनिवेश' कहलाता है। जैसे -मृत्युभय। इन सभी क्लेशों को क्रियायोग के (तप:, स्वाध्याय, शरणागति) के अलावा ध्यान योग से भी दूर किया जाता है।

क्लेश की वृतियाँ: क्लेश दो वृतियाँ होती हैं-(1) स्थूल और (2) सूक्ष्म। क्रिया योग द्वारा स्थूल वृत्तियों को समाप्त किया जाता है। ध्यान योग द्वारा इन्हीं शेष स्थूल वृत्तियों को सूक्ष्म बनाया जाता है। तब निर्बीज समाधि की प्राप्ति होती है। चूकि कर्मों की जड़ पाँच क्लेशों (अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश) में है, अत: इनके संचित रहने पर (कर्माशय में) बार-बार जन्म होता है। अविद्या आदि के नष्ट होने पर कर्माशय का भी नाश हो जाता है। कर्माशय के संस्कारों को दृश्य और अदृश्य (वर्तमान और भावी) दोनों रूपों में भोगा जाता है। किन्तु इसे अर्थात क्लेशों की स्थूल वृत्तियों को 'ध्यानहेयास्तदृवत्तय:' द्वारा सूक्ष्म बना दिया जाता है।

दु:ख के रूप- परिणाम दु:ख, ताप दु:ख, संस्कार दु:ख, गुणवृत्ति विरोध सब में विद्यमान रहते हैं।

दर्शन के चार प्रतिपाद्य विषय हैं- (1) हेय- दु:ख का वास्तविक स्वरूप क्या है, जो हेय अर्थात त्याज्य है। (2) हेय हेतु- दु:ख कहाँ से उत्पन्न होता है, इसका वास्तविक कारण क्या है, जो हेय अर्थात त्याज्य दु:ख का वास्तविक हेतु है। (3) हान- दु:ख का नितान्त अभाव क्या है, अर्थात 'हान' किस अवस्था का नाम है। हानम, हान पुनर्जन्मादि भावी दुखों का अत्यन्त अभाव। (4) हानोपाय- हानोपाय अर्थात् नितान्त दु:खनिवृताक साधन क्या है।

कर्म क्या है- कर्म चार प्रकार के माने जाते हैं- पापकर्म, पुण्यकर्म, पाप-पुण्य कर्म, युक्तकर्म, पाप-पुण्य रहित कर्म। (योग,4-7) इसी तरह कर्म के फल और आशय होते हैं। कर्म फल का नाम क्या है ? कर्म के फल का नाम 'विपाक' कहलाता है। (योग, 2-13) आशय क्या है- कर्म संस्कार के समुदाय का नाम 'आशय' है। सातिशय- जिससे बढक़र कोई दूसरी वस्तु हो, वह सातिशय है। निरतिशय- जिससे बढक़र कोई न हो, वह निरतिशय है।

सात्विक गुणों के भेद- ये चार हैं- विशेष, अविशेष, लिंगमात्र और अलिंग। (1) विशेष- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश (पांच स्थूल, पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेन्द्रिय और मन ये सोलह विशेष)। (2) अविशेष- शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ये पाँच तन्मात्राएं हैं। इन्हें सूक्ष्म महाभूत भी कहते हैं। अहंकार (जो मन और इन्द्रियों का कारण है) जो इन्द्रिय गोचर नहीं अविशेष है। (3) लिंगमात्र- उपर्युक्त बाइस तत्वों के कारणभूत जो महतत्व है, उसका नाम बुद्धि है। उसका नाम लिंगमात्र है। (कठ.1.3.10, गीता 13.5) (4) अलिंग- मूल प्रकृति के तीनों गुणों (सत, रज, तम) की साम्यावस्था तथा महतत्व जिसका पहला परिणाम (कार्य) है, उपनिषद, गीता जिसे अलिंग कहते हैं। (कठ.1.3.11, गीता 13.5) उपर्युक्त चारों सात्वादि गुण हैं। साम्यावस्था को प्राप्त गुणों के स्वरूप की अभिव्यक्ति नहीं होती, इसलिए इस प्रकृति को चिन्ह रहित (अव्यक्त) कहते हैं।

जीवनमुक्त योगी के लक्षण- विदेह, मुक्त / कर्तव्य शून्य अवस्था के चार भेद इस प्रकार हैं- (i) ज्ञेय शून्य अवस्था (ii) हेय शून्य अवस्था (iii) प्राप्य प्राप्त अवस्था (iv) चिकीर्षा शून्य अवस्था। मुक्त जीव और ईश्वर में अन्तर क्या है- मुक्त जीव का कर्म से पीछे सम्बध था, भले ही वह वर्तमान में कर्म शून्य हो गया हो किन्तु ईश्वर का कभी कर्म से सम्बन्ध नहीं रहता है। इसीलिए मुक्त जीव 'पुरुष विशेष' कहलाता है। चित्तमुक्त - विमुक्त प्रज्ञा के तीन भेद हैं- (i) चित्त की कृतार्थता (ii) गुणलीनता (iii) आत्मस्थिति। ब्रह्म क्या गुरु है - सर्ग के आदि में उत्पन्न होने के कारण सब का गुरु ब्रह्म को माना गया है किन्तु वह काल से अवच्छेद है। (योग, 8-17) संयोग- स्वशक्ति (प्रकृति) और स्वामिशक्ति (पुरुष) इन दोनों के स्वरूप के प्राप्ति का जो कारण है, वह संयोग है।

सार : भारतीय आस्तिक षड्दर्शनों में से एक का नाम योग है। योग दार्शनिक प्रणाली, सांख्य स्कूल के साथ निकटता से संबन्धित है। ऋषि पतंजलि द्वारा व्याख्यायित योग संप्रदाय, सांख्य मनोविज्ञान और तत्वमीमांसा को स्वीकार करता है, योग और सांख्य एक दूसरे से इतने मिलते-जुलते है। उपनिषदों में ब्रह्माण्ड सम्बन्धी बयानों के वैश्विक कथनों में किसी ध्यान की रीति की सम्भावना के प्रति तर्क देते हुए कहते हैं कि नासदीय सूक्त किसी ध्यान की पद्धति की ओर ऋग्वेद से पूर्व भी इशारा करते हैं। सनातन वाङ्मय में, "योग" शब्द पहले कथा उपनिषद में प्रस्तुत हुआ ,जहाँ योग ज्ञानेन्द्रियों का नियंत्रण और मानसिक गतिविधि के निवारण के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है जो उच्चतम स्थिति प्रदान करने वाला माना गया है। महत्वपूर्ण ग्रन्थ जो योग की अवधारणा से सम्बंधित है वे मध्य कालीन उपनिषद ,महाभारत , भगवद्गीता एवं पतंजलि योग सूत्र हैं। पतंजलि, व्यापक रूप से औपचारिक योग दर्शन के संस्थापक माने जाते हैं। पतंजलि उनके दूसरे सूत्र में "योग" शब्द को परिभाषित करते हैं, जो उनके पूरे काम के लिए व्याख्या सूत्र माना जाता है। भगवदगीता बड़े पैमाने पर विभिन्न तरीकों से योग शब्द का उपयोग करता है। **कर्म योग :** इसमें व्यक्ति अपनी स्थिति के उचित और कर्तव्यों के अनुसार कर्मों का श्रद्धापूर्वक निर्वाह करता है। **भक्ति योग**: भगवत कीर्तन, इसे भावनात्मक आचरण वाले लोगों को सुझाया जाता है। **ज्ञान योग**: ज्ञान का योग अर्थात् ज्ञानार्जन करना।

भारतीय ज्ञान परम्परा :

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा प्रदीयते॥

श्रीमद्भगवतगीता

दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम्।
मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम्॥ 1

मैं दमन करने वालों का दंड अर्थात् दमन करने की शक्ति हूँ, जीतने की इच्छावालों की नीति हूँ, गुप्त रखने योग्य भावों का रक्षक मौन हूँ और ज्ञानवानों का तत्त्वज्ञान मैं ही हूँ॥

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम्॥ 2

और हे अर्जुन! जो सब भूतों की उत्पत्ति का कारण है, वह भी मैं ही हूँ, क्योंकि ऐसा चर और अचर कोई भी भूत नहीं है, जो मुझसे रहित हो ॥

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परन्तप ।

एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥ 3

हे परंतप! मेरी दिव्य विभूतियों का अंत नहीं है, मैंने अपनी विभूतियों का यह विस्तार तो तेरे लिए एकदेश से अर्थात् संक्षेप से कहा है॥

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।

तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम् ॥ 4

जो-जो भी विभूतियुक्त अर्थात् ऐश्वर्ययुक्त, कांतियुक्त और शक्तियुक्त वस्तु है, उस-उस को तू मेरे तेज के अंश की ही अभिव्यक्ति जान॥

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रंपश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम् ।

नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिंपश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप ॥ 5

हे सम्पूर्ण विश्व के स्वामिन्! आपको अनेक भुजा, पेट, मुख और नेत्रों से युक्त तथा सब ओर से अनन्त रूपों वाला देखता हूँ। हे विश्वरूप ! मैं आपके न अन्त को देखता हूँ, न मध्य को और न आदि को ही ॥

रामचरितमानस

सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी । मम पन सरनागत भयहारी॥

सरनागत कहुँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।

ते नर पावँर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि ॥

हे मित्र! तुमने नीति तो अच्छी विचारी, परंतु मेरा प्रण तो है शरणागतके भय को हर लेना!जो मनुष्य अपने अहित का अनुमान करके शरण में आए हुए का त्याग कर देते हैं, वे पामर हैं, पापमय हैं, उन्हें देखने में भी हानि है ॥

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू । आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू ॥

सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं । जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं॥

जिसे करोड़ों ब्राह्मणों की हत्या लगी हो, शरणमें आने पर मैं उसे भी नहीं त्यागता । जीव ज्यों ही मेरे सम्मुख होता है, त्यों ही उसके करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं ॥

पापवंत कर सहज सुभाऊ । भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ॥

जौं पै दुष्ट हृदय सोइ होई। मोरें सनमुख आव कि सोई ॥

पापी का यह सहज स्वभाव होता है कि मेरा भजन उसेकभी नहीं सुहाता। यदि वह (रावण का भाई) निश्चय ही दुष्ट हृदय का होता तोक्या वह मेरे सम्मुख आ सकता था ?

जग महुँ सखा निसाचर जेते । लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते॥

जौं सभीत आवा सरनाईं । रखिहउँ ताहि प्रान की नाईं ॥

क्योंकि हे सखे! जगत में जितने भी राक्षस हैं, लक्ष्मण क्षणभर में उन सबको मार सकते हैं और यदि वह भयभीत होकर मेरी शरणआया है तो मैं तो उसे प्राणों की तरह रखूँगा ॥

बहुरि राम छबिधाम बिलोकी । रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी॥

भुज प्रलंब कंजारुन लोचन । स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥

फिर शोभा के धाम श्री रामजी को देखकर वे पलक रोककर ठिठककर एकटक देखते ही रह गए। भगवान् की विशाल भुजाएँ हैं लाल कमल के समान नेत्र हैं और शरणागत के भय का नाश करने वाला साँवला शरीर है॥

श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबी र॥

मैं कानों से आपका सुयश सुनकर आया हूँ कि प्रभु भव के भय का नाश करने वाले हैं। हे दुखियों के दुःख दूर करने वाले और शरणागत को सुख देने वाले श्री रघुवीर! मेरी रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए॥

कहु लंकेस सहित परिवारा। कुसल कुठाहर बास तुम्हारा॥
खल मंडली बसहु दिनु राती। सखा धरम निबहइ केहि भाँती॥
मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती। अति नय निपुन न भाव अनीती॥

हे लंकेश! परिवार सहित अपनी कुशल कहो। तुम्हारा निवास बुरी जगह पर है, दिन-रात दुष्टों की मंडली में बसते हो। हे सखे ! तुम्हारा धर्म किस प्रकार निभता है? मैं तुम्हारी सब रीति जानता हूँ। तुम अत्यंत नीति निपुण हो, तुम्हें अनीति नहीं सुहाती॥

बरु भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ बिधाता॥
अब पद देखि कुसल रघुराया। जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया॥

हे तात! नरक में रहना वरन् अच्छा है, परंतु विधाता दुष्ट का संग (कभी) न दे। हे रघुनाथजी ! अब आपके चरणों का दर्शन कर कुशल से हूँ, जो आपने अपना सेवक जानकर मुझ पर दया की है॥

तब लगि कुसल न जीव कहुँ सपनेहुँ मन बिश्राम।
जब लगि भजत न राम कहुँ सोक धाम तजि काम॥

तब तक जीव की कुशल नहीं और न स्वप्न में भी उसके मन को शांति है, जब तक वह शोक के घर काम (विषय-कामना) को छोड़कर श्रीरामजी को नहीं भजता॥

तब लगि हृदयँ बसत खल नाना। लोभ मोह मच्छर मद माना॥
जब लगि उर न बसत रघुनाथा। धरें चाप सायक कटि भाथा॥

लोभ, मोह, मत्सर (डाह), मद और मान आदि अनेकों दुष्ट तभी तक हृदय में बसते हैं, जब तक कि धनुष-बाण और कमर में तरकस धारण किए हुए श्री रघुनाथजी हृदय में नहीं बसते॥

ममता तरुन तमी अँधिआरी। राग द्वेष उलूक सुखकारी॥
तब लगि बसति जीव मन माहीं। जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाहीं॥

ममता पूर्ण अँधेरी रात है, जो राग-द्वेष रूपी उल्लुओं को सुख देने वाली है। वह तभी तक जीव के मन मेंबसती है, जब तक प्रभु का प्रताप रूपी सूर्य उदय नहीं होता॥

अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज।
देखेउँ नयन बिरंचि सिव सेब्य जुगल पद कंज॥

हे कृपा और सुख के पुंज श्री रामजी! मेरा अत्यंत असीम सौभाग्य है, जो मैंने ब्रह्मा और शिवजी के द्वारा सेवित युगल चरण कमलों को अपने नेत्रों से देखा॥

सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ। जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ॥
जौं नर होइ चराचर द्रोही। आवै सभय सरन तकि मोही॥

श्री रामजी ने कहा, हे सखा ! सुनो, मैं तुम्हें अपना स्वभाव कहता हूँ, जिसे काक भुशुण्डि, शिवजी और पार्वतीजी भी जानती हैं। कोई मनुष्य जड़-चेतन जगत् का द्रोही हो, यदि वह भी भयभीत होकर मेरी शरण तक आ जाए,॥

तजि मद मोह कपट छल नाना । करउँ सद्य तेहि साधु समाना ॥

जननी जनक बंधु सुत दारा । तनु धनु भवन सुहृद परिवारा ॥

और मद, मोह तथा नाना प्रकार के छल-कपट त्याग दे तो मैं उसे बहुत शीघ्र साधु के समान कर देता हूँ। माता, पिता, भाई, पुत्र, स्त्री, शरीर, धन, घर, मित्र और परिवार ॥

सब कै ममता ताग बटोरी । मम पद मनहि बाँध बरि डोरी ॥

समदरसी इच्छा कछु नाहीं । हरष सोक भय नहिं मन माहीं ॥

इन सबके ममत्व रूपी तागों को बटोरकर और उन सबकी एक डोरी बनाकर उसके द्वारा जो अपने मन को मेरे चरणों में बाँध देता है । जो समदर्शी है, जिसे कुछ इच्छा नहीं है और जिसके मन में हर्ष, शोक और भय नहीं है ॥

अस सज्जन मम उर बस कैसें । लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें ॥

तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें । धरउँ देह नहिं आन निहोरें ॥

ऐसा सज्जन मेरे हृदय में कैसे बसता है, जैसे लोभी के हृदय में धन बसा करता है । तुम सरीखे संत ही मुझे प्रिय हैं। मैं और किसी के निहोरे से (कृतज्ञतावश) देह धारण नहीं करता ॥

सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम ।

ते नर प्रान समान मम जिन्ह कें द्विज पद प्रेम ॥

जो सगुण (साकार) भगवान् के उपासक हैं, दूसरे के हित में लगे रहते हैं, नीति और नियमों में दृढ़ हैं और जिन्हें ब्राह्मणों के चरणों में प्रेम है, वे मनुष्य मेरे प्राणों के समान हैं ॥

सुनहु देव सचराचर स्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥

उर कछु प्रथम बासना रही । प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥

हे देव! हे चराचर जगत् के स्वामी! हे शरणागत के रक्षक! हे सबके हृदय के भीतर की जानने वाले! सुनिए, मेरे हृदय में पहले कुछ वासना थी । वह प्रभु के चरणों की प्रीति रूपी नदी में बह गई ॥

अब कृपाल निज भगति पावनी । देहु सदा सिव मन भावनी ॥

एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा । मागा तुरत सिंधु कर नीरा ॥

अब तो हे कृपालु ! शिवजी के मन को सदैव प्रिय लगने वाली अपनी पवित्र भक्ति मुझे दीजिए। 'एवमस्तु' (ऐसा ही हो) कहकर रणधीर प्रभु श्री रामजी ने तुरंत ही समुद्र का जल माँगा॥

जदपि सखा तव इच्छा नहीं । मोर दरसु अमोघ जग माहीं॥

अस कहि राम तिलक तेहि सारा । सुमन बृष्टि नभ भई अपारा ॥

(और कहा-) हे सखा! यद्यपि तुम्हारी इच्छा नहीं है, पर जगत् में मेरा दर्शन अमोघ है । ऐसा कहकर श्रीरामजी ने उनको राजतिलक कर दिया । आकाश से पुष्पों की अपार वृष्टि हुई ॥

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ ।

सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥

बोध वाक्य: "श्रद्धा और विश्वास ऐसी जड़ी बूटियाँ हैं कि जो एक बार घोल कर पी लेता है वह चाहने पर मृत्यु को भी पीछे धकेल देता है।"-अमृतलाल नागर

बोध कथा:

अनोखा दण्ड

पुरानी बात है, दक्षिण भारत में वीरसेन नामक राजा रहता था। प्रतापी राजा को अपनी प्रशंसा प्रिय थी। चापलूस दरबारी इसका लाभ उठाते थे। उनके राजा में विष्णु देव नाम का एक भिक्षा यापन कर पेट भरने बाला विद्वान ब्राह्मण रहता था। घर में तीन दिन से बच्चे भूखे थे, पत्नी ने कहा कुछ न कुछ करो। पण्डित झल्लाकर बोले क्या करू ? चोरी ? जो भी करो,करो। बच्चों को भूखा मारना नहीं है। पण्डित जी राजमहल से अन्न चुरा लाये, किन्तु रात भर उन्हें नीद नहीं आई। सुबह राज दरबार में अपना कृत्य बताकर सजा की मांग की। राजा ने उन्हें ससम्मान बिठाया और कहा सजा अवश्य मिलेगी, किन्तु आप को नहीं मुझे स्वयं को। आज से जब तक यह सुनिश्चित नहीं हो जायेगा कि हमारे राज्य में कोई भूखा तो नहीं सो रहा है, तब तक मैं स्वयं भोजन नहीं करूंगा।

माह का गीत /गान :

करवट बदल रहा है देखो भारत का इतिहास।
जाग उठा है हिन्दु हृदय में विश्व विजय विश्वास ।।

सदियों से विस्मृत गौरव का भारत माँ परिचय देगी।
सौम्य शान्त सुखदायी जननी नवयुग नवजीवन देगी।
उस जीवन-दर्शन से होगा मानव धर्म विकास।
पश्चिम के असफल चिंतन का शनैः शनैः हो ह्रास ।।

ग्रीक मिटे यूनान मिट गये भरतभूमि है अविनाशी।
आदि अनादि अनंत राष्ट्र है संस्कृति शुचिता अभिलाषी।
भोगवाद के महल ढह रहे बदल रहा इतिहास।
बुझा सके हिन्दुत्व सुधा ही अब वसुधा की प्यास ।।

सत्रह बार क्षमा अरिदल को ऐसी भूल न अब होगी।
कोटि कोटि बाँहोंवाली माँ ना अबला कहलायेगी।
देश विघातक षड्यंत्रों का निश्चित निकट विनाश।
एक अखंडित भारत देगा अनुपम विमल प्रकाश ।।

----------00----------

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानानामुपासते ।।

----------00----------

आलोक -

- स्वामी विवेकानन्द कॅरियर मार्गदर्शन योजना एवं कॅरियर मित्र के उद्देश्यों एवं गतिविधियों की जानकारी दी जाए।
- सुभाषित पंक्तियों और बोध वाक्यों में जीवन का सार होता है, इनमें अगाध जीवनानुभव होता है, इनको समझने से न केवल विद्यार्थी के चरित्र का निर्माण होगा, अपितु वे इनसे जीवन में मार्गदर्शन भी प्राप्त कर सकेंगे इसलिए सभी विद्यार्थियों को सुभाषित और बोध वाक्यों तथा बोध कथाओं का मर्म समझाते हुए इनको कंठस्थ भी कराया जाए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 को ध्यान में रखते हुए आत्मनिर्भर भारत और आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संकल्प बढ़ाया जाए। एक साल में सर्टिफिकेट, दो साल में डिप्लोमा एवं तीन साल में डिग्री सहित मल्टीपल एंट्री, मल्टीपल एग्जिट सिस्टम औरचॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस)की जानकारी प्रत्येक विद्यार्थी को दी जाए।
- व्याख्यानों हेतु बाह्य विशेषज्ञों की सहायता के लिए भोपाल कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है। महाविद्यालय के प्राध्यापकों /सहायक प्राध्यापकों के माध्यम से कक्षावार विद्यार्थियों को अभ्यास करवाया जाए ताकि वे अपनी क्षमता एवं रुचि को पहचान पायें।
- विद्यार्थियों को कॅरियर के प्रति जागरूक बनाने हेतु सप्ताह के हर शनिवार को विशेषज्ञों की सहायता से संकायवार प्रेरणात्मक व्याख्यानों का आयोजन ऑनलाइन/ऑफ़लाइन किया जाए तथा संबंधित संकाय में उपलब्ध कॅरियर अवसरों की अनिवार्यतः जानकारी दी जाए।
- संकाय और कक्षावार विद्यार्थियों से प्लेसमेंट हेतु उनकी रुचि, रुझान एवं कौशल की जानकारी लिखित में प्राप्त की जाए तथा महाविद्यालय में इसका संधारण किया जाए। उक्त जानकारी लेते समय जिले, प्रदेश एवं देश में उपलब्ध रोजगार अवसरों/संस्थाओं की प्रोफाइल/जॉब प्रोफाइल की जानकारी भी विद्यार्थियों को दी जाए। प्लेसमेंट हेतु स्थानीय एवं बाह्य रोजगार प्रदाताओं को आमंत्रित किया जाए। प्रकोष्ठ की कॅरियर लायब्रेरी को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।
- प्राचार्यों से आग्रह है कि वे व्यक्तिगत रुचि लेकर अपने स्तर से इस हेतु कार्यवाही सुनिश्चित करने का कष्ट करें, ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को इसका लाभ मिल सके। प्रत्येक महाविद्यालय में एक कॅरियर बोर्ड एवं कॅरियर मैगज़ीन का होना सुनिश्चित किया जाए। विद्यार्थियों कोरोजगार के अवसरों / सेवाओं की जानकारी अनिवार्यतः दी जाए।
- प्रदेश के सभी जिलों के महाविद्यालयों में निरंतर ऑनलाइन/ ऑफ़लाइन कॅरियर अवसर मेलों का आयोजन किया जाएगा। समस्त महाविद्यालय अपने जिले में आयोजित होने वाले कॅरियर अवसर मेलों की संपूर्ण जानकारी एवं आयोजन तिथि, संबंधित आयोजक महाविद्यालय से प्राप्त कर विद्यार्थियों को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें ताकि इच्छुक विद्यार्थियों को कॅरियर अवसर मेलों एवं प्लेसमेंट का लाभ प्राप्त हो सके ।
- महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के कैंपस प्लेसमेंट के साथ व्यक्तित्व विकास में शासन की शिक्षक- अभिभावक योजना के माध्यम से सतत प्रयत्नशील रहना है। इस हेतु वार्षिक कैलेण्डर में व्यक्तित्व विकास के विषय भी शामिल किये जा रहे हैं ।
- आत्मनिर्भर भारत को दृष्टिगत रखते हुये जो महाविद्यालय ग्रामीण पृष्ठभूमि के हैं एवं जहाँ कृषि या कृषि इतर कार्यों से जुड़े परिवारों के विद्यार्थी अध्ययनरत हैं, ऐसे महाविद्यालय रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को कृषि उपकरणों यथा- वाटरपंप-मोटर, सीड ड्रील, स्प्रिंकलर, ड्रिप इरीगेशन उपकरण के संस्थापन, रख-रखाव एवं मरम्मत की जानकारी के साथ-साथ जैविक खेती, उद्यानिकी, औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती, वर्मी कम्पोस्ट आदि की जानकारी/ प्रशिक्षण भी उपलब्ध करायें।

  क्रीड़ा के क्षेत्र में भी आजीविका के काफी अवसर मौजूद हैं, विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में स्पोर्ट्स कोटा अंतर्गत। अतः महाविद्यालय में पदस्थ/ कार्यरत क्रीड़ा अधिकारी भी इच्छुक विद्यार्थियों को समय-समय पर क्रीड़ा के क्षेत्र में रोजगार संभावनाओं की जानकारी उपलब्ध कराएं।

(आयुक्त उच्च शिक्षा से अनुमोदित)

जावक क्रमांक 348 / एस.व्ही.सी.जी.एस/22 दिनांक 21.09.2022

निदेशक